अनुक्रमणिका

१

अेक पुस्तकका चमत्कारी प्रभाव

[गांधीजी अपनी 'आत्मकथा' के 'अेक पुस्तकका चमत्कारी प्रभाव' नामक अध्यायमें अपने पाठकोंको बतलाते हैं कि वे कैसे रस्किनकी पुस्तक 'अन्टु दिस लास्ट' से बहुत अधिक प्रभावित हुअे, जिसकी अेक प्रति सन् १९०४ में जोहानिसबर्गसे डरबनकी यात्रा करते समय अुन्हे अपने दक्षिण अफ्रीकाके सहयोगी श्री अेच० अेस० अेल० पोलाकने पढ़नेके लिअे दी थी।]

अिस पुस्तकको हाथमें लेनेके बाद मैं अिसे छोड़ ही न सका। अिसने मुझे पकड़ लिया। जोहानिसबर्गसे डरबनका रास्ता लगभग चौबीस घंटोंका था। मुझे सारी रात नींद नहीं आअी। मैंने पुस्तकमें सूचित विचारोंको अमलमें लानेका अिरादा किया।

अिससे पहले मैंने रस्किनकी अेक भी पुस्तक नहीं पढ़ी थी। विद्याध्ययनके समयमें पाठ्य-पुस्तकोंके बाहरकी मेरी पढ़ाअी लगभग नहींके बराबर मानी जायगी। कर्मभूमिमें प्रवेश करनेके बाद तो समय बहुत कम बचता था। आज तक भी यही कहा जा सकता है। मेरा पुस्तकीय ज्ञान बहुत ही कम है। मैं मानता हू कि अिस अनायास अथवा बरबस पाले गये संयमसे मुझे कोअी हानि नहीं हुअी। बल्कि जो थोड़ी पुस्तकें मैं पढ़ पाया हूं, कहा जा सकता है कि अुन्हें मैं ठीकसे हजम कर सका हूं। अिन पुस्तकोंमें से जिसने मेरे जीवनमें तत्काल महत्त्वके रचनात्मक परिवर्तन कराये, वह 'अन्टु दिस लास्ट' ही कही जा सकती है। बादमें मैंने अुसका गुजराती अनुवाद किया और वह 'सर्वोदय' के नामसे छपा।

मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अन्दर गहराअीमें छिपी पड़ी थी, रस्किनके ग्रंथरत्नमें मैंने अुसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा। और, अिस कारण अुसने मुझ पर अपना साम्राज्य जमाया और मुझसे अुसमें

दिये गये विचारों पर अमल कराया। जो मनुष्य हममें सोअी हुअी अुत्तम भावनाओंको जाग्रत करनेकी शक्ति रखता है वह कवि है। सब कवियोंका सब लोगो पर समान प्रभाव नही पड़ता, क्योंकि सबके अंदर सारी सद्भावनायें समान मात्रामें नही होती।

मैं 'सर्वोदय' के सिद्धान्तोको अिस प्रकार समझा हूं:

१. सबकी भलाअीमे हमारी भलाअी निहित है।

२. वकील और नाअी दोनोंके कामकी कीमत अेकसी होनी चाहिये, क्योकि आजीविकाका अधिकार सबको अेक समान है।

३. सादा मेहनत-मजदूरीका यानी किसानका जीवन ही सच्चा जीवन है।

पहली चीज मैं जानता था। दूसरीको मैं धुधले रूपमें देखता था। तीसरीका मैंने कभी विचार ही नहीं किया था। 'सर्वोदय' ने मुझे दीयेकी तरह स्पष्ट दिखा दिया कि पहली चीजमें दूसरी दोनों चीजें समाअी हुअी हैं। सवेरा हुआ और मैं अिन सिद्धान्तोंका अमल करनेके प्रयत्नमें लगा।

आत्मकथा, पृ० २५९-६०; १९५७

२

शरीर-श्रमका कानून

रोटीके लिअे हरअेक मनुष्यको मजदूरी करनी चाहिये, शरीरको (कमरको) झुकाना चाहिये, यह अीश्वरका कानून है। यह मूल खोज टॉल्स्टॉयकी नही है, लेकिन अुनसे बहुत कम मशहूर रूसी लेखक टी० अेम० बोन्दरेव्हकी है। टॉल्स्टॉयने अुसे रोशन किया और अपनाया। अिसकी झांकी मेरी आंखें भगवद्गीताके तीसरे अध्यायमें करती है। यज्ञ किये बिना जो खाता है वह चोरीका अन्न खाता है, अैसा कठिन शाप यज्ञ नही करनेवालेको गीतामें दिया गया

है। यहां यज्ञका अर्थ शरीरकी मेहनत या रोटीके लिअे मजदूरी ही शोभता है और मेरी रायमें यही मुमकिन है।

जो भी हो, हमारे अिस व्रतका जन्म अिस तरह हुआ है। बुद्धि भी अुस चीजकी ओर हमें ले जाती है। जो मजदूरी नहीं करता अुसे खानेका क्या हक है? बाअिबल कहती है: 'अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमा और खा'। करोड़पति भी अगर अपने पलंग पर लोटता रहे और अुसके मुंहमें कोअी खाना डाले तब खाये, तो वह ज्यादा समय तक खा नहीं सकेगा; अिसमें अुसको मजा भी नहीं आयेगा। अिसलिअे वह कसरत वगैरा करके भूख पैदा करता है और खाता तो है अपने ही हाथ-मुंह हिलाकर। अगर यों किसी न किसी रूपमें शरीरके अंगोंकी कसरत राय-रंक सबको करनी ही पड़ती है, तो रोटी पैदा करनेकी कसरत ही सब क्यों न करें? यह सवाल कुदरती तौर पर अुठता है। किसानको हवाखोरी या कसरत करनेके लिअे कोअी कहता नहीं है और दुनियाके ९० फीसदीसे भी ज्यादा लोगोंका निर्वाह खेती पर होता है। बाकीके दस फीसदी लोग अगर अिनकी नकल करें तो जगतमें कितना सुख, कितनी शांति और कितनी तन्दुरुस्ती फैल जाये? और अगर खेतीके साथ बुद्धि भी मिल जाये तो खेतीसे सम्बन्ध रखनेवाली बहुतसी मुसीबतें आसानीसे दूर हो जायेंगी। अिसके सिवा, अगर शरीरकी मेहनतके अिस निरपवाद कानूनको सब मानें तो अूंच-नीचका भेद मिट जाय।

आज जहां अूंच-नीचकी गंध भी नहीं थी वहां भी यानी वर्ण-व्यवस्थामें भी वह घुस गअी है। मालिक-मजदूरका भेद सामान्य और स्थायी हो गया है और गरीब धनवानसे जलता है। अगर सब रोटीके लिअे मजदूरी करें तो अूंच-नीचका भेद न रहे; और फिर भी धनिक वर्ग रहेगा तो वह खुदको धनका मालिक नहीं बल्कि अुसका रखवाला या ट्रस्टी मानेगा और अुसका ज्यादातर अुपयोग सिर्फ लोगोंकी सेवाके लिअे ही करेगा।

जिसे अहिंसाका पालन करना है, सत्यकी भक्ति करनी है, ब्रह्मचर्यको कुदरती बनाना है, अुसके लिअे तो शरीरकी मेहनत रामबाण-सी हो जाती है। यह मेहनत सचमुच तो खेतीमें ही होती है। लेकिन सब खेती नही कर सकते, अैसी आज तो हालत है ही। अिसलिअे खेतीके आदर्शको खयालमें रखकर खेतीके अेवजमें आदमी भले दूसरी मजदूरी करे — जैसे कताअी, बुनाअी, बढ़अीगिरी, लुहारी वगैरा वगैरा। सबको खुदके भंगी तो बनना ही चाहिये। जो खाता है वह टट्टी तो फिरेगा ही। जो टट्टी फिरता है वही अपनी टट्टीको जमीनमें गाड़ दे यह अुत्तम रिवाज है। अगर यह नहीं हो सके तो प्रत्येक कुटुम्ब अपना यह फर्ज अदा करे।

जिस समाजमें भंगीका अलग पेशा माना गया है अुसमें कोअी बड़ा दोष पैठ गया है, अैसा मुझे तो बरसोंसे लगता रहा है। अिस जरूरी और तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाले कामको सबसे नीचा काम पहले-पहल किसने माना, अिसका अितिहास हमारे पास नही है। पर जिसने भी माना अुसने हम पर अुपकार तो नहीं ही किया। हम सब भंगी हैं यह भावना हमारे मनमें बचपनसे ही जम जानी चाहिये; और अुसका सबसे आसान तरीका यह है कि जो लोग समझ गये हैं वे शरीरकी मेहनतका आरम्भ अिस पाखाना-सफाअीसे करें। जो समझ-बूझकर, ज्ञानपूर्वक यह करेगा, वह अुसी क्षणसे धर्मको निराले रूपमें और सही तरीकेसे समझने लगेगा।

मंगल-प्रभात, पृ० ४१–४४; १९५९

३

यज्ञका कर्तव्य

हर स्त्री-पुरुष शरीरसे मेहनत करे, अिसे आश्रम अपना धर्म मानता है। अिस अुसूलकी जानकारी या सूझ मुझे टॉल्स्टॉयके अेक लेखसे हुअी। अुन्होंने रूसके अेक लेखक बोन्दरेव्हके बारेमें लिखते हुअे बताया कि रोटी-श्रमकी जरूरत अिन लेखककी अिस युगकी बहुत बड़ी खोजोंमें से अेक थी। अुनका मतलब यह है कि हर तन्दुरुस्त आदमीको अपने गुजारेके लायक शरीर-श्रम करना ही चाहिये। मनुष्यको अपनी बुद्धिकी शक्तिका अुपयोग आजीविका प्राप्त करने या अुससे भी ज्यादा प्राप्त करनेके लिअे नहीं, बल्कि सेवाके लिअे, परोपकारके लिअे करना चाहिये। अिस नियमका पालन सारी दुनिया करने लगे, तो सहज ही सब बराबर हो जायं, कोअी भूखों न मरे और जगत बहुतसे पापोंसे बच जाय।

यह संभव है कि अिस स्वर्ण-नियमका अमल सारी दुनिया कभी न कर सके। नियमको बिना जाने-बूझे तो करोड़ों लोग अुसका पालन जबरदस्तीसे करते हैं। अुनके मन अुनके विरुद्ध चलते हैं, अिसीलिअे वे दुःख पाते हैं और अुनकी मेहनतसे जितना लाभ दुनियाको होना चाहिये अुतना नहीं होता। जो लोग अिस नियमको समझते हैं, अुन्हें अिस ज्ञानसे अिस नियमका पालन करनेका प्रोत्साहन मिलता है। नियमका पालन करनेवाले पर अुसका चमत्कारी असर होता है; क्योंकि अुसे परम शान्ति मिलती है, अुसकी सेवा करनेकी शक्ति बढ़ती है और अुसकी तन्दुरुस्ती भी बढ़ती है।

सत्याग्रह आश्रमका अितिहास, पृ० ४०; १९५९

मैं यह सुझानेका साहस करता हूं कि गीताके तीसरे अध्यायके १२ वें और १३ वें श्लोकोंमें 'यज्ञ' शब्दका अेक ही अर्थ हो सकता है। १४ वां श्लोक अुसे बिलकुल स्पष्ट कर देता है:

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्याद् अन्न-संभवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म-समुद्भवः॥
गीता, अ० ३, श्लो० १४

अन्नसे सब प्राणी अुत्पन्न होते हैं। वर्षासे अन्न अुत्पन्न होता है। यज्ञसे वर्षा होती है। और यज्ञकी अुत्पत्ति कर्मसे होती है।

अतअेव मेरी रायमे यहा न केवल शरीर-श्रमके सिद्धांतका प्रतिपादन किया गया है, वल्कि श्रमके अिस सिद्धांतकी स्थापना भी की गअी है कि जव श्रम केवल अपने लिअे न होकर सवके लिअे होता है, तभी वह यज्ञका रूप लेता है। वर्षा वड़े वड़े वौद्धिक कार्योंसे नहीं होती है, परन्तु केवल श्रमके जरिये ही होती है। यह सर्व-सम्मत वैज्ञानिक तथ्य है कि जहां जंगलोके पेड़ काट दिये जाते हैं वहां वर्षा वन्द हो जाती है; और जहां पेड़ लगाये जाते हैं वहा वर्षा खिंच आती है और वनस्पतिकी वृद्धिके साथ ही वर्षाके पानीकी मात्रा भी बढ़ जाती है। कुदरतके कानूनोंकी खोज होना अभी वाकी है। हमने केवल अूपरी सतहको ही छुआ है। शरीर-श्रमके वन्द हो जानेसे जो नैतिक और शारीरिक वुरे परिणाम होते हैं अुन सवको भला कौन जानता है?

यंग अिंडिया, १५-१०-'२५; पृ० ३५५

गीतामें कहा गया है कि "आरम्भमें यज्ञके साथ-साथ प्रजाको अुत्पन्न करके ब्रह्माने अुससे कहा: 'अिस यज्ञके द्वारा तुम्हारी समृद्धि हो; यह यज्ञ तुम्हारी कामधेनु हो, अर्थात् यह तुम्हारे अिच्छित फलोंका देनेवाला हो।' जो यह यज्ञ किये विना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है।" "तू अपने पसीनेकी कमाअी खा," यह वाअिवलका वचन है। यज्ञ अनेक प्रकारके हो सकते हैं। अुनमें से अेक श्रमयज्ञ भी हो सकता है। यदि सव लोग अपने ही परिश्रमकी कमाअी खावें, तो दुनियामें अन्नकी कमी न रहे और सवको अवकाशका काफी समय भी मिले। तव न तो किसीको जनसंख्याकी वृद्धिकी शिकायत रहे, न कोअी वीमारी

आये और न मनुष्यको कोअी कष्ट या क्लेश ही सतावे। यह सबसे अूंचे अूंचे प्रकारका यज्ञ होगा। अिसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य अपने शरीर या बुद्धिके द्वारा और भी अनेक काम करेंगे, पर अुनका वह सारा श्रम लोककल्याणके लिअे प्रेममूलक श्रम होगा। अुस अवस्थामें न कोअी राव होगा न कोअी रंक, न कोअी अूंचा होगा न कोअी नीचा, न कोअी स्पृश्य रहेगा न कोअी अस्पृश्य।

भले ही यह अेक अलभ्य आदर्श हो, पर अिस कारणसे हमें अपना प्रयत्न बन्द कर देनेकी जरूरत नहीं है। यज्ञके संपूर्ण नियमको अर्थात् अपने 'जीवनके नियम' को पूरा किये बिना भी अगर हम अपने नित्यके निर्वाहके लिअे पर्याप्त शारीरिक श्रम करें, तो भी अुस आदर्शके बहुत कुछ निकट पहुंच ही जायंगे।

यदि हम अैसा करेंगे तो हमारी आवश्यकतायें बहुत कम हो जायंगी और हमारा भोजन भी सादा बन जायगा। तब हम जीनेके लिअे खायेंगे, न कि खानेके लिअे जियेंगे। अिस बातकी यथार्थतामें जिसे शंका हो वह अपने परिश्रमकी कमाअी खानेका प्रयत्न करे। अपने पसीनेकी कमाअी खानेमें अुसे कुछ और ही स्वाद मिलेगा, अुसका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा और अुसे यह मालूम हो जायगा कि जो बहुतसी विलासकी चीजें अुसने अपने अूपर लाद रखी थीं, वे सब बिलकुल फिजूल थीं।

हरिजनसेवक, ५-७-'३५; पृ० १६०

४

यज्ञका तत्त्वज्ञान

यज्ञका अर्थ है लौकिक अथवा पारलौकिक किसी भी प्रकारके फलकी आकांक्षा रखे विना दूसरोंके हितके लिअे किया गया कर्म। 'कर्म' शब्दका अुपयोग यहा व्यापकसे व्यापक अर्थमें लेना चाहिये; अुसमें कायिक, मानसिक और वाचिक — प्रत्येक प्रकारके कर्मका समावेश माना जाना चाहिये। 'दूसरों' से केवल मनुष्य-वर्गका नही बल्कि जीवमात्रका आशय है।

यज्ञकी अुपरोक्त व्याख्याके अनुसार जिस कर्मसे ज्यादासे ज्यादा जीवोका अधिकसे अधिक विशाल क्षेत्रमें कल्याण हो और जिसे ज्यादासे ज्यादा स्त्री-पुरुष बहुत आसानीसे कर सकें, अुस कर्मको अुत्तम यज्ञ कहा जायगा। अिसलिअे तथाकथित अुच्चतर ध्येयके लिअे भी किसी दूसरेका अकल्याण सोचना या करना महायज्ञ होना तो दूर, यज्ञ भी नही है। और गीता सिखाती है तथा हमारा अनुभव बतलाता है कि यज्ञरूप कर्मके सिवा दूसरे कर्म मनुष्यको बंधनमें बाधते हैं।

अैसे यज्ञके अभावमें जगत अेक क्षणके लिअे भी टिक नहीं सकता और अिसीलिअे गीता दूसरे अध्यायमें ज्ञानका विवेचन करनेके बाद तीसरे अध्यायमें अुसकी प्राप्तिके अुपायोंका वर्णन करती है और स्पष्ट शब्दोमें कहती है कि यज्ञके साथ ही प्रजाकी सृष्टि हुअी है। अिसलिअे यह शरीर हमें सारी सृष्टिकी सेवाके लिअे ही दिया गया है। और यही कारण है कि गीता कहती है: 'जो यज्ञ किये विना खाता है वह चोरीका अन्न खाता है।' शुद्ध जीवन जीनेकी अिच्छा रखनेवाले व्यक्तिका हरअेक कर्म यज्ञरूप होना चाहिये।

हमारा जन्म यज्ञके साथ हुआ है, अिसलिअे हमारी स्थिति जीवन-भर अृणीकी रहती है और अिसलिअे हम हमेशा जगतकी सेवा करनेके

लिअे बंधे हुअे हैं। और जिस तरह कोअी गुलाम अपने स्वामीसे — जिसकी वह सेवा करता है — अन्न-वस्त्रादि पाता है, अुसी तरह हमें भी जगतका स्वामी जो कुछ दे अुसे आभारपूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिये। अुससे हमें जो कुछ मिले वह अुसका हमें दिया हुआ दान है; क्योंकि ऋणीकी तरह अपने कर्तव्यका पालन करनेके लिअे हम अुसके अेवजमें कुछ भी पानेके अधिकारी नहीं हैं। अिसलिअे यदि हमें वह न मिले तो हम अपने स्वामीको दोष नहीं दे सकते। हमारा शरीर अुसका है; अुसे वह अपनी अिच्छाके अनुसार चाहे रखे, चाहे न रखे।

यह स्थिति अैसी नहीं है कि अुसकी शिकायत की जाय या अुस पर खेद किया जाय। अुलटे, यदि विधाताके विधानमें हमारा अपना स्थान हम समझ ले तो हमें वह स्थिति स्वाभाविक, सुखद और अिष्ट मालूम होगी। अिस परम सुखका अनुभव करनेके लिअे अविचल श्रद्धाकी आवश्यकता है। 'अपने विषयमें कोअी चिंता मत करो, सब चितायें परमेश्वरको सौंप दो' — यह आदेश सब धर्मोंमें दिया गया दीखता है।

अिससे किसीको डरनेका कोअी कारण नहीं है। जो स्वच्छ मनसे सेवाकार्यमें लग जाता है अुसे अुसकी आवश्यकता दिन-प्रतिदिन स्पष्ट होती जाती है और अुसकी श्रद्धा भी अुसी प्रमाणमें बढ़ती जाती है। जो स्वार्थ छोड़नेके लिअे और मनुष्य-जन्मके साथ मिले हुअे अिस कर्तव्यका पालन करनेके लिअे तैयार नहीं है, वह सेवामार्ग पर नहीं चल सकता। जाने-अनजाने हम सब कुछ-न-कुछ निःस्वार्थ सेवा करते ही हैं। यही सेवा हम विचारपूर्वक करने लगें तो हमारी पारमार्थिक सेवाकी वृत्ति अुत्तरोत्तर बढ़ती जाये; और न केवल हमें सच्चे सुखकी प्राप्ति हो, परन्तु जगतका भी कल्याण हो।

फ्रॉम यरवडा मन्दिर, पृ० ५३–५६; १९५७

५

व्यवहारमें यज्ञ

दिनके चौबीसों घण्टे कर्तव्यका पालन करना या सेवा करना यज्ञ है। निष्काम सेवा करना जिस प्रकार दूसरों पर नहीं बल्कि स्वयं अपने पर कृपा करना है, अुसी प्रकार जब हम ॠणका भुगतान करते हैं तो हम अपनी ही सेवा करते हैं, अपने बोझको हलका करते है और अपने कर्तव्यको पूरा करते है। अिसके सिवा, न केवल भले लोग बल्कि हम सब अपनी साधन-सामग्रीको मानव-जातिकी सेवामें लगानेके कर्तव्यसे बंधे हुअे है। और यदि अैसा कानून है—जैसा कि वह स्पष्ट रूपमें है ही—तो जीवनमें फिर भोगका कोअी स्थान नहीं रहता और अुसका स्थान त्याग ले लेता है। त्यागका कर्तव्य ही मानव-जातिकी विशेषता है; पशुसे अुसके भेदका सूचक है।

लेकिन त्यागका अर्थ यहां संसारको छोड़कर अरण्यमें वास करना नहीं है। अुसका अर्थ यह है कि जीवनकी तमाम प्रवृत्तियोंमें त्यागकी भावना होनी चाहिये। कोअी गृहस्थ जीवनको भोगरूप न मानकर कर्तव्यरूप माने, तो अिससे अुसका गृहस्थपन मिट नही जाता। यज्ञार्थ व्यापार करनेवाला व्यापारी करोड़ोंका व्यापार करते हुअे भी लोक-सेवाका ही विचार करेगा। वह किसीको धोखा नही देगा, सट्टा नही करेगा, सादगीसे रहेगा, किसी जीवको कष्ट नही देगा और किसीका नुकसान करनेके बजाय खुद करोड़ोंका नुकसान सह लेगा। कोअी यह कहकर अिस बातकी हंसी न अुड़ाये कि अैसा व्यापारी केवल मेरी कल्पनामे ही है। दुनियाका सौभाग्य है कि अैसे व्यापारी पूर्वमे भी है और पश्चिममें भी है। यह सच है कि अैसे व्यापारी अुंगलियों पर गिने जा सकते हैं, लेकिन यदि अुक्त आदर्शको प्रगट करनेवाला अेक भी जीवित नमूना हो तो फिर अुसे काल्पनिक नही कह सकते। और यदि हम अिस प्रश्नकी

गहराअीमें जायें तो जीवनके हर क्षेत्रमें हमें अैसे मनुष्य मिलेंगे जो समर्पणका जीवन बिताते हैं। अिसमें सन्देह नहीं कि अैसे याज्ञिक अपना धंधा करते हुअे अपनी आजीविका भी कमाते हैं। लेकिन वे धंधा आजीविकाके लिअे नहीं करते, आजीविका अुनके धंधेका गौण फल है।

यज्ञमय जीवन कलाकी पराकाष्ठा है; अुसीमें सच्चा रस और सच्चा आनन्द है। जो यज्ञ बोझरूप मालूम हो वह यज्ञ नहीं है। जिस त्यागसे कष्ट मालूम हो वह त्याग नहीं है। भोग नाशकी ओर ले जाता है और त्याग अमरताकी ओर। रस कोअी स्वतंत्र वस्तु नहीं है। वह तो जीवनके प्रति हमारे रुख पर निर्भर करता है। किसीको नाटकके परदों पर चित्रित दृश्योंमें रस मिलता है, तो दूसरेको आकाशमें प्रगट होनेवाले नित्य-नये दृश्योंमें। अिसलिअे रस वैयक्तिक और राष्ट्रीय तालीमका विषय है। हमें बचपनमें जिन चीजोंमें रस लेना सिखाया गया हो अुनमें ही हमें रस मिलता है। और किसी अेक राष्ट्रकी प्रजाको जो वस्तु रसमय मालूम होती है, वही किसी दूसरे राष्ट्रकी प्रजाको रसहीन मालूम होती है। अिस बातके अुदाहरण तो आसानीसे दिये जा सकते हैं।

फिर, यज्ञ करनेवाले कअी सेवक अैसा मानते हैं कि हम निष्काम-भावसे सेवा करते हैं, अिसलिअे हमें लोगोंसे जरूरी और बहुतसी गैर-जरूरी चीजें भी लेनेकी छूट है। यह विचार सेवकके मनमें ज्यों ही आता है त्यों ही वह सेवक नहीं रह जाता; तब वह अत्याचारी शासक बन जाता है।

जो सेवा करना चाहता हो अुसे अपनी सुविधाओंका विचार नहीं करना चाहिये। अपनी सुविधाओंका विचार तो वह अपने स्वामीको —अीश्वरको— सौंप देता है। अीश्वरकी अिच्छा होगी तो वह देगा, न होगी तो नहीं देगा। अिसलिअे सेवक जो कुछ अुसे मिले सो सब अपने अुपयोगके लिअे नहीं रख लेगा; अपने लिअे वह अुसमें से अुतना ही लेगा जितनेकी अुसे सचमुच जरूरत है। बाकीका वह त्याग करेगा।

अुसे असुविधायें अुठानी पड़ें तो भी वह शांत रहेगा, क्रोध नहीं करेगा और अपना चित्त स्वस्थ रखेगा। अुसकी सेवाका पुरस्कार, सद्‌गुणकी तरह, सेवा करनेका सुख ही है और अुसीमें वह सन्तोष मानेगा।

अिसके सिवा, सेवाकार्यमें किसी तरहकी लापरवाही या देर नही चल सकती। जो आदमी यह समझता है कि सावधानी और परिश्रमकी आवश्यकता तो सिर्फ अपना व्यक्तिगत कार्य करनेमें है, नि.शुल्क किया जानेवाला सार्वजनिक कार्य अपनी सुविधाके अनुसार जब करना हो तब और जिस तरह करना हो अुस तरह किया जा सकता है, कहना चाहिये कि वह यज्ञका क-ख-ग भी नही जानता। दूसरोंकी स्वेच्छापूर्वक की जानेवाली सेवा अपनी पूरी शक्ति लगाकर की जानी चाहिये; यह सेवा पहले और अपना निजी कार्य बादमें — यही सेवकका सूत्र होना चाहिये। साराश यह कि शुद्ध यज्ञ करनेवालेका अपना कुछ बाकी नही रहता; वह सब कृष्णार्पण कर देता है।

फ्रॉम यरवडा मन्दिर, पृ० ५७–६०; १९५७

प्रश्न — जिसे टॉल्स्टॉय 'रोटीके लिअे श्रम करना' कहते हैं, अुसके बारेमें आपका क्या अभिप्राय है? क्या आप शरीर-श्रम करके अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं?

अुत्तर — सच पूछा जाय तो 'रोटीके लिअे श्रम करना' ये शब्द टॉल्स्टॉयके हैं ही नही। अुन्होंने दूसरे अेक रूसी लेखक बोन्दरेव्हसे अुन्हें ग्रहण किया था, और अुनका अर्थ यह है कि हरअेकको रोटी पानेके लिअे काफी शारीरिक मेहनत करनी चाहिये। अिसलिअे आजीविकाका विशाल अर्थ करने पर यह आवश्यक नही है कि शारीरिक मेहनत करके ही आजीविका प्राप्त की जाय। लेकिन हर आदमीको कुछ न कुछ अुपयोगी शरीर-श्रम अवश्य करना चाहिये। अभी तो मैं शरीर-श्रम सिर्फ कातनेमें ही करता हूं। यह तो शरीर-श्रमका अेक प्रतीकमात्र है। मैं काफी

शरीर-श्रम नहीं कर रहा हूं। और यह भी अेक कारण है कि मैं अपनेको मित्रोंके दान पर जीनेवाला कहता हूं। लेकिन मैं यह भी मानता हूं कि हरअेक राष्ट्रमें अैसे मनुष्योंकी आवश्यकता है, जो अपना शरीर, मन और आत्मा सब कुछ राष्ट्रको अर्पण कर देते हैं और जिन्हें अपनी आजीविकाके लिअे दूसरे मनुष्यों पर अर्थात् अीश्वर पर आधार रखना पड़ता है।

हिन्दी नवजीवन, ५-११-'२५; पृ० ९५

६

बौद्धिक श्रम

मनुष्य अपने बौद्धिक श्रमकी कमाअी क्यों न खायें? नहीं, यह ठीक नहीं है। शरीरकी आवश्यकताओंकी पूर्ति शारीरिक श्रमसे ही होनी चाहिये।

केवल मस्तिष्कका, अर्थात् बौद्धिक, श्रम तो आत्माके प्रीत्यर्थ है और वह स्वतः संतोषरूप है। अुसमें पारिश्रमिक मिलनेकी अिच्छा नहीं करनी चाहिये। अुस आदर्श अवस्थामें डॉक्टर, वकील आदि पूर्णतः समाजके हितके लिअे ही काम करेंगे, अपने लिअे नहीं। शारीरिक श्रमके नियम पर चलनेसे समाजमें अेक शांतिमय क्रांति पैदा होगी। जीवन-संग्रामके स्थान पर पारस्परिक सेवाकी प्रतिस्पर्धा स्थापित करनेमें मनुष्यकी विजय होगी। पाशविक नियमका स्थान मानवीय नियम ले लेगा।

हरिजनसेवक, ५-३-'३५; पृ० १६०

मुझे गलत नहीं समझा जाये। मैं बौद्धिक श्रमके मूल्यकी अवगणना नहीं करता हूं; लेकिन बौद्धिक श्रम कितनी ही मात्रामें क्यों न किया जाय, अुससे शरीर-श्रमकी थोड़ी भी क्षतिपूर्ति नहीं होगी, जो कि हममेंसे

हरअेक सबकी भलाअीके लिअे करनेको पैदा हुआ है। बौद्धिक श्रम शरीर-श्रमसे निश्चित रूपमें श्रेष्ठ हो सकता है, अकसर होता है, लेकिन वह शरीर-श्रमका स्थान कभी नही लेता और न कभी ले सकता है; जैसे बौद्धिक भोजन हम जो अन्न खाते है अुसकी अपेक्षा कहीं ज्यादा अुत्तम है, परन्तु वह अन्नका स्थान कभी नही ले सकता। सचमुच, पृथ्वीकी अुपजके अभावमें बुद्धिकी अुपज होना असंभव है।

यंग अिंडिया, १५–१०–'२५; पृ० ३५५–५६

प्रश्न — हम किसी रवीन्द्रनाथ या रमनके शरीर-श्रम करके ही रोटी कमाने पर जोर क्यों दें? क्या यह अुनकी दिमागी ताकतकी निरी बरबादी न होगी? दिमागी काम करनेवालोंको अंग-मेहनत करने-वालोंके बराबर ही क्यों न समझा जाय; क्योंकि दोनो ही समाजको फायदा पहुंचानेवाला काम करते हैं?

अुत्तर — दिमागी काम भी अपना महत्त्व रखता है और जीवनमें अुसका निश्चित स्थान है। लेकिन मैं तो शरीर-श्रमकी जरूरत पर जोर देता हूं। मेरा यह दावा है कि अुस फर्जसे किसी भी मनुष्यको छुटकारा नही मिलना चाहिये। अिससे मनुष्यके दिमागी कामकी अुन्नति ही होगी। मैं तो यहा तक कहनेकी हिम्मत करता हूं कि पुराने जमानेमें हिन्दुस्तानके ब्राह्मण बौद्धिक और शारीरिक दोनों काम करते थे। वे चाहे न भी करते हों, लेकिन आज तो शारीरिक कामकी जरूरत सिद्ध हो चुकी है। अिस सिलसिलेमे मैं आपको टॉल्स्टॉयके जीवनका हवाला देते हुअे यह बताना चाहूंगा कि अुन्होंने रूसी किसान बोन्दरेव्हके शारीरिक कामके सिद्धान्तको किस प्रकार मशहूर किया।

हरिजनसेवक, २३–२–'४७; पृ० २८

"तो श्रम और संस्कृतिको क्या हम अलग नहीं कर सकते?"

"नहीं, प्राचीन रोमवासियोंने अैसा करनेका प्रयत्न किया था, पर वे बुरी तरह असफल हुअे। बिना श्रमकी संस्कृति या वह संस्कृति जो

श्रमका फल नहीं है, अेक रोमन कैथलिक लेखकके अनुसार, नाशकारक ही है। रोमनिवासी भोग-विलासमें पड़कर नष्ट हो गये, अुनकी संस्कृतिका नाम-निशान भी नहीं रहा। सिर्फ लिख और पढ़कर या सारे दिन व्याख्यान देकर मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियोंको विकसित नहीं कर सकता। मैंने जितना कुछ पढा है वह जेलमें मिली हुअी फुरसतके वक्तमें पढ़ा है। अुस पढाअीसे मुझे अिसीलिअे लाभ हुआ कि मैंने यों ही अूट-पटांग तरीकेसे नहीं, बल्कि किसी प्रयोजनसे ही पढ़ा था। हालांकि मैंने लगातार आठ आठ घंटे महीनों शारीरिक श्रम किया है, तो भी मैं समझता हूं कि मेरी मानसिक शक्ति अुससे कुछ कम नहीं हुअी। मैं अकसर दिनमें चालीस चालीस मील चला हूं, तब भी मुझे कोअी शिथिलता मालूम नहीं हुअी।"

"लेकिन आपकी तो मानसिक शक्ति ही अिस प्रकारकी है।"

"नहीं, यह बात नहीं है। आपको मालूम नहीं कि मैं स्कूलमें और अिंग्लैण्डमें भी अेक औसत दरजेका विद्यार्थी था। किसी सभा-सोसायटी या निरामिषाहारियोंकी जमात तकमें बोलनेका मेरा साहस नहीं होता था। आप यह कल्पना न कर बैठें कि अीश्वरने मुझे कोअी असाधारण शक्ति दी है। मेरा खयाल है कि अीश्वरने अुस समय मुझे बहुत बोलनेकी शक्ति न देकर अच्छा ही किया। आपको जानना चाहिये कि हम लोगोंमें सबसे कम अगर किसीने पढ़ा है तो वह मैं हूं।"

हरिजनसेवक, १-८-'३६; पृ० १९२

अेक मुलाकातीने गांधीजीसे पूछा कि कर्मयोग पर आपका अनुचित आग्रह भले न हो, पर क्या आप अुस पर जरूरतसे ज्यादा जोर नहीं दे रहे हैं? गांधीजीने अिसका यह जवाब दिया:

"नहीं, यह बात बिलकुल नहीं है; मैंने जो भी पढ़ा है अुसका हमेशा यही अर्थ लिया है। अिसमें कोअी अत्युक्ति नहीं है। कर्मयोग पर जरूरतसे ज्यादा जोर देनेकी बात तो कभी हो ही नहीं सकती।

मै तो गीताके सिखाये हुअे सन्देशको ही दोहरा रहा हूं, जिसमें भगवान कृष्णने कहा है:

> यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
> मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

अर्थात् मै सतत जाग्रत रहकर कर्म न करूं, तो सारे मनुष्य मेरा अनुकरण करने लग जायंगे। क्या मैंने व्यवसायी लोगोंसे यह प्रार्थना नही की कि वे खुद चरखा चलाकर हमारे तमाम देशवासियोके सामने अेक सुन्दर अुदाहरण रखे?"

"भगवान वुद्धकी तरह आपको कोअी मनुष्य मिले, तो क्या अुससे भी आप यही वात कहेगें?"

"अवश्य, अिसमे मुझे जरा भी हिचकिचाहट नही होगी।"

"तो फिर तुकाराम और ज्ञानदेव जैसे महान संतोके विषयमें आप क्या कहेगे?"

"अुनके सम्वन्धमें विवेचन करनेवाला मै होता कौन हूं?"

"पर बुद्धके सम्वन्धमे आप अैसा करेंगे?"

"अैसा मैंने कभी नही कहा। मैंने तो सिर्फ यह कहा है कि अगर वुद्धकी कोटिके किसी मनुष्यसे प्रत्यक्ष मिलनेका मुझे सद्भाग्य प्राप्त हो, तो मै अुससे यह कहनेमे जरा भी संकोच न करूंगा कि वह ध्यानयोगके स्थान पर कर्मयोगकी पुष्टि करे। अिन महान संतोंसे यदि मेरा मिलना हो, तो अिनसे भी मै यही बात कहूंगा।"

हरिजनसेवक, २–११–'३५; पृ० २९८–९९

७

फुरसतकी समस्या

अेक मित्रने गांधीजीसे पूछा : "लोगोंको फुरसतका समय मिलना चाहिये या नहीं, अिसका तो आप सवाल ही नहीं करते। गरीब लोग बहुत ज्यादा मेहनत-मशक्कत करते रहेंगे, तो अुन्हें मानसिक विचार द्वारा बुद्धिको बढ़ाने और मनोरंजन द्वारा आनन्द प्राप्त करनेके लिये समय ही नहीं मिलेगा। पर आप तो अुन्हें और ज्यादा काम करनेकी ही शिक्षा दे रहे हैं।"

"सचमुच? मैं जिन लोगोंके बारेमें सोच रहा हूं, अुनके पास तो अितनी फुरसत है कि अुन बेचारोंको समझमें ही नहीं आता कि अुसका क्या अुपयोग करें। अिस फुरसतके ही कारण अुनमें अैसी सुस्ती आ गअी है, जिसने अुन्हें निर्जीव पत्थरके समान जड़ बना दिया है। अुनमें अितनी जड़ता आ गअी है कि कितने ही लोग तो जरा-सा हिलना-डुलना भी नहीं चाहते।"

"जहां जरूरत हो वहां आप लोगोंको जरूर काम पर लगाअिये। पर आप तो अुनसे अपने हाथों अपने चावल और अनाजकी कुटाअी-पिसाअी करनेके लिअे भी कहते हैं। क्या यह अुनसे सूखा, नीरस काम करानेकी बात नहीं है?"

"अुन्हें आलस्यमें अपना समय बिताना जितना नीरस मालूम होता है अुससे ज्यादा नीरस यह काम नहीं है। और जब वे यह समझ जायेंगे कि जिससे हमें न सिर्फ कुछ पैसोंकी कमाअी ही हो जाती है, बल्कि जिससे हमारी और हमारे देशवासियोंकी तन्दुरुस्ती भी ठीक रहती है, तो अुन्हें यह काम नीरस नहीं लगेगा। आधुनिक कल-कारखानोंमें काम करनेसे ज्यादा नीरस तो निश्चय ही यह काम नहीं है। अैसी हाल

कितना ही नीरस क्यों न हो, अगर मनुष्यको अुसमें यह समझनेका आनन्द मिल सकता हो कि मैंने कुछ निर्माण किया है, तो अुसे वह नीरस नही लगेगा। आप किसी जूतोंके कारखानेमें जाअिये। वहां कुछ आदमी जूतोके तले वना रहे होंगे, कुछ अूपरी हिस्से और कुछ अन्य काम कर रहे होंगे। वह काम नीरस मालूम देगा, क्योंकि वे लोग वुद्धि लगाकर काम नहीं करते। लेकिन जो मोची या चमार स्वयं पूरा जूता वनाता है अुसे अपना काम जरा भी नीरस नहीं मालूम पड़ेगा। क्योंकि अुसके काम पर अुसकी कुशलताकी छाप होगी और अुसे अिस वातका आनन्द होगा कि अपने हाथों मैंने कोअी चीज वनाअी है। कौन काम किस भावनासे किया जाता है, अिसका वहुत असर पड़ता है। अपने व्यवहारके लिअे पानी भरने और लकड़ी चीरनेमें मुझे कोअी आपत्ति न होगी, वशर्ते कि किसीकी जोर-जवरदस्तीसे नही वल्कि अपनी वुद्धिसे सोच-समझकर मैं अैसा करूं। कोअी भी श्रम क्यों न हो, अगर वह बुद्धिपूर्वक और किसी अूचे अुद्देश्यको सामने रखकर किया जाय तो वह अुत्पादक वन जाता है और अुससे आनन्द भी प्राप्त होता है।"

"लेकिन जव आप सारे दिन मनुष्यके शारीरिक श्रम करते रहने पर ही जोर देते हैं, तव क्या अुसकी वुद्धिको जड़ वनानेका जोखिम आप अपने अूपर नही ले रहे है? आप दिनभरमें कितने घंटेका शारीरिक श्रम आवश्यक समझते है?"

"मुझे खुदको तो आठ घंटे काम करनेमें कोअी आपत्ति नहीं होगी।"

"मै आपकी वात नहीं करता। आप तो आठ घंटे चरखा कातकर भी आनन्द प्राप्त कर सकते है, यह मै जानता हूं। पर आपकी वात तो अपवादरूप है। क्योंकि आपमें तो अितनी वुद्धि और अुत्पादक शक्ति है कि वाकीके समयमें भी आप अुनका वहुत कुछ अुपयोग कर सकते है।"

"नही, मैं तो चाहता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति आठ घंटे मेहनत करके आनन्द प्राप्त करे। सब कुछ काम करनेकी भावना पर निर्भर है। आठ घंटे लगनके साथ शुद्ध शारीरिक श्रम करनेके बाद भी बौद्धिक कामोके लिअे काफी समय बच रहता है। मेरा अुद्देश्य तो जड़ता और आलस्यको दूर करना है। जब मैं संसारको यह कह सकूंगा कि भारतका हरअेक ग्रामवासी अपने पसीनेसे २० रुपया महीना कमा रहा है, तब मुझे परम संतोष प्राप्त होगा।"

हरिजनसेवक, २२-३-'३५; पृ० ३३-३४

कुछ समय पहले मैंने श्री अेल० पी० जैक्सकी 'फुरसतके समय' की यह परिभाषा दी थी: "मनुष्यके जीवनका वह भाग जिसमें अुनकी आत्मा पर अधिकार जमानेके लिअे घोर देवासुर-संग्राम होता है," और अुनके दिये हुअे आंकड़ो परसे यह दिखानेका प्रयत्न किया था कि फुरसतके समयका विज्ञान और कला कितनी कठिन है। श्री बर्ट्रेण्ड रसेल, जो प्रत्येक नागरिकके लिअे काफी फुरसतका समय निश्चित करा देनेके लिअे बहुत चिन्तित है, सिर्फ चार घंटेका शरीर-श्रम रखना चाहते है। लेकिन अुस दिन गांधीजीसे बात करते हुअे अेक आदरणीय मित्रने आश्चर्यचकित होकर कहा: "क्या फुरसतके समयका प्रश्न सचमुच अितना मुश्किल है? आठ घंटे रोजके शारीरिक श्रम पर आप क्यों जोर देते हैं? अेक सुव्यवस्थित समाजमें क्या यह संभव नहीं कि केवल दो घंटे रोज शारीरिक श्रम कराया जाय और बौद्धिक तथा कलात्मक प्रवृत्तियोंके लिअे काफी फुरसतका समय छोड़ दिया जाय?"

"हम यह जानते हैं कि श्रमजीवी और मानसिक श्रम करनेवाले दोनों ही वर्गके लोग, जिन्हें कि यह सब फुरसतका समय मिलता है, अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग नहीं करते। सच पूछो तो हमने भी अक्सर 'खाली दिमाग शैतानका घर' की कहावत ही चरितार्थ होते देखी है।"

"नहीं, फुरसतका समय हम बेकार नहीं जाने देंगे। मान लीजिये, हम दिनमें दो घंटे तो शारीरिक श्रम करें और छह घंटे मानसिक श्रम, तो क्या यह राष्ट्रके लिअे हितकर न होगा?"

"मैं नहीं जानता कि आपकी अिस योजना पर कहां तक अमल हो सकेगा। मैंने अिसका हिसाब लगाकर तो नहीं देखा, पर अगर कोअी मनुष्य मानसिक श्रम राष्ट्रके लिअे नहीं बल्कि केवल अपने लाभके लिअे करेगा, तो मुझे अिसमें सन्देह नहीं कि यह योजना विफल ही होगी। हां, सरकार अुसके दो घंटेके शरीर-श्रमके लिअे अुसे काफी मजदूरी दे दे और फिर अुसे बगैर कुछ दिये दूसरा काम करनेके लिअे मजबूर करे, तो अलबत्ता वह अेक अच्छी चीज हो सकती है। पर वह तो सरकारकी अैसी जोर-जबरदस्तीकी आज्ञासे ही हो सकता है, जो सब पर अेकसी लागू हो।"

"अुदाहरणके लिअे, आप अपनेको ही ले लीजिये। आप आठ घंटेका शारीरिक श्रम तो रोज कर नहीं सकते। आठ घंटे या अिससे भी ज्यादा आपको मानसिक श्रम करना पड़ता है। आप अपने फुरसतके समयका दुरुपयोग तो नहीं करते?"

"यह तो अनिवार्य रूपसे करना पड़ता है। फुरसत अिसमें कहां है? अिस फुरसतमें मैं टेनिस वगैरा खेलने तो नहीं जाता। लेकिन अपने अुदाहरणको लेकर मैं आपसे यह कहूंगा कि अगर हम अपने हाथसे आठ घंटे रोज मेहनत करते होते, तो हमारी मानसिक शक्तियोंका अितना अच्छा विकास होता कि जिसकी कोअी हद नहीं। हमारे मनमें अेक भी निरर्थक विचार न अुठता। यह बात नहीं कि मेरा मन निरर्थक विचारोंसे अेकदम मुक्त हो गया है। आज भी मेरी जो कुछ प्रगति है, वह अिस कारण है कि अपने जीवनमें बहुत पहले मैंने श्रमका महत्त्व जान लिया था।"

"पर अगर शरीर-श्रमकी स्वभावतः अैसी महिमा है, तो हमारे यहांके लोग तो आठ घंटेसे भी ज्यादा मेहनत करते हैं। पर अिसका

अुनकी मानसिक पवित्रता या दृढ़ता पर अैसा कोअी अुल्लेखनीय असर तो पड़ा नही है?"

"केवल शारीरिक या मानसिक श्रम अपने आपमें कोअी शिक्षा नहीं है। पर हमारे देशके लोग बिना समझे-बूझे जड़ यन्त्रकी तरह सख्तसे सख्त मेहनत किये जाते है और जिससे अुनकी सूक्ष्म सहज बुद्धि निष्प्राण हो जाती है। यहीं मेरी सवर्ण हिन्दुओंसे जबरदस्त शिकायत है। श्रमजीवी वर्गके लोगोंको अुन्होंने जो काम दिया है वह नग्न और जलील मेहनतका है, जिसमें न तो अुन्हे कोअी आनन्द मिलता है और न कोअी दिलचस्पी ही होती है। अगर समाजमें वे सवर्ण हिन्दुओंकी बराबरीके समझे जाते, तो जीवनमें अुनका स्थान आज सबसे अधिक गौरवका होता। यह युग तो 'कलियुग' समझा जाता है। सत्ययुगमें — यह मै कह सकता हूं — हमारे समाजकी व्यवस्था वर्तमान युगसे कही अच्छी थी। हमारे प्राचीनतम देशमें कितनी ही सभ्यताअें आअी और चली गअी। अिसी-लिअे यह ठीक-ठीक कहना कठिन है कि किसी खास युगमें हमारी कैसी स्थिति थी। लेकिन अिसमें तो जरा भी शक नही कि हमारी यह हालत शूद्रोंके प्रति कअी सदियोंसे अुपेक्षाका भाव रखनेसे ही हुअी है। आज गावोंकी संस्कृति — अगर अुसे संस्कृति कहा जा सके — अेक भयंकर संस्कृति है। गांवके लोग आज जानवरोंसे भी बदतर हालतमें रहते हैं। प्रकृति जानवरोंको काममें लगाने और स्वाभाविक रीतिसे रहनेके लिअे मजबूर करती है। पर हमने अपने श्रमजीवी वर्गोंको गुलामकर अितना नीचे गिरा दिया है कि वे प्राकृतिक रीतिसे न तो काम कर सकते हैं और न रह ही सकते है। अगर वे लोग बुद्धिका अुपयोग करके समझकर काम करते, तो हमारी हालत आज कुछ दूसरी ही होती।"

[श्री महादेव देसाअीके 'साप्ताहिक पत्र' नामक लेखसे;
हरिजनसेवक, १-८-'३६; पृ० १९१-९२

८

श्रमकी प्रतिष्ठा

आप पूछ सकते है: "हमें अपने हाथोंका अुपयोग क्यो करना चाहिये?" और कह सकते हैं: "शारीरिक कार्य तो जो अपढ़ हैं अुनसे करवाया जाना चाहिये। मैं तो केवल साहित्य और राजनीतिक लेखोंके पठनमे अपनेको व्यस्त रख सकता हू।" मैं सोचता हूं कि हमें श्रमकी प्रतिष्ठाको पहचानना है। अगर अेक नाअी या चमार कॉलेजमें जाता है, तो अुसे नाअी या चमारका धन्धा छोड़ नही देना चाहिये। मैं मानता हूं कि नाअीका धन्धा अुतना ही अच्छा और अुपयोगी है जितना कि डॉक्टरका धन्धा है।

स्पीचेज़ अेण्ड राअिटिंग्ज ऑफ महात्मा गाधी, पृ० ३८९; १९३३

हमारे देशकी भयंकर गरीबी और बेकारी देखकर सचमुच कअी बार मुझे रुलाअी तक आ गअी है। मगर साथ ही मुझे यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि हमारा अज्ञान और लापरवाही अिसके लिअे बहुत हद तक जिम्मेवार है। हम असलमें यह जानते ही नहीं कि मेहनत करना कितने गौरवकी चीज है। मिसालके तौर पर, अेक चमार सिवा जूते बनानेके और कोअी काम करना पसन्द नही करेगा; वह समझता है कि और सब काम नीचे हैं। यह गलत खयाल दूर हो जाना चाहिये। जो अीमानदारीके साथ अपने हाथ-पैरोसे काम लेना चाहते हैं, अुनके लिअे हिन्दुस्तानमें काफी काम पड़ा हुआ है। परमात्माने हरअेक आदमीको अैसी शक्ति और बुद्धि दे रखी है जिसकी मददसे वह अितना पैदा कर सकता है कि अुसके खाते-खाते भी बच जाय। और जो भी अपने अिन गुणोसे काम लेना चाहेगा अुसे काम तो मिल ही जायगा। अीमानदारीके साथ अपनी रोजी कमानेकी अिच्छा रखनेवालेके लिअे

कोअी भी काम नीच नहीं है। सवाल यह है कि आदमी खुद अीश्वरके दिये हुअे हाथ-पैर हिलानेको तैयार है या नहीं?

हरिजनसेवक, १९-१२-’३६; पृ० ३४५-४६

श्रम और बुद्धिके बीच जो अलगाव हो गया है, अुसके कारण हम अपने गांवोंके प्रति अितने लापरवाह हो गये हैं कि वह अेक गुनाह ही माना जा सकता है। नतीजा यह हुआ है कि देशमें जगह-जगह सुहावने और मनभावने छोटे-छोटे गांवोंके बदले हमें घूरे जैसे गांव देखनेको मिलते हैं। बहुतसे या यों कहिये कि करीब-करीब सभी गांवोंमें घुसते समय जो अनुभव होता है, अुससे दिलको खुशी नहीं होती। गांवके बाहर और आसपास अितनी गंदगी होती है और वहां अितनी बदबू आती है कि अक्सर गांवमें जानेवालेको आंख मूंदकर और नाक दबाकर ही जाना पड़ता है। ज्यादातर कांग्रेसी गांवके बाशिन्दे होने चाहियें; अगर अैसा हो तो अुनका फर्ज हो जाता है कि वे अपने गांवोंको सब तरहसे सफाअीके नमूने बनायें। लेकिन गांववालोंके हमेशाके यानी रोज-रोजके जीवनमें शरीक होने या अुनके साथ घुलने-मिलनेको अुन्होंने कभी अपना कर्तव्य माना ही नहीं। हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाअीको न तो जरूरी गुण माना, और न अुसका विकास ही किया। यों रिवाजके कारण हम अपने ढंगसे नहा-भर लेते हैं, मगर जिस नदी, तालाब या कुअेंके किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही कोअी दूसरी धार्मिक क्रिया करते हैं और जिन जलाशयोंमें पवित्र होनेके विचारसे हम नहाते हैं, अुनके पानीको बिगाड़ने या गन्दा करनेमें हमें कोअी हिचक नहीं होती। हमारी अिस कमजोरीको मैं अेक बड़ा दुर्गुण मानता हूं। अिस दुर्गुणका ही यह नतीजा है कि हमारे गांवोंकी और हमारी पवित्र नदियोंके पवित्र तटोंकी लज्जाजनक दुर्दशा और गन्दगीसे पैदा होनेवाली बीमारियां हमें भोगनी पड़ती हैं।

*

रचनात्मक कार्यक्रम, पृ० २३–२४; १९५९

गांधीजीने अुन शिकायतोका अुल्लेख किया जो अुनके पास आती है. यहा जो शरणार्थी पड़े है, अुनको खाना देते है, पीना देते है, पहननेको देते हैं। जो हो सकता है सब करते है, लेकिन वे मेहनत नही करना चाहते, काम नही करना चाहते। जो अुन लोगोंकी खिदमत करते है, अुन्होने लम्बी-चौड़ी शिकायत लिखकर दी है। अुसमें से मैं अितना ही कह देता हू। मैंने तो कह दिया है कि अगर दुःख मिटाना चाहते हैं, दुःखमें से सुख निकालना चाहते हैं, दुःखमें भी हिन्दुस्तानकी सेवा करना चाहते है — अुसके साथ अपनी सेवा तो हो ही जाती है — तो दुःखियोंको काम तो करना ही चाहिये। दुःखीको अैसा हक नहीं कि वह काम न करे और मौज-शौक करे। गीतामे तो कहा है, यज्ञ करो और खाओ — यज्ञ करो और जो शेष रह जाता है अुसको खाओ। यह बात मेरे लिअे है और आपके लिअे नही अैसा नही है। यह सबके लिअे है। जो दु खी है अुनके लिअे भी है। अेक आदमी कुछ करे नही, बैठा रहे और खाये, यह चल नही सकता। करोड़पति भी काम न करे और खाये, तो वह निकम्मा है, पृथ्वी पर भार है। जिसके पास पैसा है वह भी मेहनत करके खाये तभी काम बनता है। हां, कोअी लाचारी हो — आदमीके पैर नही चलते, अधा है, वृद्ध हो गया है, तो अलग बात है। लेकिन जो तगड़ा है वह काम क्यो न करे? जो कोअी जो काम कर सकते है सो करें। शिविरोमे जो तगड़े लोग पड़े है। वे पाखाना भी अुठावें, चरखा चलावें, जो काम कर सकते हैं सो करे। जो लोग काम करना नही जानते वे लड़कोंको सिखावें। मैं तो अितना ही कहूंगा कि जितने शरणार्थी है वे काम करके खाये। अुन्हें काम करना ही चाहिये।

दिल्ली-डायरी, पृ० ३८८; १९६०

९

समाज-सेवाका सबसे अूंचा प्रकार

अैसा मालूम होता है कि 'ब्रेड लेबर' (रोटीके लिअे परिश्रम, शरीर-श्रम) के सिद्धान्तके विषयमें कुछ गलतफहमी हो गअी है। यह सिद्धान्त समाज-सेवाका विरोधी तो है ही नहीं। बुद्धिपूर्वक किया हुआ श्रम अुच्चसे अुच्च प्रकारकी समाज-सेवा है। कारण यह है कि यदि कोअी मनुष्य अपने शारीरिक श्रमसे देशकी अुपयोगी सम्पत्तिमें वृद्धि करता है, तो अिससे अुत्तम और हो ही क्या सकता है? 'होना' निश्चय ही 'करना' है।

श्रमके साथ जो 'बुद्धिपूर्वक किया हुआ' विशेषण लगाया गया है, वह यह बतलानेके लिअे लगाया गया है कि समाज-सेवामें श्रम तभी गिना जा सकता है जब अुसके पीछे सेवाका कोअी निश्चित हेतु हो; नहीं तो यह कहा जा सकता है कि हरअेक मजदूर समाजकी सेवा करता है। अेक प्रकारसे तो वह समाजकी सेवा करता ही है, पर जिस सेवाकी यहां बात हो रही है वह बहुत अूंचे प्रकारकी सेवा है। जो मनुष्य सबके हितके लिअे सेवा करता है वह समाजकी सेवा करता है, और जितनेसे अुसका पेट भर जाय अुतनी मजदूरी पानेका अुसे हक है। अिसलिअे अिस प्रकारका 'ब्रेड लेबर' (शरीर-श्रम) समाज-सेवासे भिन्न नहीं है। अधिकांश मनुष्य जो काम अपने शरीरके पोषणके लिअे या बहुत हुआ तो अपने कुटुम्बके लिअे करते हैं, अुसे समाज-सेवक सबके हितके लिअे करता है।

हरिजनसेवक, १४-९-'३५; पृ० १३३

[illegible] और [illegible] अर्थ यह है कि निश्चित रीतिसे शरीर-श्रमके धर्मको, अुसके सारे अंगोंके साथ, [illegible] स्वीकार न किया

जाय। किन्तु आलोचक अिस पर यह कहते है कि "करोड़ों भारतवासी आज गावोंमे ही तो रहते है, तो भी अिन वेचारोंको वहां पेट भर भोजन नसीव नही होता और वे भूखो मर रहे है।" वात तो विलकुल सत्य है। सद्भाग्यसे हम यह जानते है कि वे स्वेच्छासे नियमका पालन नही कर रहे है। अगर अुनकी चलती तो अैसा शारीरिक श्रम वे कभी न करते; वल्कि वे किसी विलकुल पासके शहरकी ओर वसनेके लिअे दौड़ते, अगर वहा अुनके लिअे जगह होती। मालिकका हुक्म जव जवरदस्तीसे वजाया जाता है, तव अुसे परवशता या दासताकी स्थिति कहते है। पिताकी आज्ञाका जव स्वेच्छासे पालन किया जाता है तव वह आज्ञा-पालन पुत्रत्वका गौरव वन जाता है। अिसी तरह शरीर-श्रमके नियमका वलात्कारपूर्वक पालन किया जायगा, तो अुससे दरिद्रता, रोग और असंतोपकी ही सृष्टि होगी। जव स्वेच्छासे अुस नियमका पालन किया जायगा, तव अुससे अवश्य ही सतोष और आरोग्यका लाभ होगा। और आरोग्य ही तो सच्चा धन है। चांदी-सोनेके ये टुकड़े सच्ची संपत्ति नही है।

हरिजनसेवक, ५-७-'३५; पृ० १६०

अगर हरअेक आदमी अपने पसीनेकी कमाअी पर रहे, तो यह दुनिया स्वर्ग वन जाय। मनुष्यकी खास खूबियोंके अुपयोगके प्रश्न पर अलगसे विचार करनेकी विलकुल जरूरत नही। अगर सव लोग रोटीके लिअे शरीर-श्रम करें, तो अुसका यह नतीजा होगा कि कवि, शायर, डॉक्टर, वकील वगैरा मनुष्यकी सेवाके लिअे अपनी अुन खूबियोंका मुफ्त अुपयोग करना अपना फर्ज समझेंगे। विना किसी स्वार्थके अपना फर्ज अदा करनेके कारण अुनके कामका नतीजा और भी अच्छा होगा।

हरिजनसेवक, २-३-'४७; पृ० ३९

यह देखा जाता है कि अिस दुनियामें मनुष्यको रोज जितना चाहिये अुतना अीश्वर रोज पैदा करता है। अुसमें से अगर कोअी अपनी

आवश्यकतासे अधिक काममें लेता है, तो अुसके पड़ोसीको भूखा रहना ही पड़ेगा।

बहुत लोग अपनी आवश्यकतासे अधिक लेते हैं, अिसीलिअे दुनियामें भूखों मरनेकी नौबत आती है। हम कुदरतकी देनको किसी भी तरह काममें ले, फिर भी कुदरत तो रोज दोनों पलड़े बराबर ही रखती है। कुदरतके बहीखातेमें न तो जमामें कुछ बाकी रहता है न नामेमें। वहां तो रोज आमद-खर्चका हिसाब बराबर होकर शून्य ही बाकी रहता है। अिस शून्यमें हमें शून्यके समान बनकर समा जाना चाहिये।

अूपरके नियममें यह बात बाधक नहीं है कि कभी रसायनों और यंत्रोंके जरिये मनुष्य जमीनसे ज्यादा फसल पैदा करता है; अपनी मेहनतसे दूसरी तरह अनेक वस्तुअें अुत्पन्न करता है। यह कुदरतकी शक्तियोंका रूपान्तर है। सबका आखिरी परिणाम तो शून्य ही होनेवाला है। मगर हमें रोज जो कुछ अनुभव होता है अुसका पृथक्करण किया जाय, तो अुससे यही अनुमान होता है कि दोनों पलड़े बराबर रहते हैं।

सत्याग्रह आश्रमका अितिहास, पृ० ४१–४२; १९५०.

प्रारम्भसे ही मेरी यह दृढ़ श्रद्धा रही है कि जिस देशके वासियोंके लिअे खेती ही अेकमात्र अटूट और अटल खज़ाना है। जिसकी भी हम खोज करेंगे और देखेंगे कि जिसके सहारे कहां तक जाया जा सकता है। यदि हमारे लोग खादीके बदले खेतीमें दिलचस्प होकर लोगोंकी सेवा करेंगे तो मुझे अफसोस नहीं होगा।

खादी : क्यों और कैसे? पृ० २३१; १९५९

१०

चरखेके साथ शरीर-श्रम

जैसे हममें से हरअेकको खुद खाना, पीना और कपड़े पहनना चाहिये, वैसे ही हममे से हरअेकको खुद कातना भी चाहिये।

यग अिंडिया, २८–५–'२५; पृ० १८२

सबसे बडा अुद्योग, जिसमे करोड़ोंकी मेहनतकी जरूरत है, सूत-कताअी ही है। जरूरत अिस बातकी है कि अिस देशके किसानोंकी अत्यन्त बड़ी सख्याको बुद्धिसे किया जानेवाला अेक और काम दिया जाय, जिससे अुनके हाथ और दिमाग दोनोको तालीम मिले। अुनके लिअे जो सबसे अच्छी और सस्ती शिक्षा ढूंढी जा सकती है वह यही है। सबसे सस्ती अिसलिअे कि अिससे तुरन्त ही आमदनी भी होने लगती है। और यदि हमे भारतवर्षमें सार्वजनिक शिक्षाका प्रचार करना है, तो प्राथमिक शिक्षा लिखाअी, पढ़ाअी और हिसाबकी न होकर सूत कातने और अुससे सम्बन्धित अन्य ज्ञानकी होगी। और जब अिसके जरिये हाथों और आंखोको पूरी तालीम मिल जाती है, तब कही बालक अिन तीनोंको सीखनेके लिअे तैयार होता है। मैं जानता हूं कि यह कुछ लोगोको तो असंभव और कुछको बिलकुल अव्यावहारिक मालूम होगा। मगर जो अैसा सोचते है वे हमारे करोड़ों भाअी-बहनोंकी हालत नही जानते। वे यह भी नही जानते कि हिन्दुस्तानके किसानोके करोड़ों बच्चोंको शिक्षा देनेका क्या अर्थ है। और यह शिक्षा तब तक नही दी जा सकती जब तक शिक्षित भारतवासी, जिन्होने अिस देशमे राजनीतिक जागृति पैदा की है, परिश्रमके गौरवको समझ नही लेते और जब तक हरअेक नौजवान चरखा चलानेकी कलाको सीखना और गावोंमें फिरसे अुसे दाखिल करना अपना परम कर्तव्य नही मानता।

हिन्दी नवजीवन, ९–९–'२६, पृ० २९

मै देहातमें जितना गहरा घुसता हूं, अुतना ही बड़ा आघात देहातियोंसे मिलने पर अुनकी आंखोंमें सूनापन देखकर मुझे लगता है। अपने बैलोंके साथ मजदूरी करनेके सिवा अुनके पास और कोअी काम नहीं होता; अिसलिअे वे भी लगभग बैलों जैसे बन गये हैं। यह सबसे बड़े दुःखकी बात है कि लाखों लोगोंने हाथसे काम करना छोड़ दिया है। प्रकृतिने हम मानव-प्राणियोंको जो कीमती वस्तु प्रदान की है, अुसे बेदर्दीसे बरबाद करनेका दंड वह हमें भयंकर रूपमें दे रही है। हम अिस देनका पूरा अुपयोग करनेसे अिनकार करते हैं। हाथोंका बढ़िया यंत्र अुन थोड़ीसी वस्तुओंमें से अेक है, जो हमें जानवरोंसे अलग करता है। हममें से लाखों लोग हाथोंका सिर्फ पैरोंकी तरह ही अिस्तेमाल करते है। नतीजा यह होता है कि प्रकृति हमारे शरीर और मन दोनोंको भूखों मारती है।

अिस विचारहीन बरबादीको केवल चरखा ही रोक सकता है। यह काम वह अभी तुरन्त और रुपया या बुद्धिकी असाधारण पूंजी लगाये बिना ही कर सकता है। अिस बरबादीके कारण हम लगभग अधमरी हालतमें जी रहे हैं। चरखेका पुनरुद्धार हो सकता है, अगर हर घर फिरसे कताअीका कारखाना बन जाय और हर गांव बुनाअीका कारखाना बन जाय। अिसके साथ साथ प्राचीन देहाती कला और देहाती संगीतका भी तुरन्त पुनरुद्धार हो जायगा। आधे पेट रहनेवाले राष्ट्रमें न तो धर्म हो सकता है, न कला हो सकती है; और न वह अपना संगठन ही कर सकता है।

यंग अिंडिया, १७-२-'२७; पृ० ५२

ग्रामसेवकके जीवनका मध्यबिन्दु चरखा होगा। खादीके पीछे यह विचार है कि वह धंधोंका सहायक अुद्योग है और अुसके जितना ही व्यापक है। चरखेने हमारे जीवनमें अपना अुचित स्थान प्राप्त कर लिया है, औसा तब तक नहीं कहा जा सकता जब तक हम आलस्यको अपने

गांवोसे जड़से मिटा नही देते और गांवके प्रत्येक घरको अुद्योगोंसे गूंजा नही देते।

ग्रामसेवक गांवोंमें जाकर स्वयं नियमपूर्वक चरखा चलायेगा और सिर्फ सूत ही नही कातेगा, बल्कि अपनी जीविकाके लिअे वसूला और हथौड़ा चलायेगा, कुदाली और फावड़ा चलायेगा। या हाथ-पैरसे जो भी मेहनत हो सकेगी वह करेगा। खाने-पीने और सोनेके आठ घण्टोंके सिवा बाकीके समयमें वह किसी न किसी काममें लगा ही रहेगा। अपना अेक मिनट भी वह बेकार न जाने देगा। आलस्यको न तो वह अपने पास फटकने देगा और न दूसरोंके पास फटकने देगा। अुसका जीवन अपने पड़ोसियोके लिअे निरन्तर चलनेवाले प्रसन्नता-वर्धक अुद्योगका नित्यपाठ देनेवाला होगा। हमारे बाहरसे लादे गये या स्वेच्छासे अपनाये गये आलस्यको जाना ही होगा। अगर यह आलस्य विदा न हुआ तो कितनी ही सुविधायें क्यों न मिलें, देशके लोग भूखे ही रहेंगे, आज जैसी भूखकी सनातन समस्या सदा बनी ही रहेगी। जो अन्नके दो दाने खाता है, अुसे चार दाने अुपजानेका धर्म स्वीकार करना ही चाहिये। अैसा अगर हो जाये तो दूसरे करोड़ों लोग भी हिन्दुस्तानमे पलने लगेंगे; और यह न हुआ तो जनसंख्या चाहे कितनी ही कम हो जाय, फिर भी भूखों मरनेवाले लोगोंका वर्ग तो देशमे बना ही रहेगा।

अिस प्रकार ग्रामसेवक अुद्योगका अेक जीता-जागता प्रतीक होगा।

हरिजनसेवक, ७-९-'३४; पृ० २९३-९४

११

आश्रममें शरीर-श्रम

मुझ पर टॉल्स्टॉयका बहुत असर हुआ था, और अुनकी बातों पर यथासंभव अमल करना तो मैंने दक्षिण अफ्रीकामें ही शुरू कर दिया था। आश्रम कायम हुआ तभीसे रोटी-श्रमको अुसमें मुख्य स्थान मिला।

दिनके अमुक घंटोंमें मेहनतके सिवा दूसरा काम न हो तो मेहनत जरूर होगी। भले ही अुसमें आलस्य हो, कार्य-दक्षता न हो, मन न हो, मगर कुछ घण्टे पूरे तो होंगे ही। फिर, कुछ मेहनत तुरन्त फल देनेवाली होती है, अिसलिअे अुसमें बहुत आलस्यकी गुंजाअिश भी नहीं रहती। श्रम-प्रधान संस्थाओंमें नौकर नहीं होते या थोड़े ही होते हैं। पानी भरना, लकड़ी फाड़ना, दियाबत्ती तैयार करना, पाखाने और रास्ते साफ करना, मकानोंकी सफाअी रखना, अपने अपने कपड़े धोना, रसोअी करना वगैरा अनेक काम अैसे हैं जो किये ही जाने चाहियें।

अिनके सिवा खेती, बुनाअी-काम, अुनसे सम्बन्धित और दूसरी तरहके जरूरी बढ़अी-काम, गोशाला, चमार-काम वगैरा काम आश्रमके साथ जुड़े हुअे हैं। अुनमें थोड़े-बहुत आश्रमवासियोंके लगे बिना काम नहीं चल सकता।

ये सब काम रोटी-श्रमके नियम-पालनके लिअे काफी माने जायगे। मगर यज्ञका दूसरा अंग परमार्थ या सेवाकी वृत्ति है। अुसे अिन कामोंमें शामिल करने पर आश्रमकी कमजोरी जरूर मालूम होगी। आश्रमका आदर्श सेवाके लिअे ही जीना है। अिस ढंगसे चलनेवाली संस्थामें आलस्य, कामचोरीका स्थान नहीं है। वहां सब काम तन-मनसे होने चाहिये। सभी लोग अैसा करते तो आज आश्रमकी सेवाकी योग्यता बहुत बढ़ गयी होती। लेकिन अैसी सुन्दर स्थितिसे आश्रम अब भी बहुत दूर है। अिसलिअे यद्यपि आश्रमका हर काम यज्ञरूप है,

फिर भी आदर्शका विचार करके दरिद्र-नारायणके लिअे कमसे कम अेक घण्टेकी कताअीको आवश्यक स्थान दिया गया है।

यह आरोप समय समय पर सुना गया है, और आज भी मैं सुना करता हूं, कि श्रम-प्रधान संस्थामें बुद्धिके विकासकी गुंजाअिश नही रहती, अिसलिअे वह जड़ वन जाती है। मेरा अनुभव अिससे अुलटा है। आश्रममें जितने भी लोग आये हैं, सभीकी वुद्धि कुछ तेज हुअी है; किसीकी मन्द हुअी हो अैसा जाननेमे नही आया।

वहुत वार अैसा मान लिया जाता है कि जगतकी अनेक घटनाओका वाहरी ज्ञान ही वुद्धि है। मुझे यह कवूल करना पड़ेगा कि अैसी बुद्धि आश्रममे कम विकसित होती है। लेकिन अगर बुद्धिका अर्थ समझ, विवेक वगैरा हो, तो वह आश्रममे काफी विकसित होती है। जहां मजदूरके रूपमें मेहनत सिर्फ गुजारेके लिअे होती है, वहां मनुष्यका जड़ वन जाना संभव है। अमुक चीज किसलिअे या किस तरह होती है, अिसका ज्ञान अुसे कोअी नही देता। अुसे खुद अिस विषयमें जिज्ञासा नही होती, न अपने काममें दिलचस्पी होती। आश्रममें अिससे अुलटा होता है। हर काम — पाखाना-सफाअी तक — समझकर करना पड़ता है। अुसमे दिलचस्पी ली जाती है। वह परमेश्वरको प्रसन्न करनेके लिअे होता है। अिसलिअे अुसे करते हुअे भी बुद्धिके विकासकी गुंजाअिश रहती है। सबको अपने अपने विषयका पूरा ज्ञान प्राप्त करनेका प्रोत्साहन दिया जाता है। जो यह ज्ञान लेनेकी कोशिश नही करते, अुनके लिअे वह दोष माना जाता है। आश्रममें या तो सभी मजदूर हैं या कोअी भी मजदूर नही है।

यह मानना कि किताबोसे ही, मेज-कुर्सी पर वैठनेसे ही, ज्ञान मिलता है, बुद्धिका विकास होता है, हमारा घोर अज्ञान है, भारी वहम है। हमे तो अिसमे से निकल जाना चाहिये। जीवनमे वाचनके लिअे स्थान जरूर है, मगर वह अपनी जगह पर ही शोभा देता है। शरीर-श्रमको हानि पहुंचाकर अुसे वढ़ाया जाय, तो अुसके खिलाफ विद्रोह करना फर्ज

हो जाता है। शरीर-श्रमके लिअे दिनका ज्यादा समय देना चाहिये और वाचन वगैराके लिअे थोड़ा। आजकल अिस देशमें, जहां अमीर लोग या अूचे वर्गके माने जानेवाले लोग शरीर-श्रमका अनादर करते हैं, शरीर-श्रमको अूचा दरजा देनेकी बड़ी जरूरत है। और बुद्धिशक्तिको सच्चा वेग देनेके लिअे भी शरीर-श्रमकी यानी किसी भी अुपयोगी शारीरिक धन्धेमें शरीरको लगानेकी जरूरत है।

सत्याग्रह आश्रमका अितिहास, पृ० ४२–४४; १९५९

१२

मेहनत नहीं तो खाना भी नहीं

भारतके कंगालोंकी हितैषिताने मुझे अितना कठोर-हृदय बना दिया है कि अुनके बिलकुल भिखमंगे बन जानेकी अपेक्षा मैं अुनका नंगा भूखों मर जाना खुशीसे पसंद करूंगा। मेरी अहिंसा किसी अैसे तन्दुरुस्त आदमीको मुफ्त खाना देनेका विचार बरदाश्त नहीं करेगी, जिसने अुसके लिअे अीमानदारीसे कुछ न कुछ काम न किया हो; और मेरा बस चले तो जिन सदाव्रतोंमें मुफ्त भोजन मिलता है, वे सब सदाव्रत मैं बन्द कर दूं। अिससे राष्ट्रका पतन हुआ है और सुस्ती, बेकारी, दंभ और अपराधोंको भी प्रोत्साहन मिला है। अिस प्रकारका अनुचित दान देशकी भौतिक या आध्यात्मिक सम्पत्तिकी कुछ भी वृद्धि नहीं करता और दाताके मनमें पुण्यात्मा होनेका झूठा भाव पैदा करता है। कितनी ही अच्छी और बुद्धिमानीकी बात हो, यदि दानी लोग अैसी संस्थायें खोलें जहां अुनके लिअे काम करनेवाले स्त्री-पुरुषोंको स्वास्थ्यप्रद और स्वच्छ हालतमें भोजन दिया जाय। मेरा खुदका तो यह विचार है कि चरखा या कपासके सम्बन्धित क्रियाओंमें से कोअी भी क्रिया आदर्श धन्धा होगी। परन्तु अुन्हें यह स्वीकार न हो तो वे कोअी भी दूसरा

काम चुन सकते हैं। जो भी हो, नियम यह होना चाहिये कि 'मेहनत नही तो खाना भी नहीं।' प्रत्येक शहरके लिअे भिखमंगोंकी अपनी-अपनी अलग कठिन समस्या है, जिसके लिअे धनवान जिम्मेदार हैं। मैं जानता हूं कि आलसियोंको मुफ्त भोजन करा देना बहुत आसान है, परन्तु अैसी किसी संस्थाको संगठित करना बहुत कठिन है जहां किसीको खाना देनेसे पहले अुससे ओमानदारीसे काम कराना जरूरी हो। आर्थिक दृष्टिसे, कमसे कम शुरूमें, लोगोसे काम लेनेके बाद अुन्हें खाना खिलानेका खर्च मौजूदा मुफ्तके भोजनालयोके खर्चसे ज्यादा होगा। लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि यदि हम तेजीसे देशमें बढ़नेवाले आवारागर्द लोगोकी संख्यामें वृद्धि नही करना चाहते, तो अन्तमें यह व्यवस्था अधिक सस्ती पड़ेगी।

यग अिंडिया, १३–८–'२५; पृ० २८२

भीख मांगनेको प्रोत्साहन देना बेशक बुरा है, लेकिन मैं किसी भिखारीको काम और भोजन दिये बिना नही लौटाअूगा। हां, वह काम करना मंजूर न करे तो मैं अुसे भोजनके बिना ही चला जाने दूंगा। जो लोग शरीरसे लाचार हैं, जैसे लंगड़े या विकलांग, अुनका पोषण राज्यको करना चाहिये। लेकिन बनावटी या सच्ची अंधताकी आड़में भी काफी धोखा-धड़ी चल रही है। कितने ही अैसे अंधे है जिन्होंने अपनी अंधताका लाभ अुठाकर काफी पैसा जमा कर लिया है। वे अिस तरह अपनी अंधताका अनुचित लाभ अुठायें, अिसके बजाय यह ज्यादा अच्छा होगा कि अुन्हे अपाहिजोंकी देखभाल करनेवाली किसी संस्थामें रख दिया जाय।

हरिजन, ११–५–'३५; पृ० ९९

१३

नौकरों पर अवलम्बन

घरेलू नौकरोंकी संस्था पुरानी है। परन्तु मालिकका नौकरोंके प्रति रवैया समय-समय पर बदलता रहा है। कुछ लोग नौकरोंको परिवारके आदमी समझते हैं और कुछ अुन्हें गुलाम या जंगम सम्पत्ति मानते हैं। संक्षेपमें, सामान्यतः नौकरोंके प्रति समाजका जो रवैया होता है, वह अिन दो आत्यंतिक विचारोंके बीचमें आ जाता है। आजकल सब जगह नौकरोंकी बड़ी मांग है। अुन्हें अपने महत्त्वका पता लग गया है और अिसलिअे कुदरती तौर पर वे वेतन और नौकरीके बारेमें अपनी ही शर्तें रखते हैं। यदि अिसके साथ ही हमेशा अुन्हें अपने कर्तव्यका ज्ञान हो और वे अुसका पालन भी करें तो ठीक हो। अुस हालतमें वे नौकर नहीं रहेंगे और अपने लिअे परिवारके सदस्योंका दरजा प्राप्त कर लेंगे। परन्तु आजकल तो सबका दिमागमें विस्वान हो गया है। तब फिर नौकर अुचित ढंगसे अपने मालिकोंके परिवारके सदस्यका दर्जा कैसे प्राप्त कर सकते हैं? यह प्रश्न अैसा है जो पूछा जा सकता है।

मेरी रायमें जो आदमी दूसरोंका सहयोग चाहता है और अुन्हें सहयोग देना चाहता है, अुसे नौकरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। यदि नौकरोंकी कमीके वक्त किसीको नौकर रखना पड़ता है, तो अुसे मुंहमांगा वेतन देना पड़ता है और दूसरी सब शर्तें माननी पड़ती हैं। नतीजा यह होता है कि घर मालिक होनेके बजाय अपने नौकरका नौकर हो जाता है। यह न मालिकके लिअे अच्छा है, न नौकरके लिअे। परन्तु अगर किसी व्यक्तिको दूसरे मानव-रूपी गुलामों नहीं बल्कि सहयोग चाहिये, तो वह न केवल अपनी ही सेवा करेगा बल्कि अुनकी भी करेगा जिनके सहयोगकी अुसे जरूरत है। अिस

सिद्धान्तका विस्तार करनेसे मनुष्यका परिवार अुतना ही विशाल हो जायगा जितना यह संसार है, और अपने मानव-बन्धुओंके प्रति अुसके रवैयेमें वैसा ही परिवर्तन हो जायगा। वाछित अुद्देश्यकी प्राप्तिका दूसरा कोअी मार्ग नही है।

जो अिस सिद्धान्त पर अमल करना चाहता है, वह छोटे-छोटे प्रारम्भ करके सन्तोष मान लेगा। मनुष्यमे हजारोंका सहयोग ले सकनेकी योग्यता होते हुअे भी अुसमें अितना संयम और स्वाभिमान होना ही चाहिये कि वह अकेला खड़ा रह सके। अैसा व्यक्ति कभी सपनेमे भी किसी आदमीको अपना दास नही समझेगा और न अुसे अपने नीचे दबा कर रखनेकी कोशिश करेगा। सच तो यह है कि वह बिलकुल भूल जायगा कि वह अपने नौकरोंका मालिक है और अुन्हें अपने स्तर पर लानेकी पूरी कोशिश करेगा। दूसरे शब्दोंमे, जो चीज दूसरोको नही मिल सके अुसके बिना काम चलाकर अुसे सन्तोष कर लेना चाहिये।

हरिजन, १०-३-'४६; पृ० ४०

आशीर्वचनम्

आयुर्वेद-कुल-कमल-दिवाकर

पण्डितराज

श्री यादव जी त्रिकम जी

आचार्य

श्रीयुत बाबू जयकृष्णदास जी गुप्त बनारस के प्राचीन और सुप्रसिद्ध ग्रन्थ प्रकाशक हैं। इन दिनों आपने आयुर्वेद के अनेकानेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ सुयोग्य विद्वानों द्वारा लिखवा कर प्रसिद्ध किये हैं और आगे भी ऐसे उत्तम ग्रन्थ तैयार कर प्रसिद्ध करने का आपका सङ्कल्प है। मैं इस सत्कार्य के लिये आपको अनेक धन्यवाद देता हूँ और भगवान धन्वन्तरि से प्रार्थना करता हूँ कि वे इस सत्कार्य के लिये श्री गुप्त जी को दीर्घायु और आरोग्य प्रदान करें।

—वैद्य यादवजी त्रिकमजी
आचार्य

आयुर्वेद-बृहस्पति, भिषक्केसरी

प्राणाचार्य

पण्डित श्री गोवर्धनशर्मा जी

छांगाणी

काशी के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ प्रकाशक स्वर्गीय हरिदास जी गुप्त के सुपुत्र बाबू जयकृष्णदास गुप्तादि नितान्त धन्यवाद के पात्र हैं। आप स्वर्गीय पिता जी का अनुसरण करते हुए अपनी चौखम्बा संस्कृत सीरीज द्वारा संस्कृत एवं आयुर्वेद के बड़े बड़े मौलिक ग्रन्थों का प्रकाशन करके संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वानों तथा आयुर्वेदज्ञ वैद्यराज की सेवा कर रहे हैं। आपकी संस्था से सैकड़ों मौलिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। संस्कृत-आयुर्वेद का कोई [illegible] ऐसा नहीं है जो इनके द्वारा प्रकाशित नहीं है। अतः हम [illegible] संस्था की उन्नति चाहते हैं।

—वैद्य गोवर्धन शर्मा
छांगाणी

पदार्थविज्ञान

(A Treatise on Ancient Basic Sciences)

श्री वागीश्वर शुक्ल बी. ए., ए. एम. एस.

आयुर्वेद-विज्ञान से परिचित होने के लिये तद्गत पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। पदार्थ-विज्ञान के अनेक संस्करण हो भी चुके हैं किन्तु उनमें सामान्य पदार्थों का परिचय नगण्य-सा है, अतः वर्षों के गम्भीर अध्ययन एवं मनन के पश्चात् यह संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है।

ग्रन्थ ३ खण्डों मे विभक्त है। प्राच्य विज्ञान के सुविशद परिचय के साथ नव्य विज्ञान में विवेचित विषयों का भी क्रमबद्ध विवेचन तथा समन्वय प्रस्तुत संस्करण की प्रमुख विशेषता है। यह ग्रंथ उभयविध आयुर्विज्ञान की व्याख्या पूर्णरूप से बुद्धिगम्य करा देने के लिये यथेष्ट है आयुर्वेद के छात्रो के लिये इससे अधिक अनुकूल कोई भी दूसरा पदार्थविज्ञान का संस्करण उपयुक्त नहीं है। सम्पूर्ण वैशिष्ट्य ग्रन्थ देखने पर सहज ही समझा जा सकता है। मूल्य ८-००

चौखम्बा चिकित्सा-विज्ञानकोश

(Anglo-Hindi Medical Dictionary)

(पाश्चात्त्य चिकित्सा-शास्त्र के हिन्दीकरण का अनुपम प्रयास)

डा० अवधविहारी अग्निहोत्री (उपसंचालक आयुर्वेद मध्यप्रदेश)

सम्पादक—डॉ० गङ्गासहाय पाण्डेय

वर्तमान सुसम्पन्न पाश्चात्त्य चिकित्सा-पद्धति का सम्यक् ज्ञान उन्हें ही हो सकता है जो अंग्रेजी, जर्मन, लैटिन तथा हिब्रू भाषाओं से परिचित हों। हिन्दी-भाषियों को भी इस उपादेय ज्ञान का लाभ कराने के उद्देश्य से लगातार ५ वर्षों के श्रमपूर्वक यह महाग्रन्थ प्रस्तुत किया जा सका है। इसमें आपको लगभग २०,००० अंग्रेजी शब्दों तथा पाश्चात्त्य-चिकित्सा-विज्ञान के सभी शब्दों के सरल एवं शुद्ध हिन्दीकरण की सफलता प्राप्त होगी। प्रत्येक शब्द-विवेचन के ३ भाग हैं—प्रथम में अंग्रेजी शब्द का मूल रूप, द्वितीय में स्पष्ट उच्चारण तथा तृतीय में हिन्दी पर्याय आदि। हिन्दी संस्कृतनिष्ठ होने के साथ ठीक-ठीक अर्थ बोध कराने में समर्थ है। इस ग्रन्थ ने चिकित्सा-क्षेत्र में हिन्दी अनुवाद आदि की सभी समस्याएं सुलझा दी हैं तथा राष्ट्रहित के लिये चिकित्सा-शास्त्र के हिन्दीकरण का मार्ग भी खोल दिया है। चिकित्सा-क्षेत्र से सम्बन्धित हिन्दी-भाषी-मात्र का इससे यथेष्ट हित होगा। अवश्य संग्रहणीय ग्रन्थ है। मूल्य २०-००

संशोधित । परिवर्द्धित !! परिष्कृत तृतीय संस्करण !!!

अष्टाङ्गहृदयम्

(A Compendium of Indian Medicine)

'विद्योतिनी' हिन्दीटीका 'वक्तव्य' परिशिष्ट सहित

टीकाकार—कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार

परिष्कर्ता—वैद्य श्री यदुनन्दन उपाध्याय बी. ए., ए. एम. एस.

बम्बई सरकार ने शुद्ध आयुर्वेद का जो नया पाठ्यक्रम चलाया है उसमें यही पुस्तक पाठ्यक्रम में सम्पूर्ण रूप से रखी गयी है। टीकाकार ने सर्वाङ्गसुन्दरी, आयुर्वेदरसायन, तत्त्वबोध, पदार्थचन्द्रिका आदि मुद्रित-अमुद्रित अनेक टीकाओं के आधार पर ही इस सुविस्तृत टीका की रचना की है। इसके विशेष वक्तव्य में उपर्युक्त सभी टीकाओं का सारांश प्रायः सब आ गया है।

प्रस्तुत संस्करण की विशेषताएँ

इस संस्करण की व्याख्या में चिकित्सा-जगत् में हुए नवीन शोधों के आधार पर निदान एवं चिकित्सा-संबंधी अनेक उपयोगी विषय भी बढ़ाए गए हैं एवं समन्वयवादी दृष्टिकोण से उनका यथार्थ गुण-दोष विवेचन किया गया है।

पूर्व संस्करण के वक्तव्यों को भी इस बार उपाध्याय जी ने अपने दशाब्दीय चिकित्सा तथा पठन-पाठन के रहस्यानुभवों से संशोधित, परिवर्धित करके छात्रों एवं अध्यापकों के हित की दृष्टि से बहुत ही उपादेय बना दिया है।

ग्रन्थ मुद्रित हो जाने पर भी श्री उपाध्यायजी जिन परमोपयोगी विषयों के उपन्यास करने का लोभ संवरण नहीं कर सके उन्हें परिशिष्ट में दे दिया है—

इस प्रकार यह सर्वाङ्गसुन्दर संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। निश्चित ही इससे छात्राध्यापकों, चिकित्सकों तथा आयुर्वेदानुरागियों का समान रूप से हित होगा।

सुन्दर आकार-प्रकार, नवीन नम्बरी टाइप, सफेद मोटा चिकना कागज, पक्की मनोहर जिल्द आदि से अलंकृत विशालकाय इस संस्करण का मूल्य भी न्यूनतम कर दिया गया है। मूल्य १५-००

भैषज्यरत्नावली

(An Comprehensive Treatise on Ayurvedic Treatment)

(शोधपूर्ण द्वितीय संस्करण)

'विद्योतिनी' हिन्दीव्याख्या वैज्ञानिक 'विमर्श' परिशिष्ट सहित

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस.

सम्पादक—आयुर्वेदबृहस्पति श्री राजेश्वरदत्त शास्त्री चरकाचार्य

इस संस्करण के आलोक में पूर्व प्रकाशित सभी टीकायें नगण्यसी हो गयी हैं। इसकी सविमर्श व्याख्या में विशिष्ट रोगों के लक्षण, पाश्चात्त्यरीत्या मूत्र-परीक्षण, रसोपरस धातुओं का शोधन-मारण, अभाव में लिये जानेवाले प्रतिनिधि द्रव्य तथा चरक, सुश्रुत, वाग्भटादि ग्रन्थ लिखित गण द्रव्यों का भी समावेश आधुनिक समय-कालके अनुसार नवीनवैज्ञानिक ढंगसे औषध-निर्माण, प्रयोग, मात्रा आदिका भी उल्लेख किया गया है। इस संस्करण में प्रत्येक रोग की चिकित्सा के अन्त में पथ्यापथ्य का उल्लेख भी विस्तारपूर्वक कर दिया गया है जो अन्य किसी भी संस्करण में नही है। इसीलिए आचार्य श्री यादवजी त्रिकमजी महाराज, कविराज प्रताप सिंह जी रसायनाचार्य, कविराज सत्यनारायणजी शास्त्री चरकाचार्य, कविराज हरिरञ्जनजी मजुमदार, प्राणाचार्य श्रीगोवर्धन शर्माजी छांगाणी प्रभृति आयुर्वेद जगत के महारथियों ने इस सविमर्श व्याख्या की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

द्वितीय संस्करण की विशेषता

इस ग्रन्थ के प्रमुख सम्पादक आयुर्वेदबृहस्पति पं० राजेश्वरदत्तजी शास्त्री ने विगत आठ वर्षों से प्रथम संस्करण का अनुशीलन करके अपने अध्यापनानुभव तथा चिकित्सानुभव के अनुरूप इस द्वितीय संस्करण की सविमर्श व्याख्या में आमूल संशोधन-परिवर्धन कर दिया है। शास्त्रीजी काशी के प्रख्यात सिद्ध चिकित्सक हैं। इस संस्करण के परिशिष्ट में उन्होंने 'अनुभूतयोगप्रकरण' नामक एक मौलिक ग्रन्थ ही जोड़ दिया है, जो भैषज्यरत्नावली का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है। अनुभूतयोगप्रकरण में जितने योग दिये गये हैं वे शास्त्रीजी के स्वतः अनुभूत-सिद्धयोग हैं। चिकित्सकों को सूत्ररूप में योगों की प्रक्रिया अभ्यस्त रहे इस उद्देश्य से योगों का उल्लेख पद्यबद्ध करके उनकी हिन्दी व्याख्या कर दी गयी है। नवीन, प्राचीन तथा पाश्चात्यमतानुयायी चिकित्सकों के लिए भी यह 'अनुभूत-योगप्रकरण' संग्रहणीय, मननीय और पठनीय है।

लगभग १००० पृष्ठ के इस विशाल ग्रन्थका अत्यल्प नाम मात्र मूल्य १६—००

योगरत्नाकरः

(Diagnosis, Remedy and Preparation of Medicines)

विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित

सम्पादक—भिषग्रत्न श्री पं० ब्रह्मशंकर शास्त्री

कायचिकित्सक के लिए जिन २ बातों का ज्ञान आवश्यक है उन विषयों की अक्षय निधि इस ग्रन्थ में भरी पड़ी है। इस ग्रन्थ में निदान, चिकित्सा, ओषधि निर्माण विधि, मूत्र, नाड़ी प्रभृति की परीक्षा आदि सम्पूर्ण आवश्यक विषयों का विस्तार से वर्णन है। इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण ओषधियां अनुभूत तथा सद्यः फलप्रद हैं। प्रत्येक चिकित्सक को इसकी १-१ प्रति अपने पास अवश्य रखनी चाहिए।

नवीन चमकते टाईप, उत्तम कागज, पृष्ठसंख्या हजार से ऊपर। १८-००

योगरत्नाकरः

(Diagnosis, Remedy and Preparation of Medicines)

मूल गुटकारूप, प्रत्येक श्लोक की पृथक् पृथक् पङ्क्ति एवं नवीन नवीन अवतरणों से युक्त सब संस्करणों से उत्तम शुद्ध तथा सस्ता संस्करण। मूल्य ६-००

आयुर्वेद विद्यापीठ, हि० सा० सम्मेलन आदि द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

रसादि परिज्ञान

(Principles of Ayurvedic Pharmacology)

आयुर्वेदबृहस्पति पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल राजवैद्य

वैद्यसंसार के सुपरिचित मान्य श्री शुक्लजी ने इसकी रचना ऐसी कुशलता और योग्यता से की है कि यह ग्रन्थ आयुर्वेद जगत में एक समुज्ज्वल रत्न के रूप में मान्य होकर अत्यधिक ख्याति पा चुका है। शायद ही कोई ऐसा विद्वान् या छात्र होगा जिसने इस ग्रन्थरत्न का अवलोकन न किया हो। षट् रसों के सम्बन्ध में इतने विवेचन, इतने क्रम विकास और शास्त्र सम्मत विभाग करनेवाला हिन्दी ही क्या भारत की किसी भी भाषा में शुक्लजी का यही पहला ग्रन्थ है। इस बार शुक्लजी ने षट्रसों के ऊपर और भी विस्तृत विवेचन कर के ग्रन्थ का कलेवर ही बदल दिया है तथा यत्र तत्र सत्तर वर्षों के अपने स्वानुभूत अनेकानेक विषयों से सुसज्जित और परिवर्द्धित कर ग्रन्थ का नाम भी 'रसपरिज्ञान' की जगह 'रसादिपरिज्ञान' कर दिया है जिससे यह ग्रन्थ और भी व्यापक और प्रदीप्त हो उठा है। तृतीय संस्करण। मूल्य २-५०

'विविध विशेषताओं से युक्त ! द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण !! प्रकाशित हो गया !!!

माधवनिदानम्

(A Comprehensive Work of Ayurvedic Diagnosis)

'मधुकोष' संस्कृत तथा 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका, वैज्ञानिक विमर्श सहित

टीकाकारः—आयुर्वेदाचार्य श्री सुदर्शन शास्त्री ए० एम० एस०

सम्पादकः—आयुर्वेदाचार्य वैद्य श्री यदुनन्दन उपाध्याय बी.ए., ए.एम.एस.

प्रस्तुत संस्करण में माधवनिदान का मूल पाठ, विशद भावार्थ, संस्कृत 'मधुकोष' टीका के साथ हिन्दी में मधुकोष की हिन्दी व्याख्या तथा प्राचीन एवं अर्वाचीन रीति से वैज्ञानिक एवं तुलनात्मक विवेचन सहित विशद विमर्श, विभिन्न पाठान्तर, मूल में आये हुए श्लोकों का ग्रन्थादि निर्देश एवं परिशिष्ट में नवीन रोगों का विवरण श्लोक बद्ध भावार्थ युक्त दिया गया है। अपने ढंग का यह चिकित्सकों (डाक्टरों, वैद्यों), अध्यापकों एवं छात्रों के लिए परमोत्तम संस्करण है। आधुनिक युग के अनुसार प्राच्य और पाश्चात्य चिकित्सा पद्धतियों में एकरूपता स्थापित करने के प्रयास में यह संस्करण अद्भुत रूप से सहायक प्रमाणित हुआ है। प्रथम संस्करण अल्प समय में ही समाप्त हो गया। यही इसकी उपयोगिता का ज्वलन्त प्रमाण है। इस द्वितीय संस्करण में संपादक ने आवश्यक संशोधन, परिवर्द्धन करके इसे और उपयोगी बना दिया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ बड़े साईज के लगभग एक हजार पृष्ठों में समाप्त हुआ है। छपाई, कागज, टिकाऊ पक्की जिल्द आदि सभी बहुत सुन्दर है।

पूर्वार्द्ध ७–५० उत्तरार्द्ध ७–५० सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य १४–००

माधवनिदानम्

(A Comprehensive Work of Ayurvedic Diagnosis)

'मधुकोष' संस्कृत व्याख्या, मनोरमा हिन्दी अनुवाद सहित

'मधुकोश' व्याख्या सहित माधवनिदान का कोई भी संस्करण दीर्घ काल से प्राप्त न होने से जिज्ञासुजनों के हितार्थ यह संस्करण पाद-टिप्पणी से युक्त 'मधुकोष' व्याख्या एवं 'मनोरमा' नामक हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है। छपाई, कागज आदि बहुत सुन्दर है। मूल्य ६–००

नव्यरोगनिदानम् (माधवनिदान-परिशिष्टम्)

(Ayurvedic Diagnosis of Modern Diseases)

इस ग्रन्थ में माधवनिदानादि ग्रन्थों में उल्लिखित रोगों के अतिरिक्त आज तक के संपूर्ण नवीन रोगों के निदान–सम्प्राप्ति–पूर्वरूप–साध्यासाध्य लक्षण आदि विषयों का भली प्रकार वर्णन किया गया है। द्वितीयावृत्ति मूल्य ०–७५

सुसंस्कृत ! प्रामाणिक !! संस्करण !!!

भेलसंहिता

(An Ancient Text of Ayurvedic Medicine)

सम्पादक—पं० गिरिजादयालु शुक्ल एम. ए., ए. एम. एस.

प्रिन्सिपल, स्टेट आयुर्वेदिक कालेज, लखनऊ

आयुर्वेद के इस परम प्राचीन एवम् अप्राप्य ग्रन्थ के प्रस्तुत सुसंस्कृत संस्करण को देख कर पाठकों को निःसन्देह अपार हर्ष होगा। इस ग्रन्थ में जो त्रुटित अंश थे उन्हें यथाशक्ति (कोष्ठक के अंतर्गत) सुसंस्कृत करने का अथक श्रम किया गया है एवं योग्य सम्पादक ने प्रायः सभी संदिग्ध स्थलों पर टिप्पणी द्वारा विषय का स्पष्टीकरण भी कर दिया है। इस प्रकार आधुनिक दृष्टिकोण से समुचित सम्पादन द्वारा सर्वथा अभिनव रूप में यह संस्करण प्रकाशित किया गया है। आशा है पाठकों को इस दुर्लभ ग्रन्थ के सुचारु संपादन से अत्यधिक लाभ और प्रसन्नता होगी। छपाई, कागज, गेट अप आदि आधुनिकतम। मूल्य १०—००

चक्रदत्तः

(An Exhaustive Treatise on Preparation of Different Oral and External Medicines)

नवीन वैज्ञानिक भावार्थसन्दीपिनी भाषा-टीका तथा बहुमूल्य परिशिष्ट सहित

टीकाकारः—श्री जगदीश्वर प्रसाद त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य ए. एम. एस.

इस ग्रंथ का यह तृतीय संस्करण प्रस्तुत है। तत्त्वचन्द्रिका संस्कृत टीका के अन्तर्गत आयुर्वेदविषयक पूरे पाण्डित्य का सार प्रस्तुत टीका में पदे-पदे अनुस्यूत है। कहीं-कहीं टीकाकार की विशेष टिप्पणियाँ इसमें चार चाँद प्रतीत होती हैं। पाठकों की सुविधा के लिये इसके सुविस्तृत परिशिष्ट को दो भागों में विभाजित कर दिया गया है। प्रथम परिशिष्ट मे निदान (पंचलक्षण), एलोपैथिक पद्धति से विविध विशद परीक्षाएं (मल, मूत्र, शब्द, स्पर्श, रूप, नेत्र, मुख, जिह्वा नाड़ी आदि की), मृत्यु-सामान्य-लक्षण, वातादिप्रकोपक हेतु, काल, मान-परिभाषा, ओषधि-ग्रहणकाल, पञ्चकषाय-वर्णन आदि तथा द्वितीय परिशिष्ट मे क्रमशः प्रत्येक रोग का पथ्यापथ्यादि-निरूपण किया गया है।

प्रस्तुत संस्करण को आवश्यक परिवर्तन-परिवर्द्धन, भाषा-संस्कार आदि करके विशेष उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। सादी जिल्द १०—००
कपड़े की पक्की जिल्द १२—००

अष्टाङ्गसंग्रहः

(Preparation and Application of Ayurvedic Medicine)

'अर्थप्रकाशिका' हिन्दी टीका तथा विशेष वक्तव्य सहित ।

टीकाकार—आयुर्वेद बृहस्पति श्री गोवर्धन शर्मा जी छांगाणी ।
भूमिका लेखक—आयुर्वेद-बृहस्पति श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य

छांगाणी जी की विद्वत्ता आयुर्वेद जगत में प्रसिद्ध है । अतः उनकी टीका की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है । फिर भी मैं इतना अवश्य कहूंगा कि छांगाणी जी की इस कृति से अष्टांगसंग्रह के जिज्ञासुओं का ही नहीं प्रत्युत आयुर्वेद जगत का महान् उपकार हुआ है । टीका के साथ २ विशेष वक्तव्य में छांगाणी जी ने स्वानुभूत योगों का भी अधिकतर उल्लेख कर दिया है जो विद्यार्थी तथा चिकित्सकों के लिये अत्यन्त उपादेय है । सूत्रस्थान ८-००

शेष स्थान शीघ्र प्रकाशित होंगे ।

आयुर्वेदप्रकाशः

(Properties, Actions and Preparations of Ayurvedic Herbs and Chemicals)

'अर्थविद्योतिनी' 'अर्थप्रकाशिनी' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्या सहित
व्याख्याकारः **श्री गुलराजशर्मा आयुर्वेदाचार्य**

आयुर्वेद-साहित्य में श्रीमाधव उपाध्याय द्वारा विरचित इस ग्रन्थ का महत्त्व पाठकों से अविदित नहीं है । प्रस्तुत संस्करण में इसकी संस्कृत टीका में बहुत कुछ संशोधन-परिवर्द्धन किया गया है तथा हिन्दी टीका मे तो विशिष्ट रूप से परिवर्त्तन तथा परिवर्धन किया गया है । आयुर्वेद का रहस्य इस ग्रन्थ की सुबोध पंक्तियों में बिखरा पड़ा है । चिकित्सक, छात्र तथा आयुर्वेद-प्रेमियों के लिए यह अवश्य संग्रहणीय मननीय ग्रन्थ है । द्वितीय संस्करण मूल्य १२-५०

आयुर्वेद की कुछ प्राचीन पुस्तकें

(A Brief Study of Ayurvedic Literature)

प्रियव्रत शर्मा

तृतीय पञ्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत आयुर्वेदिक अनुसंधान में वाङ्मय-शोध का भी स्थान है । इसका श्रीगणेश एक नया-सा कार्य है, अतः आयुर्वेद के लिये ही मानो जीवन धारण करने वाले विज्ञ लेखक ने मार्गप्रदर्शन के हेतु नमूने के रूप में इस विवरणपुस्तिका में लगभग २५ आयुर्वेदिक ग्रन्थों के वाङ्मय-शोध का विवरण प्रस्तुत किया है । वाङ्मय-शोध-क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को इससे निश्चय ही दिशा-निर्देश प्राप्त होगा । मूल्य १-००

माधवनिदानम्

(A Comprehensive Work of Ayurvedic Diagnosis)

सर्वाङ्गसुन्दरी हिन्दी टीका सहित ।

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य लालचन्द्र शास्त्री । यों तो इस पुस्तक के अनेक संस्करण अनेक स्थान से छपे हैं किन्तु ग्रन्थ के आशय का यथार्थ ज्ञान करानेवाले विस्तृत हिंदी अनुवाद सहित इस संस्करण के समान दूसरा कोई भी संस्करण आज तक नहीं छपा । यह चतुर्थ संस्करण उत्तम ग्लेज चिकने कागज, नवीन चमकते टाइप में बहुत सुन्दर छपा है । सजिल्द संस्करण मूल्य ४-५०

भावप्रकाशः-ज्वराधिकारः

(Treatment of Fevers)

नवीन वैज्ञानिक 'विद्योतिनी'-हिन्दीटीका परिशिष्ट सहित

इसमें क्वाथादिकों के बनाने की विधि, मात्रा आदि का उल्लेख तथा स्थल २ पर आवश्यक टिप्पणियों का भी समावेश किया गया है । ग्रन्थोक्त ज्वर पर आधुनिक डाक्टरी मतानुसार निदान का सुन्दर रीति से विवेचन तथा प्रचलित अन्य ज्वरों का डाक्टरी मतानुसार विशद विवरण भी दिया गया है । छपाई, कागज, जिल्द आदि सभी सुन्दर हैं । तृतीय संस्करण मूल्य ५-००

काश्यपसंहिता

(An Ancient Treatise on the Treatment of Children's Diseases)

श्री सत्यपाल आयुर्वेदालङ्कार कृत 'विद्योतिनी' हिन्दीटीका,

राजगुरु हेमराजजीकृत संस्कृत-हिन्दी विस्तृत 'उपोद्घात' सहित ।

यह ग्रन्थ अपनी प्रामाणिकता में चरक तथा सुश्रुतसंहिता के समकक्ष है । आयुर्वेद शास्त्र के कौमारभृत्यतन्त्र के विषय में यही एक मात्र प्राचीन ग्रन्थ है । इस विशाल मूल ग्रन्थ का तथा राजगुरु हेमराजजी कृत विस्तृत संस्कृत उपोद्घात का भी सरल सुबोध हिन्दी भाषान्तर के साथ प्रकाशन किया गया है ।

आयुर्वेद शास्त्र के प्रेमी स्वाध्यायशील विद्वानों और विद्यार्थियों के लिए यह अनुवाद बहुत उपादेय बन पड़ा है । इस नवीन ग्रन्थ के प्रकाशन तथा अनुवाद से आयुर्वेद शास्त्र के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर अद्भुत प्रकाश पड़ता है । निश्चित ही बालरोगों की विशिष्ट जानकारी में इससे आवश्यक सहायता मिलेगी । केवल भाषा के ज्ञाता भी इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे । मूल्य १६-००

बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन यू० पी० की प्राणाचार्य परीक्षा
में आलोच्य व सहायक स्वीकृत—

भावप्रकाशः

(An Encyclopaedic Work on Every Aspect of Ayurveda)

(शोधपूर्ण चतुर्थ नवीन संस्करण)

नवीन वैज्ञानिक 'विद्योतिनी' हिन्दीटीका सहित।

इस संस्करण का उद्देश्य यह है कि केवल इसी एक ग्रन्थ का अध्ययन कर चिकित्सक को चिकित्सा विषयक सभी जानकारी पूर्ण रूप में हो जाय तथा प्राचीन सैद्धान्तिक ज्ञान भी पूर्णरूप से हो जाय। इसमें गर्भप्रकरण के ऊपर डाक्टरी तथा आयुर्वेदिक मतानुसार समन्वयात्मक परिशिष्ट तथा निघण्टुप्रकरण में सभी वनौषधियों का विस्तृत परिचय, नवीन वैज्ञानिकों द्वारा आविष्कृत गुण-धर्मों एवं प्रयोगों का विस्तृत वर्णन तथा उपलब्ध वनस्पतियों की असली-नकली की पहचान, सभी भाषाओं में उनके नाम आदि सभी ज्ञातव्य विषयों का विशद विवरण दिया गया है। चिकित्साप्रकरण में प्रत्येक रोग की डाक्टरी मतानुसार निदानादि के साथ चिकित्सा तथा आयुर्वेदिक और डाक्टरी मतों की समन्वयात्मक टिप्पणी भी दी गई है। इस तरह से इस एक ही ग्रन्थ के अवलोकन से आयुर्वेद के साथ साथ डाक्टरी मतों का भी पर्याप्त ज्ञान प्राप्त हो जायगा।

इस संस्करण की विशेषता

इस संस्करण में प्रायः सभी वनौषधि द्रव्यों का विस्तृत परिचय, नवीन अनुसन्धानों द्वारा रासायनिक विश्लेषण, गुण-धर्म, आमयिक प्रयोग, अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में प्रसिद्ध नाम, उत्पत्तिस्थान तथा उनकी आकृति आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। वनौषधियों का पूर्ण जीवनवृत्त, बीज से लेकर मूल, पत्र, काण्ड, पुष्प, फल, निर्यास आदि का स्पष्ट वर्णन वस्तु को प्रत्यक्ष-सा कर देता है, जिससे पाठक को किसी दूसरी पुस्तक की सहायता की अपेक्षा नहीं रह जाती। सभी सामान्य चिकित्सकों, अध्यापकों तथा जिज्ञासु छात्रों के लिए यह परिवर्द्धित संस्करण बहुत ही उपादेय है।

पूर्वार्द्ध १२—०० मध्यमोत्तर खण्ड १५—०० सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य २६—००

भावप्रकाशः

(An Encyclopaedic Work on Every Aspect of Ayurveda)

श्रीमद्भावमिश्रकृतः। ग्रन्थकर्ता रचित विषमस्थल

टिप्पणी सहित (मध्यमोत्तर खण्ड यन्त्रस्थ)   पूर्वार्द्ध ३—००

रसेन्द्रसारसंग्रहः (सचित्र)

(Theoretical and Applied Ayurvedic Chemistry)

नवीन वैज्ञानिक 'रसचन्द्रिका' भाषाटीका विमर्श परिशिष्ट सहित

संपादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गिरजादयालु शुक्ल एम. ए., ए. एम. एस.

यह रसचन्द्रिका टीका आज कल की सभी प्रकाशित हिन्दी टीकाओं से सुविस्तृत एवं सरल हुई है। सभी कठिन स्थलों पर टिप्पणियाँ दी गई हैं। मत-मतान्तरों का उल्लेख व सभी स्थलों पर आधुनिक काल के अनुसार उपयुक्त मात्रायें भी दी गई हैं। इस भांति विमर्श में प्रत्येक प्रयोगों की विशेषता का सुन्दर विवेचन भी किया गया है। परिशिष्ट में नवीन रोगों पर रसों का प्रयोग, मानपरिभाषा, मूषा तथा पुटप्रकरण, अनुपान विधि तथा औषध बनाने के नियम आदि भी देकर टीकाकार ने इस ग्रन्थ को एक सम्पूर्ण रसग्रन्थ ही बना दिया है। यन्त्रों के चित्र वर्णन सहित देकर स्पष्ट कर दिये गये हैं। पञ्चम संस्करण मूल्य ७-००

रसेन्द्रसारसंग्रहः (सचित्र)

(Theoretical and Applied Ayurvedic Chemistry)

नवीन वैज्ञानिक 'गूढार्थसन्दीपिका' संस्कृत व्याख्या सहित

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य डा० अम्बिकादत्तशास्त्री ए. एम. एस.

उक्त व्याख्या से यह ग्रन्थ आजकल के वैज्ञानिक ढङ्ग के अनुरूप हो गया है। रोगों एवं पथ्यापथ्य आदि का उल्लेख, ओषधियों के अनेक भाषाओं के नाम तथा अन्यान्य उपयोगी विषयों को देकर इस संस्करण को सर्वोत्तम रसचिकित्सोपयोगी बना दिया गया है।

मूल्य ५-००

रसेन्द्रसारसंग्रहः (सचित्र)

(Theoretical and Applied Ayurvedic Chemistry)

'बालबोधिनी'—'भागीरथी' टिप्पणी सहित। समयानुकूल मात्रायें तथा यन्त्रों के चित्र वर्णन सहित। गुटका संस्करण।

यन्त्रस्थ

रसायनखण्डम् [रसरत्नाकर का चतुर्थ खण्ड]

(Preparation of Some Important Ayurvedic Medicine)

यह रसायन खण्ड चिकित्सा के लिए बड़ा उपयुक्त है। इस खण्ड में रसायन तथा वाजीकरण इन दो तन्त्रों में बहुत से सुन्दर नूतन योगों का वर्णन किया गया है जिसको देखकर आप आश्चर्यचकित हो जायंगे। मूल्य ०-७५

+ वात्स्यायन के योग

(Some Effective Prescriptions According to Vatsyayana)

श्री केदारनाथ पाठक रासायनिक

वैवाहिक जीवन का उत्कृष्ट आनन्द प्राप्त करने के अभिलाषी स्त्री-पुरुषों के स्वास्थ्य-सौन्दर्यादि की वृद्धि के लिये इस पुस्तिका में कामसूत्रकार महर्षि वात्स्यायन के अनुभवसिद्ध क्वाथ-चूर्ण-घृत-तेल-लेप-पोटली-उबटन-मञ्जन आदि के अनेक गोपनीय नुस्खे दिए गए हैं। विलासी पुरुषों तथा स्त्रियों के लिये भी यह उत्तम पुस्तिका संग्रहणीय है। मूल्य ०-७५

+ केशरोग और उनकी चिकित्सा

(पञ्जाब सरकार द्वारा पुरस्कृत)

इस पुस्तक में केशों की रचना, अवयव, उनके खालित्य, पालित्य आदि सब प्रकार के रोग तथा आभ्यन्तरिक एवं बाह्य चिकित्सा के शतशोऽनुभूत सफल योगों का विशद विवेचन किया गया है। मूल्य ५-७०

राजकीय ओषधियोगसंग्रह

आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस. समाप्त

रसार्णवं नाम रसतन्त्रम्

(Practical Ayurvedic Chemotherapy)

भागीरथी बृहद् टिप्पणी एवं विशेष विवरण सहित

यह ग्रन्थ रसायन ग्रन्थों में अति प्राचीन एवं सभी रस ग्रन्थों का आधारभूत है। इस ग्रन्थ में रसप्रक्रिया के लिये आवश्यक ज्ञान पूरा भरा हुआ है। शुद्धाशुद्ध धातुओं के लक्षण निर्दोष दिये हुए हैं। कीमिया का वर्णन तो इस ग्रन्थ में अथाह है। पारद के बन्धन-प्रयोग भी विशेषतः हैं। इस ग्रन्थ में यन्त्र, मूषादिकों का भली प्रकार वर्णन किया गया है। पारद के संस्कार तथा अभ्रक के लक्षण इनका खूब विस्तृत वर्णन है। रस, उपरस, महारस, रत्न, धातु उपधातुओं के शोधन-मारण का भी अच्छा वर्णन किया गया है। सत्त्वपातन की प्रक्रिया सुन्दर और विशद है। इस ग्रन्थ में मानपरिभाषा भी दी गई है। ग्रन्थ सर्वाङ्गसुन्दर बनाने के लिये पं० नीलकण्ठ देशपाण्डेजीने शास्त्रीय एवं क्लिष्ट शब्दों की विस्तृत टिप्पणी भी कर दी है। हर एक वनस्पतियों का 'इन्टर नेशनल नाम' तथा व्यावहारिक हिन्दी नाम भी दिया है। ग्रन्थ सर्वाङ्गसुन्दर छपा है। मूल्य ३-००

रसरत्नसमुच्चयः

(Ayurvedic Chemistry and Chemotherapy)

(शोधपूर्ण तृतीय संस्करण)

नवीन वैज्ञानिक 'सुरत्नोज्ज्वला' हिन्दीटीका, परिशिष्ट सहित।

टीकाकार—कविराज डा० अम्बिकादत्तशास्त्री ए. एम. एस.

नवीन वैज्ञानिक 'सुरत्नोज्ज्वला' हिन्दी टीका तथा परिशिष्ट से विभूषित यह तीसरा संस्करण प्रस्तुत है। यह आयुर्वेद के दुर्लभ ग्रन्थों में से एक है। इस ग्रन्थ के अनुसार धातूपधातु, रसोपरस, रत्न, विष आदि के शोधन-मारण-जारणादि संस्कार कर उनका प्रयोग करने में चिकित्सा-क्षेत्र मे अद्भुत चमत्कार हो सकता है। प्राच्य-पाश्चात्योभय चिकित्सा सिद्धान्तों के मर्मज्ञ टीकाकार ने खनिजों की उत्पत्ति, स्वरूप, भेद, प्राप्ति आदि का विशद वर्णन तथा आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धानों से प्राचीन सिद्धान्तों का समन्वय करते हुए योग-निर्माण का व्याख्यान किया है। प्रत्येक रोग की चिकित्सा के अन्त में पथ्यापथ्य का सम्यग् विवेचन प्रस्तुत किया गया है। सन्दिग्ध स्थलों को उदाहरणादि से स्पष्ट किया गया है तथा 'विमर्श' नामक टिप्पणी मे स्वसिद्धानुभवों का सुरम्य सन्निवेश है। ग्रंथारंभ मे आयुर्वेदिक यन्त्रों का सचित्र परिचय प्रस्तुत किया गया है।

चिकित्सा क्षेत्र से तनिक-सा भी संबंध रखने वाले के लिये यह ग्रन्थ महोपकारक है। इस तीसरे संस्करण को आवश्यक परिवर्तन-परिवर्द्धन भाषा-संस्कारादि करके अधिक उपयोगी बना दिया गया है। मूल्य १०-००

रसरत्नसमुच्चयः

(Ayurvedic Chemistry and Chemotherapy)

सुन्दर टिप्पणी, नवीन २ अवतरणों तथा प्रत्येक श्लोकों की पृथक् २ पङ्क्तियों से युक्त यह द्वितीयावृत्ति गुटका रूप में बहुत सुन्दर प्रकाशित हुई है।

मूल्य सुलभ संस्करण ३-०० राजसंस्करण ३-७५

रसाध्यायः। संस्कृत टीका सहितः

(Compact Ayurvedic Chemistry)

यह रसशास्त्र का अति प्राचीन, छोटा किन्तु बड़ा उपयोगी अद्भुत ग्रन्थ २१ अधिकारों में पूर्ण हुआ है। इस ग्रन्थ में विषय तथा प्रक्रिया विभिन्न प्रकार से वर्णित है जो आज के किसी भी ग्रन्थ में देखने को नहीं मिलती। मूल्य १-००

शार्ङ्गधरसंहिता

(An Comprehensive Treatise on Ayurvedic Treatment)

वैज्ञानिक विमर्शोपेत 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका

'लक्ष्मी' नामक टिप्पणी तथा पथ्यापथ्यादि विविध परिशिष्ट सहित

(शोधपूर्ण चतुर्थ संस्करण)

इस संस्करण की विशेषताएँ—

प्रत्येक विवेच्य विषय के मूल पर निष्कर्षात्मक संक्षिप्त अवतरणिका, तदनन्तर मूल, फिर हिन्दी—इस व्यवस्था के साथ २ विस्तृत उपयोगी टिप्पणियाँ भी संस्कृत तथा हिन्दी में दी गई हैं। 'सुबोधिनी' टीका तथा 'लक्ष्मी' टिप्पणी में भाषा के प्रवाह और उसके सरलता, सुबोधता तथा स्पष्टता आदि गुणों को विशेष प्रयत्नों द्वारा सुरक्षित रखा गया है। विमर्श द्वारा ग्रन्थ के गूढ़ भावों को भी सरलतापूर्वक स्पष्ट किया गया है। अनुवाद के अन्तर्गत मुख्य शब्दों को बड़े टाइप में देकर उनकी मुख्यता स्पष्ट की गई है तथा मान आदि के सम्बन्ध में ऐसे मत का संग्रहण किया गया है कि प्रत्यक्ष क्रियाओं में कहीं कोई बाधा न हो। जहाँ कहीं कुछ विशेष विषय अवधेय हैं वहाँ उनका उल्लेख कर उन पर यथेष्ट उपयोगी प्रकाश डाला गया है। लगभग १०० पृष्ठों का तो सुविस्तृत परिशिष्ट ही है जिसमें ग्रन्थानुक्त रोगों के भी निदान-लक्षण-चिकित्सा, प्रत्येक रोगों का पथ्यापथ्य-निर्देश एवं प्रत्येक रोग पर अकारादिक्रम से एकत्र स्वरस-चूर्ण-आसव-घृत-तैल-रस-लेप आदि की लम्बी सूची भी दी गई है। आरम्भ में दिया हुआ विशद 'ग्रन्थालोचन' देखकर ही प्रस्तुत संस्करण की उपयोगिता समझ ली जा सकती है। चिकित्सा-क्षेत्र से सम्बद्ध व्यक्तिमात्र अथवा आयुर्वेद-प्रेमियों के लिये भी यह सर्वाङ्गपूर्ण उपादेय संस्करण अवश्य संग्रहणीय है। मूल्य ५-००

लोहसर्वस्वम्

(An Ayurvedic Handbook on Medicinal Usage of Metals)

'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित

आचार्य सुरेश्वर-विरचित इस दुर्लभ ग्रन्थ में साध्यासाध्य विभिन्न शारीरिक रोगों पर लौह के स्वतन्त्र तथा अन्य रस-भस्मों के योग से बननेवाले शतशोऽनुभूत योगों का वर्णन किया गया है। हिन्दी व्याख्या से युक्त होने के कारण अब यह केवल संस्कृतज्ञों की ही वस्तु नहीं अपितु सभी लोगों के लिए उपयोगी हो गया है। लौह जैसी सहज तथा सस्ती धातु के उपयोग से सभी रोगों का विनाश इस पुस्तक में वर्णित है। अवश्य संग्रह करने योग्य अपनी कोटि का सर्वप्रथम संस्करण है। मूल्य २-००

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

एलोपैथिक पाकेट प्रेस्क्राइबर

(Allopathic Pocket Prescriber—An Allopathic Guide)

डा० शिवनाथ खन्ना

इसमें एलोपैथिक के अनुभूत रोगों के वर्णन के अतिरिक्त एलोपैथिक की आधुनिक औषधियों से रोगों की किस प्रकार चिकित्सा करनी चाहिये इसका भी वर्णन किया गया है। स्त्री-रोग तथा बाल-रोगो में प्रयोग की जानेवाली औषधियों का अलग से वर्णन किया गया है। प्रत्येक प्रकार के उत्तम इन्जेक्शन, गोली, मिक्चर, पाउडर, एनिमा आदि के नुस्खे, तथा प्रतिशत (%) घोल बनाने की मात्रायें आदि का वर्णन भी किया गया है। एलोपैथिक के चिकित्सिकों को अपने रोगियों की चिकित्सा करने में इस पुस्तक से बड़ी सहायता मिलेगी। इस पुस्तक में रोज काम में आने वाले प्रायः २०० से अधिक नुस्खे और इतने ही रोगों की चिकित्सा का वर्णन है। मूल्य ५-१०

एलोपैथिक मिक्श्चर्स

(A Guide for Preparation of Allopathic Mixtures for Various Diseases)

प्रस्तुत पुस्तक में अनुभवी चिकित्सकों द्वारा विभिन्न रोगों पर अनुभूत तथा स्थान-स्थान पर आयुर्वेदज्ञों द्वारा प्रयुक्त सैकड़ों श्रेष्ठ मिश्रण दिये गये हैं। निदान एवं चिकित्सा की सुविधा के लिए प्रत्येक रोग के प्रारम्भ में सामान्य लक्षण एवं मिश्रणों को विशिष्ट क्रम से रखा गया है। रोग की किस अवस्था में किस मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए यह स्पष्ट शब्दों में लिखा गया है। आवश्यक स्थानों पर आधुनिकतम इंजेक्शन के प्रयोग, मात्रा, विधि आदि का स्पष्ट निर्देश है। रोगों की विशिष्ट-चिकित्सा का यथास्थान वर्णन है। जिन रोगों का प्रकोप जितना अधिक होता है उनकी चिकित्सा भी उतने ही विस्तार से लिखी गई है, जैसे—मलेरिया, टायफाइड, राजयक्ष्मा आदि। संक्षेप में चिकित्सा के सभी उपायों का वर्णन है। इस एक पुस्तक को सदैव साथ रखने से रोग की किसी भी अवस्था में उचित चिकित्सा निर्देश प्राप्त हो सकते हैं। मिश्रणों के निर्माण की विधि, स्थान, उपकरण आदि तथा कम्पाउण्डर के जानने योग्य सभी आवश्यक बातों का समावेश एक पृथक् अध्याय में कर दिया गया है। द्वितीय संस्करण मूल्य २-५०

तृतीय संस्करण ! प्रकाशित हो गया !! तृतीय संस्करण !!!

आ यु र्वे द प्र दी प

(आयुर्वेदिक-एलोपेथिक गाइड)

(A Practical Guide to Anatomy, Pharmacopaea, Diagnosis and Treatment on Ayurvedic and Allopathic Systems)

(संशोधित परिवर्धित परिष्कृत संस्करण)

लेखक—आयुर्वेदाचार्य राजकुमार द्विवेदी डी. आई. एम. एस.

संपादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गङ्गासहाय पाण्डेय ए. एम. एस.

पृष्ठ संख्या ९००, उत्तम कागज, चमकता टाईप, आकर्षक जिल्द । मूल्य १२—००

थोड़े समय में ही द्वितीय संस्करण भी समाप्त हो जाने के कारण जिज्ञासुओं के संतोष के लिए यह तृतीय संस्करण प्रकाशित किया गया है। द्वितीय संस्करण में जो अशुद्धियाँ रह गई थीं उनका संशोधन और जो कुछ उपयोगी विषय छूट गए थे, उनका वर्णन इस तृतीय संस्करण में किया गया है। यह पुस्तक अपने विषय में अद्वितीय है। अभी तक सामान्य चिकित्सकों के लिए उपयोगी चिकित्सा के निमित्त राष्ट्रभाषा में लिखी हुई ऐसी कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इसमें प्राच्य तथा पाश्चात्य विषयों का समन्वयात्मक वर्णन है और आयुर्वेद का इतिहास, उसका प्रसार तथा 'आयुर्वेद अन्य पद्धतियों का जनक है' यह उक्ति भी परिपुष्ट रूप से वर्णित है। इस पुस्तक से सर्वसाधारण लाभ उठा सकते हैं, यह इसकी विशेष महत्ता है। इसमें शरीर-रचना, शरीर-क्रिया-प्रणाली-विहीन ग्रन्थियों का विशद वर्णन, रक्त, रक्तपरिभ्रमण, मूत्र-परीक्षा, रोगी-परीक्षा, विटामिन, विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोग तथा उनसे बचने के उपाय, पथ्यनिर्माण-विधि, विभिन्न व्याधियों में प्रयुक्त होने वाले पथ्य, आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक पारिभाषिक शब्द तथा संयोगविरुद्ध द्रव्यों का उल्लेख, त्रिदोषविज्ञान, मल, दोष, धातु-विवरण, व्यवस्था-पत्र-लेखन-विधि, वैक्सीन, सीरम, पेनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमायोसीन, सल्फाश्रेणी की ओषधियाँ, ओषधिनिर्माण-विधि, ओषधि तथा व्याधियों की हिन्दी-अंग्रेजी नामावली, स्वास्थ्यविज्ञान, प्रसूतिचर्या, शिशुचर्या, रोगी-परिचर्या, शल्यकर्म-विधि, संज्ञाहरण-विधि, संज्ञाहारक ओषधियाँ, महामारी; जैसे हैजा, प्लेग का प्रतिबन्ध

तथा चिकित्सा, चूर्ण, क्वाथ, मलहम, लिनिमेण्ट, एक्का, घोल, मिक्श्चर, पिल्स, टेब्लेट, सीरप तथा वर्ति आदि का निर्माण, चिकित्सा प्रारम्भ करने के नियम, चिकित्सा-सम्बन्धी आवश्यक उपकरण, चिकित्सक के वैधानिक कर्तव्य तथा अधिकार, व्यवहारायुर्वेद, स्वास्थ्यविज्ञान तथा विषविज्ञान आदि का आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक पद्धतियों से वर्णन किया गया है। नाना प्रकार के स्नान, सेक, मूत्रनिर्हरण, वस्ति, विसंक्रमण करने की विधि एवं जीवाणुनाशक ओषधियों का वर्णन भी यथास्थान किया गया है। इनके अतिरिक्त नेत्ररोग, कर्णरोग, कण्ठरोग, चर्मरोग, स्त्रीरोग, वालरोग तथा शारीरिक व्याधियाँ; जैसे गर्भपात, पाण्डु, संग्रहणी, अतिसार, प्रवाहिका, मलेरिया, कालाजार, रोमान्तिका, मसूरिका, श्वसनक ज्वर, टाइफाइड, फिरंग, पूयमेह, अजीर्ण, रक्तपित्त, राजयक्ष्मा, श्वास, कास, मूर्च्छा, अपस्मार, योषापस्मार, उदावर्त, शूल, गुल्म, वृक्करोग, मूत्राघात, अश्मरी, प्रमेह, शोथ, वृद्धि, श्लीपद, उन्माद तथा चर्मरोग प्रभृति नाना व्याधियों की उभय पद्धति के अनुसार योग, सूची तथा पेटेण्ट ओषधियों द्वारा विस्तार से चिकित्सा लिखी गई है। ये ओषधियाँ अनुभूत हैं जो विभिन्न चिकित्सकों के अनुभव से लाभप्रद सिद्ध हो चुकी हैं। इस संशोधित, परिवर्द्धित संस्करण को सभी प्रकार से परमोपयोगी बनाया गया है। इसकी महत्ता का जितना ही वर्णन किया जाय थोड़ा है।

तृतीय संस्करण की विशेषता—

काल परिवर्तन के साथ ही कुछ ऐसे नवीन योग आविष्कृत हो गये हैं जो अपने प्रयोग स्थल में पुराने योगों से कहीं अधिक लाभकर सिद्ध हुये हैं। अतः प्रस्तुत संस्करण में उन प्राचीन योगों को हटाकर उनके स्थान पर वहुप्रचलित नवीन योगों को स्थान दिया गया है।

कुछ अतिरिक्त आधुनिक औषधियों का वर्णन भी जोड़ा गया है, जो पिछले संस्करण में नहीं था। वे औषधियाँ हैं—पालिमिक्सिन (Poly myxin), कार्टिजोन एसिटेट (Cortisone acetata) तथा ए० सी० टी० एच० (A. C. T. H.) आदि।

शास्त्रीय विवेचन एवं व्यावहारिक चिकित्सा-विषयक सर्वोत्तम ग्रन्थ-

काय-चिकित्सा

(Medical Treatment)

डा० गंगासहाय पाण्डेय, ए. एम. एस.

डिमाई ८ पेजी पृष्ठसंख्या ९९२ सुन्दर गेटअप पक्की जिल्द मूल्य २५-००

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने प्राचीन चिकित्सा के सिद्धान्तों का पूर्ण विवेचन करने के साथ व्यवहारोपयोगी सभी अनुभवसिद्ध सामग्री संगृहीत की है। प्रारंभ में आयुर्वेदीय रोगीपरीक्षा के प्रकीर्ण सूत्रों को शृङ्खलित कर दोष एवं औषध के निरूपण की सूक्ष्म से सूक्ष्मतम विचारणा, प्रकृति-विकृति विज्ञान, नाड़ी, मूत्र, मल, जिह्वा आदि की विशिष्ट परीक्षण पद्धति, परिप्रश्न, प्रत्यक्ष, अनुमान के द्वारा षडङ्ग परीक्षण, दोषों की विशिष्ट अवस्थायें और चिकित्सोपयोगी अंशांश विकल्पना आदि परमोपयोगी विषयों का वर्णन किया गया है। आयुर्वेद के दुरूह सिद्धान्तों को बहुत ही स्पष्ट शैली में अभिव्यक्त किया गया है। प्राच्य विषयों के अतिरिक्त नवीन पद्धति से रोगी-परीक्षा क्रम को भी पर्याप्त विस्तार से वर्णित किया गया है। रोग एवं उनके उपद्रव, अरिष्ट तथा साध्यासाध्यता के सामान्य सर्वमान्य सूत्र विस्तारपूर्वक वर्णित हैं। इस प्रकार रोग विनिश्चय तथा चिकित्सोपयोगी व्यापक वर्णन के उपरान्त चिकित्सा के उपक्रम तथा उनकी प्रयोग विधि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। लंघन, पाचन, स्वेदन, स्नेहन, शिरोविरेचन, अनुलोमन, वस्तिप्रयोग, शीतोपचार, परिचर्या, पथ्यनिर्माणविधि, संसर्जनक्रम तथा दोषावसेचन आदि सभी व्याधियों में उपयोगी उपक्रमों का सोदाहरण विस्तृत विवेचन किया गया है। बालरोग तथा स्त्रीरोग-परीक्षणक्रम का स्वतन्त्र रूप में निर्देश किया गया है। दैनिक मिलने वाले अनिद्रा, प्रलाप, आध्मान, कास, शिरःशूल, वमन आदि विशिष्ट लक्षणों की रामबाण लाक्षणिक चिकित्सा का विस्तारपूर्वक प्रारंभ में वर्णन किया है। आजकल शुल्वौषधियों (Sulpha Drugs) तथा प्रतिजीवक द्रव्यों (Arhvictics) का बहुत प्रयोग होता है। अतः बहुत विस्तार से इनका गुण-प्रयोग, विशेष निर्देश, पृथक् पृथक् रोगों में प्रयुक्त मात्रा आदि सभी आवश्यक विषयों का वर्णन है। प्राच्य-पाश्चात्य मतों के आधारपर प्रत्येक रोग का पूर्ण परिचय, निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, सम्प्राप्ति, उपद्रव अरिष्ट आदि का संक्षेप में वर्णन है। चिकित्सा का वर्णन बहुत विस्तार से किया गया है। रोग की

किस अवस्था में कौन सी ओषधि किस अनुपान से देनी चाहिये, पथ्यापथ्य आदि की क्या व्यवस्था होनी चाहिये, और उपद्रव होने पर अथवा आत्ययिक स्थिति की पूर्ण व्यवस्था आदि विषयों का विशद विवेचन कर केवल अनुभवसिद्ध चिकित्सा-विधि लिखी गई है। व्याधि की तीव्रावस्था तथा जीर्णावस्था की चिकित्सा का पृथक् वर्णन किया गया है। प्रत्येक रोग के उग्र लक्षणों की शामक चिकित्सा तथा संभाव्य उपद्रवों की पूर्ण व्यवस्था का विस्तारपूर्वक पृथक् वर्णन किया गया है। रोग प्रतिकार (Prophylaxis) एवं बलाधान सम्बन्धी व्यवस्था तथा अन्य सभी कठिनाइयों का, जो चिकित्सा प्रारम्भ करने पर सामने आती हैं; समाधान इस में किया गया है। प्राचीन ग्रन्थों में अनेक गम्भीर व्याधियों की व्यवस्था बहुत सूक्ष्मरूप में बताई गई है, उन सब का—मन्थरज्वर, पक्षाघात, रक्तचाप, मूर्च्छा, हृद्रोग, आदि अधिक मिलनेवाली व्याधियों का—चिकित्साक्रम बहुत विस्तार से लिखा गया है।

चरक तथा काश्यपसंहिता का निर्माण-काल

(A Historical Study of Two Ancient Ayurvedic Works)

वैद्य श्री रघुवीरशरण शर्मा

प्रस्तुत पुस्तक में अग्निवेश, जतूकर्ण, पराशर, पुनर्वसु आत्रेय, निमिविदेह, गान्धार नग्नजित्, कृष्णद्वैपायन व्यास आदि के जीवन-काल के निर्णय के द्वारा चरकसंहिता तथा काश्यपसंहिता के निर्माण काल पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है। ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका में एक प्रकार से आयुर्वेद का व्यवस्थित इतिहास ही उपस्थित कर दिया गया है। ऋषियों के नामों के विषय में प्रचलित सारा मतभेद इस एक ही पुस्तक के पढ़ने से लुप्त हो जायगा। पुरातत्त्ववेत्ताओं एवं तद्विषयक शोधकर्ताओं तथा आयुर्वेद के इतिहास को इस पुस्तक से प्रचुर सामग्री प्राप्त होगी। पुस्तक अपने विषय की अनूठी है। इसे देखने पर ही लेखक के श्रम का अनुमान किया जा सकता है। मूल्य २—००

रतिमञ्जरी

(An Ancient Work on Erotics)

(हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद सहित)

अनुवादक—श्री रमाकान्त द्विवेदी

इस पुस्तक में कामशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार स्त्री-पुरुषों के भेद, उनके योगायोग, काम का निवास तथा रतिकर्म-सम्पादन की अनेक सहेतुक शास्त्रीय विधियों और आसनों का वर्णन किया गया है। मूल्य ०—४०

काय-चिकित्सा (भाग १)

(Principles of Ayurvedic Medicine and Their Applied Aspects)

आचार्य रामरक्ष पाठक

प्रस्तुत ग्रन्थ की विषय-वस्तु ३६ अध्यायों तथा ४ परिशिष्टों में विभक्त है। अष्टांग आयुर्वेद के आधार पर काय-चिकित्सा का सांगोपांग विवेचन, चिकित्सा-संवन्धी सिद्धान्तों का प्रतिपादन, चिकित्सा का क्रियात्मक एवं कर्मोपयोगी स्वरूप, ज्वरों का वर्णन और क्रमशः आभ्यन्तरात्मक मार्गाश्रित, वहिर्मार्गाश्रित, मर्म-सन्ध्याश्रित व्याधियों का विशद, सैद्धान्तिक तथा प्रामाणिक वर्णन किया गया है। विस्तृत परिशिष्ट भी चार भागों में विभक्त हैं जिसमें स्रोतोविवेचन, पञ्चकर्म, त्रिदोषपरिशिष्ट और रोगी तथा रोगपरीक्षा जैसे उपयोगी विषयों का विशद विवेचन किया गया है। आयुर्वेद का कोई भी अंग अव्याख्यात नहीं रह पाया है। अध्ययन करने योग्य पूर्ण सामग्री इस एक ही ग्रंथ में एकत्र संगृहीत है।

मूल्य प्रथम भाग १२-५०

काय-चिकित्सा (भाग २)

(Treatment of Various Types of Fever)

आचार्य रामरक्ष पाठक

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम भाग में जिन चिकित्सा-संवन्धी सिद्धान्तों का क्रियात्मक संकेत किया गया है उन्हीं का विस्तृत रूप से 'ज्वर' को आधार बनाकर वर्णन इस भाग में किया गया है। अर्थात् चिकित्सा के सैद्धान्तिक वर्णनों का ज्वरपरक क्रियात्मक वर्णन ज्वर-चिकित्सा नामक प्रस्तुत द्वितीय भाग के पाँच अध्यायों में हुआ है। अन्त में परिशिष्ट भी दिया गया है। ज्वर का ऐतिहासिक संकेत, परिभाषा, सामान्य स्वरूप और प्रतिकार, निज ज्वरों एवं सन्निपात ज्वरो के भेद, आधुनिक संज्ञावाले ज्वरों का विवेचन एवं प्रतिकार, सम-विषम-ज्वरों की परिभाषा, भेद-वर्णन, पिडिकामय, प्राचीन पुस्तकों में उपलब्ध आदि सर्वविध ज्वरों का विवेचन पाँचों अध्यायों की विषय-वस्तु है। परिशिष्ट में ज्वरों के प्रतीकारार्थ प्रोक्त योगों तथा सिद्धौषधों का सविस्तर व्यावहारिक वर्णन किया गया है।

मूल्य द्वितीय भाग १२-५०
तृतीय भाग यन्त्रस्थ

क्लिनिकल पैथौलोजी

(सचित्र–बृहत् मल-मूत्र-कफ-रक्तादि परीक्षा)

[CLINICAL PATHOLOGY]

(Including Laboratory Technique, Parasitology & Bacteriology.)

डा० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस., डी. पी. एच., आयुर्वेदरत्न

रोगी परीक्षा, रोग परिचय, रोग निवारण, सचित्र इञ्जेक्शन आदि पुस्तकों के लेखक।

उपर्युक्त पुस्तक विद्यार्थियों तथा चिकित्सकों के लिए लिखी गई है। इस पुस्तक की सहायता से लैबोरेटरी (प्रयोगशाला) तथा माइक्रोस्कोप की सहायता से रोग के निदान में सहायता मिल सकती है। प्रत्येक परीक्षा-विधि का वर्णन विस्तारपूर्वक तथा अत्यन्त सरल व प्रचलित हिन्दी भाषा में किया गया है। पुस्तक को ३ खण्डों में विभाजित किया गया है—

(१) प्रथम खण्ड में—विशिष्ट परीक्षाओं का वर्णन है। माइक्रोस्कोप (Microscope) के प्रयोग करने की विधि, मल, मूत्र, रक्त, कफ, शुक्र (Semen), ब्रह्मवारि (Cerebro-spinal fluid), स्मीयर (Smear), पीप (Pus), मुख, नेत्रमल, आदि की परीक्षा का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इसके अतिरिक्त गनोरिया (Gonorrhoea), कुष्ठ (Leprosy), कालाजार आदि के निदान की विधियों का वर्णन है। मज्जा (Bone Marrow), लसग्रन्थि (Lymph gland) की परीक्षा का वर्णन है। साथ-साथ इन परीक्षाओं की रिपोर्ट किस प्रकार लिखी जाती है, यह भी दिया गया है। इन परीक्षाओं में प्रयोग किये जानेवाले घोल (Reagent) बनाने की विधि का भी वर्णन है। रक्त-परीक्षा में माइक्रोस्कोप की परीक्षा के अतिरिक्त रक्त में शर्करा आदि की परीक्षा (Chemical examination) का भी वर्णन है।

(२) द्वितीय खण्ड में भिन्न-भिन्न कृमियों (Worms) का वर्णन (Parasitology) है।

(३) तृतीय खण्ड में जीवाणुओं (Bacteria) का वर्णन (Bacteriology) है।

६ सौ पृष्ठों में ७९ चित्रों से युक्त संपूर्ण पुस्तक का मूल्य १२–००

सचित्र-इन्जेक्शन

(Illustrated Injection Therapy)

(संशोधित परिवर्धित द्वितीय संस्करण)

डॉ० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस., पी. एच. डी.

सूचीवेध क्रिया, भेदोपभेद, उनके द्वारा प्रयुक्त होनेवाली विभिन्न औषधियों के नाम, गुण-धर्म आदि, विटामिनों का परिचय, उनके अभाव से होनेवाले रोगों में सूचीवेध, रोगों की किस स्थिति में किस प्रकार के सूचीवेध का कैसे प्रयोग किया जाय, किन-किन स्थितियों में किस प्रकार की सावधानी बरती जाय, सूचीवेध से होने वाले दुष्परिणाम और उनसे सतर्क रहने तथा उन्हें सँभालने में विशेष ध्यान देने योग्य बातें आदि सूचीवेध से संबन्धित सभी ज्ञातव्य विषयों का उपयुक्त चित्रों की सहायता से इस पुस्तक में विशद विवेचन किया गया है। विषय-विभाग के अनुसार प्रस्तुत पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है।

प्रथम खण्ड में इन्जेक्शन देने की सब विधियों का चित्रों सहित वर्णन किया गया है। साधारण इन्जेक्शन के अतिरिक्त एनिमा (Enema) लगाना, प्लूरा (Plura) से पीप निकालना, आदि चिकित्सक के प्रतिदिन की आवश्यक क्रियाओं का विस्तारपूर्वक चित्रों सहित वर्णन किया गया है।

द्वितीय खण्ड में इन्जेक्शन देने की औषधियों का तथा शास्त्रीय औषधियों के अतिरिक्त पेटेण्ट (Patent) औषधियों का भी वर्णन किया गया है। प्रत्येक औषधि की प्रकृति, प्रयोग, योग, विषाक्तता, विषाक्तता की चिकित्सा, मात्रा आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

तृतीय खण्ड में प्रायः १०० प्रमुख रोगों की चिकित्सा का आधुनिक विधि (Allopathy) से संक्षेप में वर्णन किया गया है।

प्रत्येक छात्र तथा सामान्य चिकित्सक (General Practitioner) के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी एवं अवश्य संग्रहणीय है।

आजकल किसी भी छोटी से छोटी या बड़ी से बड़ी व्याधि पर सूचीवेध का ही प्रयोग होने लगा है! किन्तु इसमें जितनी सावधानी, विज्ञता और कुशलता की अपेक्षा है वह सभी चिकित्सकों में नहीं पाई जाती। ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय का सांगोपांग विवेचन प्रस्तुत पुस्तक का विषय है।

द्वितीय संस्करण की विशेषता

प्रस्तुत संस्करण में अनेक प्रकार का परिवर्तन-परिवर्द्धन करते हुए प्रत्येक योग एवं अध्याय का पुनः पर्यालोचन किया गया है। जिन औषधों का आयात बन्द हो गया है उनके स्थान पर प्रयुक्त होनेवाले तत्सम योग तथा कुछ नवीन आविष्कृत योगों का भी सुनियोजित ढंग से समावेश किया गया है। लक्षणों की चिकित्सा तथा रोगों की चिकित्सा प्रकरण में कुछ आधुनिक चिकित्सा के योग तथा अनुभवसिद्ध मिश्रणों के योग बढ़ाए गए हैं। इस प्रकार नवीनतम उपयुक्त औषधों के संयोजन आदि से इस संस्करण को पूर्वापेक्षया अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। आशा है पाठकों को इस संस्करण से पूर्व की अपेक्षा अधिक लाभ होगा। परिवर्द्धित नवीन द्वितीय संस्करण— मूल्य अत्यल्प ११-००

सचित्र एलोपैथिक चिकित्सा-विज्ञान

डा० अवधविहारी अग्निहोत्री

सरल एवं सुबोध हिन्दी भाषा में लिखी गयी यह अपने ढंग की अनुपम पुस्तक है। पुस्तक में शरीररचना एवं क्रिया का प्रारम्भिक परिचय, रोग एवं रोगी परीक्षा सम्बन्धी आवश्यक बातें, सफल एवं चमत्कारिक औषधियों यथा— सल्फा, पेनिसिलीन, टेट्रासाइक्लिन, आरियोमाइसिन, अक्रोमाइसिन, टेरामाइसिन, निओमाइसिन, कार्टिजोन, सल्फोन्स आदि का वर्णन, सभी विटामिनों का परिचय एवं विभिन्न कम्पनियों के विटामिन के योग, महत्वपूर्ण एलोपैथिक औषधियों का वर्णन, यथा—अनूर्जतानिरोधी औषधियों, पीडाहर-निद्राकर, रक्त की मात्रा प्राकृत करने की औषधियों, सीरम तथा वैक्सीन, संक्रामक रोगों का वर्णन एवं चिकित्सा, चिकित्सा सम्बन्धी सामान्य शल्यकर्म तथा क्रियायें, लाक्षणिक चिकित्सा, हृदय के रोग, सन्धियों के रोग आदि व उनकी चिकित्सा का वर्णन निहित है। योगों के संकलन में इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि रोग की किस अवस्था में कौन सा योग प्रयुक्त करने पर अधिक गुणकारी होता है जिससे चिकित्सक को यश का लाभ हो।

मेडिकल कालेज के विद्यार्थियों तथा सामान्य चिकित्सयों के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी एवं अवश्य संग्रहणीय है। यन्त्रस्थ

नव्य-चिकित्सा-विज्ञान (भाग १)

(Treatment of Infectious Diseases)

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

इस पुस्तक का मुख्य विषय आधुनिक नव्य मतानुसार रोगों की चिकित्सा है। नई-नई वैज्ञानिक खोजों ने चिकित्सा के क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। रोगोत्पत्ति के संबन्ध में कुछ ही वर्ष पूर्व के मतों में उलट-फेर हो गया है इन उलट-फेरों के पश्चात् सर्वमान्य चिकित्सा-पद्धति का विवेचन करते हुए रोग के रूप, उसके लक्षण-चिह्न आदि तथा उन विशेष परीक्षाओं का जो रोग-निदान के लिये आवश्यक हैं संक्षिप्त वर्णन किया गया है। कोई भी आवश्यक बात छोड़ी नहीं गई है। तदनन्तर चिकित्सा का अनुभवपूर्ण वर्णन किया गया है। विशिष्ट प्रमाणित औषधों का सेवनविधि के साथ उल्लेख है।

अनेक महाव्याधियों के जनक संक्रामक रोगों के बीज ही होते हैं अतः प्रस्तुत प्रथम भाग में संक्रामक रोगों का ही सविशेष वर्णन किया गया है।

चिकित्सक तथा अध्यापक के साथ रोगियों के लिये भी पुस्तक उपादेय है।

मूल्य प्रथम भाग ८-००

नव्य-चिकित्सा-विज्ञान (भाग २)

(Diseases of the Digestive System)

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

इस भाग में पाचक तन्त्र के सभी रोगों में से प्रत्येक के हेतु, लक्षण, चिह्न, आवश्यक परीक्षाएं और नव्य-चिकित्सा-विधि का सुस्पष्ट अनुभवपूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया गया है। चिकित्सकों के लिये यह ग्रन्थ बड़े महत्व का है। नवीनतम आविष्कृत रोग-विनिश्चय तथा चिकित्सा की विधियों का ज्ञान कराना ही पुस्तक का लक्ष्य है।

मूल्य द्वितीय भाग ८-००

स्टेथिस्कोप तथा नाड़ीपरीक्षा (सचित्र)

(Stethoscope and Pulse Reading)

इस पुस्तक में स्टेथिस्कोप की बनावट, प्रकार, परीक्षा, श्वास-प्रश्वास की ध्वनियों का वर्णन, फुफ्फुस, रक्तसंवहन, हृदय का कार्य, कपाटों की विकृति आदि तथा नाड़ीपरीक्षा सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का वर्णन बड़े ही मनोयोग से किया गया है। काशी हिन्दूविश्वविद्यालय के अध्यापक एवं चिकित्सकों के सहयोग से निर्मित यह पुस्तक बेजोड़ है। द्वितीय संस्करण

मूल्य ०-७५

वीसवीं शताब्दी की औषधियाँ

(Drugs of Twentieth Century)

डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा

वीसवीं शताब्दी ने चिकित्सा प्रणाली में युगान्तर उत्पन्न कर दिया है। जितनी नवीन औषधियों का आविष्कार गत २५ वर्षों में हुआ है उतना पिछले कई सौ वर्षों में भी नहीं हुआ।

पहिले दो-चार ही ऐसी औषधियाँ थीं जिनको विशिष्ट कहा जा सकता था, किन्तु आज कितने ही रोगों की निश्चित औषधियों का आविष्कार हो गया है जिनके प्रभाव से अत्यन्त दारुण दुर्दम्य रोग भी सुदम्य हो गये हैं। आज राजयक्ष्मा जैसे भयंकर रोग से भी, जिसको रोगों की सेना का कमांडर कहा जाता था, छुटकारा पा लेना सहज है। हाँ, औषधि को समय से रोगी के शरीर में पहुँचाना आवश्यक है। समय से न पहुँचने पर तो अमृत भी लाभ नहीं कर सकता। इन नवीन औषधियों के समयोचित उपयोग से चिकित्सक अपने ब्रह्मास्त्रों द्वारा जीवन की रक्षा करने में कभी असफल नहीं होगा।

सरल और रोचक शैली में प्रायः सभी मुख्य-मुख्य नवीन औषधियों का इसमें वर्णन किया है जिनका प्रयोग अभीष्ट फलदायक होता है। प्रत्येक औषधि की उत्पत्ति, उसके रासायनिक रूप, लाभ, हानि तथा उपयोग पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है तथा हानि होने पर क्या करना चाहिये इसका भी पूर्ण उल्लेख है। डा० वर्मा जी की इस कृति ने चिकित्सकों का बहुत बड़ा उपकार किया है। ८-००

+स्वास्थ्य और रोग (सचित्र)

(Health and Disease in Hindi—Illustrated)

डॉ० त्रिलोकीनाथ वर्मा

इस पुस्तक में अत्यन्त सरल एवं स्पष्ट भाषा में लगभग ४०० चित्रों की सहायता से स्वास्थ्य को उत्तम बनाने की विधियाँ और भाँति-भाँति के भयानक रोगों से बचने के मुख्य उपाय बतलाए गये हैं। सामाजिक और वैयक्तिक आहार-विहार आदि के विवेचन द्वारा भी सुधारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के अन्त में सब कठिन और पारिभाषिक शब्दों का अँग्रेजी में तुल्यार्थ कोष दिया गया है। यह एक ही पुस्तक मानवजीवन को पूर्ण सुरक्षित तथा स्वस्थ रखने में पूरा सहायता करती है। मूल्य १५-००

सचित्र—

स्वास्थ्यविज्ञान और सार्वजनिक आरोग्य

(A General Guide for Health and Hygiene)

(सुपरिष्कृत परिवर्धित चतुर्थ संस्करण)

डा० भास्करगोविन्द घाणेकर

मानव-मात्र के परमोपकार की दृष्टि ने प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक के बहुसंख्यक तीन संस्करण देखते-देखते समाप्त हो गए, अतः निम्नाङ्कित विशेषताओं से विभूषित यह लोकोपकारक चतुर्थ संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है। इस संस्करण में सूक्ष्म दृष्टि से संशोधन करते हुए अनेक विषयों का परिवर्द्धन और रूपान्तरण किया गया है तथा मनःस्वास्थ्य और मनोविकार-प्रतिबन्धन जैसे महत्त्वपूर्ण नये विषय समाविष्ट किए गए हैं। विषय को सुस्पष्ट करने के लिये आयुर्वेद और प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों के उद्धरण और तुलनात्मक टिप्पणियाँ अधिक संख्या में विस्तार-पूर्वक दी गई हैं। स्थान-स्थान पर विषय से संबंधित अनेक आवश्यक चित्र भी दिए गए हैं। परिभाषा-सम्बन्धी कठिनाई दूर करने की दृष्टि से अंग्रेजी-हिन्दी कोष का रूप बदलकर हिन्दी-अंग्रेजी-शब्दकोष दे दिया गया है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि स्वास्थ्य-रक्षा और व्याधि-निवारण जैसे जटिल विषय को मानव-मात्र के लिए सुलभ बनाने की दृष्टि से प्राचीन एवं अर्वाचीन सिद्धान्तों का समन्वय करते हुए सर्वबोध स्वास्थ्य-तत्त्व-परिज्ञान पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का सुव्यवस्थित प्रयास किया गया है। इस प्रकार छात्रों और चिकित्सकों के लिए ही नहीं, मानव-मात्र के हित-सम्पादन के लिये इस पुस्तक में यथेष्ट उपादेय सामग्री भरी मिलेगी। नवीन ग्राहक तो सोत्साह इस संग्राह्य पुस्तक को अपनावें ही, प्राचीन ग्राहकों को भी इस विशिष्ट संस्करण से पूर्व की अपेक्षा अधिक लाभान्वित होना चाहिए।

नवीन चमकता टाइप, सफेद ग्लेज कागज, आधुनिक आकर्षक मनोरम जिल्द विभूषित पुस्तक का लागत मात्र मूल्य ७—५०

इण्डियन मेडिसिन बोर्ड यू० पी० द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

अभिनव-शरीरक्रियाविज्ञान (सचित्र)

(A Hand Book of Physiology)

शोधपूर्ण परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण मूल्य १०-००

आचार्य श्री प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस.

भारतवर्ष के प्रायः सभी आयुर्वेद महाविद्यालयों में नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार लगभग २५ वर्षों से अर्वाचीन शरीरक्रियाविज्ञान का पठन-पाठन चलता आ रहा है और इधर मेडिकल कालेजों में हिन्दी माध्यम का प्रवेश हो चुका है किन्तु अभी तक इस विषय की कोई ऐसी पुस्तक हिन्दी में नहीं थी जिसमें आधुनिक शरीरक्रियाविज्ञान के संपूर्ण विषयों का वैज्ञानिक शैली से संकलन किया गया हो। कुछ पुस्तकें तो इस विषय से अनभिज्ञ जनों को मनोरञ्जन के व्याज से प्रारम्भिक ज्ञान देने के उद्देश्य से बनाई गई थीं और कुछ नव-प्रकाशित ग्रन्थों में प्राचीन और नवीन दोनों विषयों को एक ही साथ भर देने के प्रलोभन में शैली ऐसी क्लिष्ट और विषय ऐसा दुरूह बना दिया गया कि साधारण विद्यार्थी-समाज तथा जिज्ञासुवर्ग उससे लाभ नहीं उठा सके। पठन-पाठन के क्रम में इन्हीं व्यावहारिक कठिनाइयों का अनुभव करके अधिकारी लेखक ने इस महत्वपूर्ण विषय पर लेखनी उठाई और कहने की आवश्यकता नहीं कि उनकी यह रचना छात्रों और चिकित्सकों के लिए नितान्त सन्तोषजनक सिद्ध हुई है। वैज्ञानिक पुस्तकों की तरह विषय-ज्ञान को अधिक स्पष्ट करने के लिए सैकड़ों चित्र स्थान २ पर दिए गए हैं। इस विषय के जिज्ञासु इस संशोधित परिवर्द्धित संस्करण से विशेष लाभान्वित होंगे। छपाई, कागज, गेटअप आदि सभी सुन्दर है।

प्रसूतिविज्ञान (सचित्र)

(A Text Book of Midwifery)

आयुर्वेद बृहस्पति डॉ० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस०

परिष्कृत द्वितीय संस्करण मूल्य १०-००

Obstetric पर लिखी हुई प्रसूतिविज्ञान नामक यह पुस्तक विद्वान् लेखक के अनेक वर्षों के परिश्रम के पश्चात् भारतवर्ष के विभिन्न आयुर्वेद संस्थानों के प्रसूतिविषय के 'प्रास्पेक्टस' और 'सिलेबस' के आधार पर लिखी गई है। आजतक इस प्रकार की सर्वाङ्गपूर्ण प्रसूतितन्त्र की कोई भी अन्य पुस्तक राष्ट्र भाषा में उपलब्ध नहीं थी जिसमें एक स्थान पर विभिन्न अध्यायों के क्रम से अद्यावधि प्राच्य एवं पाश्चात्य मतों का समन्वयात्मक संग्रह हो। आर्थिक दृष्टि से भी देखा जाय तो एक मात्र इस पुस्तक को रखते हुए अंग्रेजी भाषा में लिखी अनेक मूल्यवान् पुस्तकों के संग्रह की आवश्यकता नहीं पडेगी; क्योंकि यह पुस्तक बहुत से प्रचलित अंग्रेजी टेक्स्ट बुक के आधार पर ही लिखी गई है। इन विभिन्न पुस्तकों से सहायता लेते हुए जिन पुस्तकों में जिन-जिन अध्यायों का वर्णन अधिक प्राजल एवं विशद प्रतीत हुआ है उसी को लेखक ने ग्रहण किया है जिससे यह रचना विद्यार्थियों के विषय-ज्ञान तथा परीक्षार्थियों की सफलता की कुञ्जी बन गई है। पुस्तक की सब से बड़ी विशेषता विषय की तुलनात्मक विवेचना है। छात्रों के इस प्रकार के विवेक के लिये आयुर्वेद के विभिन्न ग्रन्थरत्नों के आधार पर स्थान-स्थान से प्रसूति विषयक सूत्रों का संग्रह करते हुए नोट बनाकर काम चलाना पड़ता था। इस नये प्रकाशन से उनकी सारी परेशानियाँ अब दूर हो गई हैं, उनको प्रत्येक अध्याय के अन्त में आधुनिक वर्णनों के साथ ही साथ हिन्दी अनुवाद के सहित उन सभी सूत्रों का संकलन प्राप्त हो जायगा। इससे उन्हें विषय के अभ्यास में भी सरलता का अनुभव होगा। वैज्ञानिक पुस्तकों की तरह विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिये लगभग २०० से ऊपर चित्र भी स्थान-स्थान पर लगा दिये गये हैं। इससे अच्छा स्पष्टीकरण हुआ है। अब एक मात्र इसी पुस्तक के पढ़ने से एतद्-विषयक सम्पूर्ण प्राचीन तथा नवीन ज्ञान का सम्पादन किया जा सकता है। प्रसूति शास्त्र के विषयों से सम्बद्ध कई अन्य विषयों का जैसे 'यूजेनिकस' 'सेक्सुओलाजी' 'एन्थ्रोपोलाजी' का भी प्रसंग यत्र तत्र आकर विषय को अधिक सरस बना देता है।

सचित्र

अभिनव विकृतिविज्ञान

(A Text Book of Pathology-Ancient and Modern)

[पाश्चात्त्य तथा आयुर्वेदीय वैकारिकी का पाठ्यग्रन्थ]

आयुर्वेदाचार्य पं० रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस.

पृष्ठसंख्या लगभग १२००, खोजपूर्ण अध्याय ९५, सहस्रों उद्धरण—हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों के साथ साथ आंग्लपर्याय—सैकड़ों वैज्ञानिक चित्र, मञ्जुल मुद्रण, डिमाई अठपेजी बड़ी साइज, मोटा ग्लेज कागज, कपड़े की पक्की जिल्द, आधुनिक आकर्षक आवरण से विभूषित। मूल्य २२-००

कौमारभृत्य, राजकीय ओषधि-योग-संग्रह आदि ग्रन्थों के यशस्वी लेखक स्वर्णपदक-प्राप्त आचार्य रघुवीरप्रसादजी त्रिवेदी की यह अनुपम कृति है। विकृति-विज्ञान (पैथालोजी) का विषय कितना दुरूह है यह इसी से ज्ञात होता है कि अभी तक इस विषय पर किसी विद्वान् ने हिन्दी में लेखन का साहस नहीं किया है। अँगरेजी में भी भारतीय विद्वानों की इस विषय पर बहुत कम पुस्तकें हैं। विकृति-विज्ञान माडर्न मैडिकल साइन्स में एक आधार-स्तम्भ का कार्य करता है। इसका समीचीन ज्ञान बिना हुए आधुनिक चिकित्सापद्धति के रहस्यों का ज्ञान नहीं किया जा सकता।

इस विशाल ग्रन्थ में न केवल पाश्चात्य विकृतिविज्ञान का विस्तृत वर्णन है अपितु आयुर्वेदीय वैकारिकी के भी स्वतन्त्र अध्याय लिखकर इसे सर्वाङ्गसुन्दर कर दिया गया है। सभी दृष्टि से यह अपने विषय की प्रथम पाठ्य-पुस्तक है।

आचार्य त्रिवेदीजी ने वर्षों परिश्रम करके सुललित भाषा में स्थान-स्थान पर आयुर्वेदीय अंश की पूर्ति करते हुए सर्वथा नवीन रूप में विषय को उपस्थित करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। इस पुस्तक के प्रकाशन से आधुनिक भारतीय चिकित्सा के विद्यार्थियों के एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हो गई है। आचार्य तथा एम० बी० बी० एस० परीक्षा के अन्तिम वर्ष के छात्रों, विद्वानों, वैद्यों तथा डाक्टरों के लिए पुस्तक परमोपादेय सिद्ध होगी।

संशोधित ! परिवर्धित !! परिष्कृत तृतीय संस्करण !!!

(नि. भा. आयुर्वेदमहासम्मेलन-आयुर्वेदविद्यापीठ द्वारा स्वर्णपदक पुरस्कृत)

यू. पी., इण्डियन मेडिसिन बोर्ड, आयुर्वेद विद्यापीठ, हि० सा० सम्मेलन आदि अनेक आयुर्वेदिक शिक्षण संस्थाओं द्वारा स्वीकृत पाठ्य पुस्तक—

कौमारभृत्यम्

(नव्य-बालरोग-सहित)

(A Comprehensive and Comparative Treatise on the Care and Diseases of Children)

श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस.

भूमिका लेखक—वैद्य श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य

इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने आयुर्वेदीय ग्रन्थों में प्राप्त समस्त कौमारभृत्य सम्बन्धी वचनों के साथ साथ आधुनिक विज्ञान से तुलनात्मक विचार प्रकट किये हैं तथा बालकों की रक्षा, उनके पालन-पोषण, आहार, ग्रह-बाधाओं आदि का उत्तम एवं आकर्षक शब्दों में वर्णन किया है। इनके अतिरिक्त प्राच्य तथा पाश्चात्य ग्रन्थों में उपलब्ध बालकों के समस्त रोगों का विस्तृत विवरण, निदान, लक्षण, साध्यासाध्यता, चिकित्सा आदि तथा साथ ही तुलनात्मक आयुर्वेदीय दृष्टिकोण भी दिया गया है।

प्रस्तुत संस्करण की विशेषताएँ

आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान में जो आशातीत परिवर्तन हुए हैं उन सब नवीन शोधों के अनुसार प्रस्तुत संस्करण में आरम्भ से अन्त तक परिवर्तन एवं परिवर्द्धन किया गया है। लेखक कौमारभृत्यादि विषय के परीक्षक भी रहे हैं अतः उस दृष्टि से भी छात्रों की सुविधा के लिए अनेक विषय बढ़ाए एवं सरल किए गए हैं। प्रथम संस्करण में कुछ बालरोगों पर केवल पाश्चात्य औषधों का ही प्रयोग लिखा गया था। किन्तु उनमें प्रयुक्त होनेवाले आयुर्वेदिक योगों का भी समावेश इस संस्करण में किया गया है। अनुभव में आए हुए कुछ और चिकित्सा-संबंधी विषयों का संवर्द्धन एवं नवीन-प्राचीन पद्धतियों का समन्वय आदि इस संस्करण की मुख्य विशेषताएँ हैं।

संशोधित परिवर्धित परिष्कृत तृतीय संस्करण का मूल्य ८-०० मात्र

 चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

गर्भरक्षा तथा शिशु-परिपालन

(A Comprehensive Guide Book for the Care of Mothers and Children)

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा बी. एस. सी., एम. बी. बी. एस्.

इस पुस्तक में गर्भ के प्रारम्भ से शिशु के जन्म के एक वर्ष पश्चात् तक की सभी घटनाओं का विशद वर्णन किया गया है। गर्भावस्था में गर्भ की रक्षा करने के लिए कौन-कौन काम किये जायँ, गर्भवती स्त्री की दिनचर्या, उसका भोजन, निद्रा, व्यायाम, मानसिक कृत्य आदि पर लेखक ने पूर्ण प्रकाश डाला है तथा गर्भ की उपयुक्त वृद्धि के लिये जिन आयोजनों की आवश्यकता है उनका उपयुक्त वर्णन किया है। गर्भकाल में उत्पन्न होनेवाले रोग, प्रसव की कठिनाइयाँ, उनको दूर करने के उपाय, नवजात शिशु की देख-रेख, उसका पोषण, शारीरिक वृद्धि, अवस्था के अनुसार शिशु के आहार में परिवर्तन, ऊपरी दूध बनाना और पिलाना, शिशु के वस्त्र, उसका स्नान, व्यायाम आदि का पुस्तक में पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। प्रथम वर्ष में शिशुओं को होनेवाले जिन रोगों के कारण उनकी एक वहुत वड़ी संख्या जीवन के प्रथम वर्ष में ही अपनी लीला समाप्त कर देती है, उनका भी उपयुक्त विवेचन करते हुए उनकी चिकित्सा का वर्णन किया गया है।

पुस्तक प्रत्येक परिवार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। गर्भवती स्त्रियों के लिये यह अमूल्य पथप्रदर्शक तथा पद-पद पर उत्पन्न होनेवाली आपत्तियों एवं बाधाओं से रक्षा करने में अनुपम सहायक है।

मानव-जीवन की महत्ता देखते हुए विषय की उपयोगिता स्वयं स्पष्ट हो उठती है। गर्भ एवं शिशु अवस्था में अतिशय कोमल, अबोध तथा सुकुमार मानव की देख-भाल या पालन-पोषण करने वाले माता-पिता या संरक्षकों में से एक प्रतिशत को भी इस विषय की पूरी जानकारी नहीं होती। फलतः गर्भ एवं शिशु अवस्था में की गई थोड़ी-सी भी उपेक्षा मानव का संपूर्ण जीवन दुर्वल तथा अभावग्रस्त बना देती है। कहा गया है—मूर्ख मित्र, शत्रु से अधिक घातक होता है। आज के अधिकांश भारतीय माता-पिता अपनी सन्तति के ऐसे ही मित्र हैं। उन्हें माता-पिता बनने से पूर्व अपनी सन्तति के हित की दृष्टि से इस पुस्तक का अवश्य अवलोकन करना चाहिये।

कागज, छपाई, गेटअप आदि आधुनिकतम। मूल्य ४—५०

आयुर्वेदशास्त्र के अवतार, भारतराष्ट्रपति-चिकित्सक,
पण्डित-सार्वभौम, वैद्यसम्राट्, पद्मभूषण

श्री सत्यनारायण जी शास्त्री महोदय का

अभिनन्दन-ग्रन्थ

(Commemoration Volume Offered to Pt. Satyanarayan Sastri)

बहुत दिनों से समाज में जिसकी चर्चा चल रही थी, बड़ी प्रतीक्षा के बाद वह सचित्र अभिनन्दन-ग्रन्थ बड़ी धूम-धाम से छप कर सन्नद्ध है। देश के कोने-कोने से अपने विषय के माने हुए बड़े-बड़े विद्वानों ने प्रायः सभी विषयों पर प्रामाणिक लेख भेज कर इस ग्रंथ की उपयोगिता बढ़ाने में योगदान दिया है। आयुर्वेद के निदान-चिकित्सादि विषयों एवं आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा-पद्धतियों के बीच या उनसे प्राचीन का समन्वय आदि विषयों पर एक से एक बढ़कर विचार देखने को मिलते हैं। न्याय, व्याकरण, वेदान्त, सांख्य, योग, मीमांसा, इतिहास आदि प्रत्येक विषय पर मर्मस्पर्शी विचार-सामग्री से यह ग्रन्थ भरा हुआ है। आयुर्वेद की सेवा में सम्पूर्ण जीवन को विलीन कर देने वाले शास्त्री जी जैसे परम तपस्वी के जीवन से आयुर्वेद की महत्ता, उपयोगिता, प्राचीनता एवं अनिवार्यता का जो ज्ञान हमें हो सकता है वह दूसरे प्रयत्नों से इतना सुखसाध्य नहीं हो सकता। मानवमात्र के लिये अनुकरणीय शास्त्री जी के जीवनचरित की कतिपय प्रमुख घटनाओं को स्मरण कर भावी पीढ़ी के सदस्यों को कर्मक्षेत्र में कुशलता प्राप्त कराने वाली अनेक रसवती प्रेरणाएं दी गई हैं।

सचित्र एवं कलापूर्ण सुन्दर छपाई, मनोहर पक्की जिल्द मूल्य १५-००

+ पदार्थविज्ञानम्

(A Philosophical Treatise on the Catagories)

वैद्य सम्राट्, कविराज श्री सत्यनारायण शास्त्री

यद्यपि पदार्थ परिचय के लिये आज तक अनेक पुस्तकें उपलब्ध थी तथापि ऐसे महाविद्वान् के लेख में आपको पदार्थशास्त्र का विलक्षण अनुभव होगा। सभी दर्शनों के विशिष्ट शास्त्रार्थों के साथ पदार्थों का विवेचन देखते ही विद्वानों का चित्त आकृष्ट कर लेता है।

मूल्य ३-००

यू० पी० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा पाठ्य-स्वीकृत

अगद-तन्त्र

(A Treatise on Ancient Toxicology)

आयुर्वेदबृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.

'अगदतन्त्र' उस तन्त्र का नाम है जिसमें सर्प, कीट, लूता, मूषकादि जंगम प्राणियों के दंश तथा नाना प्रकार के स्थावर और जंगम विषों के अन्तःप्रयोग से उत्पन्न होने वाले लक्षणों के ज्ञान, निदान एवं उपशम के उपायों का वर्णन हो। इस विषय का मूल स्रोत चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, शार्ङ्गधर, रसचराजीय आदि प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों में निहित है। उन सभी ग्रन्थों का सारभूत यह अभिनव प्रकाशित ग्रन्थ रजिस्टर्ड चिकित्सक, घर का वैद्य—डाक्टर तथा जन साधारण के लिये भी समान रूप से उपयोगी है। नवीन वैज्ञानिक विधि से विपन्न औषधों का निर्माण प्रकार तथा साधन का अभाव होने पर सर्पादि के घातक विषों की प्राकृतिक चिकित्सा का भी इस ग्रन्थ में उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ छात्र, चिकित्सक तथा जन-समुदाय, सभी के लिये अत्यन्त उपादेय है। चतुर्थ संस्करण मूल्य ०-७५

विहार संस्कृत समिति द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

अञ्जननिदानम्

(An Ayurvedic Treatise on Diagnosis)

सान्वय 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका सहित।

यह ग्रन्थ आयुर्वेद शास्त्र में निदान के लिये श्रेष्ठ माना जाता है। विहार के नवीन पाठ्यक्रम में निर्धारित होने से हमने इस ग्रन्थ को सुन्दर प्रामाणिक परीक्षोपयोगी हिन्दी टीका के साथ प्रकाशित किया है। मूल्य १-००

अष्टाङ्गहृदयम् (गुटका)

(A Compendium of Indian Medicine)

'भागीरथी' टिप्पणी सहित

आयुर्वेदाचार्य पं० तारादत्त पन्त विरचित इसकी 'भागीरथी' टिप्पणी की विशेषता यही है कि छपते ही प्रथम संस्करण हाथों हाथ विक गया। इस वार चमकते हुए नये टाईप और सुन्दर सफेद ग्लेज कागज में इसका जेबी गुटका संस्करण और भी मनोरम हो गया है। द्वितीय परिष्कृत संस्करण मूल्य ४-००

विहार संस्कृत समिति मध्यमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत—

आयुर्वेदविज्ञानम्

(A Classified Register of Diseases and their Remedies)

सटिप्पण विद्योतिनी हिन्दी टीका बृहत् परिशिष्ट सहित

यह निदान चिकित्सा का बड़ा ही उपयोगी ग्रन्थ है। इसकी टीका में रोगों का विशेष भाषाओं-अंग्रेजी-हिन्दी-यूनानी-संस्कृत आदि-में नाम और पारिभाषिक शब्दों तथा अन्य रोगों का विशेष विवरण भी दिया गया है। आयुर्वेद के छात्रों तथा नवीन चिकित्सकों के लिये बड़ी उपयोगी पुस्तक है। द्वितीय संस्करण मूल्य २-००

इण्डियन मेडिसिन बोर्ड यू० पी० द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक—

आयुर्वेदीय परिभाषा

(A Handy Digest of Ayurvedic Terminology)

अभिनव-प्रकाशिका-हिन्दी टीका विस्तृत परिशिष्ट सहित।

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य श्रीगिरिजादयालु शुक्ल ए. एम. एस.

यह ग्रन्थ सभी आयुर्वेद विद्यापीठ, कालेज, विश्वविद्यालय आदि के पाठ्यक्रम में निर्धारित है। प्रस्तुत पुस्तक में सरल हिन्दी टीका के साथ साथ वक्तव्य में अन्य सभी उपयोगी विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। प्राचीन मानों का नवीन मान से समन्वय कर कुछ अन्य आवश्यक परिभाषाओं का भी परिशिष्ट में समावेश कर दिया गया है। द्वितीय संस्करण मूल्य १-२५

सामान्य रोगों की रोक थाम

(Remedies of Common Diseases)

डा० प्रियकुमार चौबे

रोगों की चिकित्सा कराने से अच्छा है रोग उत्पन्न ही न होने देना। यह तभी सम्भव है जब रोगों के प्रतिषेधात्मक उपायों और उनके प्रयोग का ज्ञान सदा सबको रहे। साधारण पठित मानव मात्र को यह उपादेय ज्ञान सुलभ कराना ही प्रस्तुत पुस्तक की रचना का उद्देश्य है।

इसमें सभी सामान्य रोगों का परिचय, सामान्य लक्षण तथा उनसे बचने के उपायों का अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा में विवेचन किया गया है। यथास्थल अनेक चित्र भी दे दिए गए हैं। इस प्रकार स्वास्थ्य-रक्षाकी दृष्टि से चिकित्सक, छात्रगण, गृहस्थ आदि तथा सामान्य पठित मानवमात्र के लिये भी यह पुस्तक परम उपयोगी है। व्यक्तिमात्र के पास इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। मूल्य ३-५०

इ० मेडिसिन बोर्ड यू० पी० तथा हि० सा० सम्मेलन द्वारा पाठ्य स्वीकृत

मर्म-विज्ञान—सचित्र

(Nervous Diseases and Their Ayurvedic Remedies)

आयुर्वेदबृहस्पति श्री रामरक्षपाठक आयुर्वेदाचार्य

मर्मों का वर्णन आयुर्वेद की उन विशेषताओं में है जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होती। आयुर्वेद संहिताओं में १०७ मर्मों के स्वरूप, स्थान, रचना तथा अभिघातजन्य परिणामों एवं प्रतिकार का वैज्ञानिक वर्णन सूत्ररूपेण निर्दिष्ट है। लेखक ने उनकी सचित्र विस्तृत व्याख्या कर आयुर्वेद जगत का बड़ा उपकार किया है। मूल्य ३—५०

क्वाथमणिमाला—हिन्दी टीका सहित

आयुर्वेद के विभिन्न ग्रन्थों में उपलब्ध समस्त क्वाथों का बड़े परिश्रमपूर्वक संग्रह किया गया है। केवल काष्ठ ओषधियों द्वारा चिकित्सा करने वाले वैद्यों तथा प्राकृतिक चिकित्सकों (Naturopaths) के लिए यह अत्युत्तम तथा अद्वितीय संग्रह है। साथ में आधुनिक टिप्पणी भी है। द्वितीय संस्करण यन्त्रस्थ

विहार संस्कृत समिति प्रथम परीक्षा पाठ्य स्वीकृत—

गूलरगुणविकाशः

(Medical Utility of Ficus Glomerata)

वैद्यरत्न श्री चन्द्रशेखरधर मिश्र।

गूलर के विविध प्रयोगों से मनुष्य तथा पशुओं के साधारण से साधारण एव जटिल से जटिल सैकड़ों रोगों की चिकित्सा की जा सकती है। गूलर की दवा इतनी सस्ती है कि ग्राम संगठन के कार्य में इससे बड़ी सहायता ली जा सकती है। विहार सरकार इसे काम में ले भी रही है। स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न श्री राजेन्द्रप्रसाद जी ने भी इस पुस्तक के प्रचार के लिए जोरदार शब्दों में सिफारिश की है जो पुस्तक में छपी हुई है। चौदहवां संस्करण १—००

+ मधु के उपयोग

अनेक प्रकार के मधु, उनकी पहचान, गुण एवं विविध रोगों में उनकी प्रयोग विधि आदि का विस्तार से इसमें वर्णन है। मूल्य १—००

+ मदनपालनिघण्टुः

(A Glossary of Ayurvedic Medicinal Herbs, etc.)

वैद्य त्र्यम्बकशास्त्रि कृत टिप्पणी सहित: १—००

माधवनिदानम्। वैद्य श्री पण्डित उमेशानन्द शास्त्री रचित 'सुधालहरी' संस्कृत टीका सहित गुटका द्वितीय संस्करण यन्त्रस्थ

यू० पी० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा पाठ्य-स्वीकृत—

द्रव्य-गुण-मंजूषा

(Medicinal Herbs and their Application)

आचार्य शिवदत्त शुक्ल एम. ए, ए. एम. एस.

आचार्य शुक्लजी द्रव्यगुण के माने हुए विद्वान हैं। विगत १५ वर्षों से इस विषय के अध्यापन का आपको अनुभव है। अनेक प्रान्तों में बहुत बार अनुसंधानात्मक भ्रमण कर अर्जित ज्ञान एवं वनौषधि-निधि हिमांचल के बीहड़ प्रदेशों से द्रव्यों का शोधन कर आपने अपने विशिष्ट ज्ञान से इस जटिल विषय का जितना स्पष्ट विवेचन किया है, यह विना इस ग्रन्थ के अध्ययन के नही जाना जा सकता। प्रत्येक द्रव्य के अनेक भाषाओं में प्रचलित शुद्ध नाम, विशिष्ट वर्णन, उत्पत्तिस्थल तथा परिचय का विस्तार से वर्णन किया गया है। आवश्यक स्थलों पर द्रव्य-शोधन की उपयोगी विधियों का भी वर्णन है। आयुर्वेदीय वनस्पतियों में आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं ने जिन सक्रिय तत्त्वों का अनुसन्धान किया है, उन सक्रिय तत्त्वों का भी वर्णन कर द्रव्यगुण विज्ञान को पूर्ण वैज्ञानिक रूप दिया गया है। अन्त में द्रव्यों के शास्त्रोक्त गुणकर्मों का वर्णन कर पाश्चात्य क्रम पर औषध के सांस्थानिक प्रभाव का वर्णन है। वनौषधि के विशिष्ट आमयिक प्रयोग तथा उसके प्रधान शास्त्रीय योगों का उल्लेख कर प्रयोज्य मात्रा भी लिखी गई है। वानस्पतिक द्रव्यों का रचनाप्रधान वर्गीकरण किया गया है, इससे स्वरूप परिचय तथा गुण-धर्म वर्णन का स्मरण विद्यार्थियों को सुविधापूर्वक हो सकेगा। द्रव्यगुण सम्वन्धी इतनी विशाल तथा ठोस सामग्री किसी दूसरे ग्रन्थ में नही है। यह आयुर्वेद जगत को विद्वान् लेखक की अप्रतिम भेंट है। पुस्तक आयुर्वेद महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा चिकित्सकों के लिए समान रूप से उपयोगी है। छात्रों के अत्यधिक आग्रह पर इसका प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है। प्रथम भाग मूल्य २-००

नाडीपरीक्षा

(Examination of Pulse)

भिषग्रत्न श्री ब्रह्मशङ्कर मिश्र कृत वैद्यप्रिया हिन्दी टीका सहित

इस छोटे से ग्रन्थ में ऐसे ऐसे नाड़ी लक्षणों का वर्णन आया है जो अन्य ग्रन्थों में नही मिलते। मृत्यु के समय मनुष्य की नाड़ी के लक्षणों का भी वर्णन सुन्दररूप में वड़े विस्तार से किया गया है। चतुर्थ संस्करण मूल्य ०-३५

इण्डियन मे. बोर्ड यू० पी०, हि. सा. सम्मेलन द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक-

प्रारम्भिक-भौतिकी

(An Elementary Work on Physics)

निहालकरण सेठी

हाई स्कूल, इण्डियन मेडिसिन बोर्ड एवं आयुर्वेद विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए यही पुस्तक पाठ्यरूप से स्वीकृत है। अन्य पाठक भी इसको पढ़कर भौतिक विज्ञान की बातों को बिना कठिनाई के समझ सकते हैं। पुस्तक के पांच परिच्छेदों में वैज्ञानिक नाप तौल, द्रव्य के सामान्य गुण, गति, जड़त्व और गुरुत्व, वेग संयोजन काम, सामर्थ्य एवं शक्ति, तापक्रम, प्रकाश, शब्द, चुम्बक, विद्युत, एक्सकिरण आदि विषयों का भौतिक दृष्टिकोण से वैज्ञानिक विवेचन किया गया है।

द्वितीय संस्करण मूल्य ५-५०

परिवर्द्धित और परिष्कृत तृतीय संस्करण

प्रारम्भिक-रसायन

(A Handbook of Elementary Chemistry—Organic and Inorganic)

प्रो० श्री फूलदेवसहाय वर्मा

इसके लेखक प्रोफेसर वर्मा हिन्दू विश्वविद्यालय के सबसे अधिक अनुभवी विज्ञानवेत्ता हैं। आपकी विद्वत्ता की विज्ञान जगत में अमिट छाप है।

पुस्तक २ भागों में पूर्ण हुई है। इस परिष्कृत संस्करण में कई महत्त्व के अध्याय जोड़े गये हैं। प्रांगार रसायन (आर्गेनिक केमिस्ट्री) का जो भाग बहुत सूक्ष्म रूप में था उसके अब बीस अध्याय और बढ़ाये गये हैं।

स्थान स्थान पर आयुर्वेदीय झलक इस नूतन संस्करण की एक और विशेषता है। कई नये चित्र भी जोड़े गये हैं।

सारांश यह कि पुस्तक के पूर्व तथा इस संस्करण में जमीन आसमान का अन्तर है। यह अब न केवल आयुर्वेद के विद्यालयों में, अपितु स्कूलों और कालेजों में भी पाठ्यपुस्तक के रूप में विराजमान है। पुस्तक संग्रहणीय है।

तृतीय संस्करण की पृष्ठसंख्या ४६४, चित्रसंख्या ६२, उत्तम कागज, सुन्दर छपाई तथा आकर्षक टिकाऊ पक्की जिल्द। मूल्य ४-५०

हि० सा० सम्मेलन, आयुर्वेद विद्यापीठ, इ० मे० बोर्ड द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

पञ्चविध कषाय-कल्पना विज्ञान

(Basic Ayurvedic Pharmceuticals)

आयुर्वेदाचार्य डा० अवध बिहारी अग्निहोत्री ए. एम. एस.

इस पुस्तक में आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली के प्रारम्भिक, अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपादेय विषय 'पंचविधकषायों' अर्थात् स्वरस, कल्क (शुष्क कल्क अथवा चूर्ण), कषाय (क्वाथ), हिम तथा फाण्ट आदि की कल्पनाओं तथा इन्हीं कषायों के अन्तर्गत आनेवाले तण्डुलोदक, यूषरस, मांसरस, यवागू, मण्ड, पेया, विलेपी आदि उपकषायादिकों का प्राच्य, पाश्चात्य तथा यूनानी मतानुसार, विशदतापूर्वक विवेचन किया गया है। यही नहीं, प्रचलित तथा प्रसिद्ध आयुर्वेदीय स्वरस, कल्क, चूर्ण, क्वाथ, हिम, फाण्टादिकों की कल्पना-विधि तथा उनके गुणों व प्रयोग आदि का वर्णन भी सरल तथा सरस भाषा में किया गया है। यह पुस्तक भारतवर्ष के सभी आयुर्वेदिक कालेजों के द्वितीय तथा तृतीय वर्ष के छात्रों के 'भैषज्य-कल्पना' विषय के एक अत्यन्त आवश्यक तथा महत्वपूर्ण अंग पर लिखी होने के कारण बड़ी ही महत्वपूर्ण तथा उपादेय है। विभिन्न कषायों की निर्माणविधि प्रयोगात्मक ढंग से भी दी गई है। आधुनिक छात्रों, ग्रामीण वैद्यों, नगर के अल्पानुभवी तथा प्रारम्भिक चिकित्सकों एवं सभी गृहस्थों के लिये अत्यन्त उपादेय पुस्तक है। मूल्य १-५०

इण्डियन मेडिसिन बोर्ड यू० पी० की प्राणाचार्य परीक्षा में आलोच्य
व सहायक स्वीकृत ग्रन्थ—

अभिनव बूटीदर्पण सचित्र

(Ayurvedic Medicinal Plants Illustrated)

सम्पादक : 'रूपनिघण्टुकार' श्रीयुत रूपलालजी वैद्य, वनस्पति-विशेषज्ञ

सहज में स्पष्ट पहचानने योग्य चित्रों के साथ प्रकाशित इस ग्रन्थ में आज तक के प्रकाशित जड़ी-बूटियों के विषय को भली भांति परिमार्जित करने तथा नवीन अनुभव सम्मिलित करने के साथ २ अन्य सन्दिग्ध बूटियों पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है, साथ ही इसमें प्रत्येक रोग पर बूटियों का प्रयोग नम्बर भी बतला दिया है जिससे साधारण जन भी किस रोग पर किन किन बूटियों का कैसे प्रयोग हो सकता है ज्ञात कर प्रयोग द्वारा सफल चिकित्सा कर लाभ उठा सकते हैं। इसकी प्रशंसा स्वयं क्या लिखी जावे, ग्रन्थ हाथ में आने पर आप स्वयं प्रशंसा किये विना नहीं रहेंगे। द्वितीय संस्करण यन्त्रस्थ

प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा
(Treatment of Diseases of the Spleen)

कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी राजवैद्य

इसमें नवीन वैज्ञानिक ढंग पर आयुर्वेदिक, एलोपेथिक एवं यूनानी मतानुसार रोग के निदान, लक्षण तथा चिकित्सा का सुन्दर वर्णन किया गया है। मूल्य ०-३५

यू० पी० गवर्नमेंट के कृषिविभाग द्वारा स्वीकृत—

फलसंरक्षणविज्ञान (FRUIT PRESERVATION)

डा० युगलकिशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य

उत्तर प्रदेशीय सरकार की योजनानुसार उक्त पुस्तक की रचना की गई है। विषयों का विवेचन अति उत्तम मौलिक रूप से किया गया है। विद्यार्थियों के लिए इस विषय की यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। फलों की चटनी, अचार, मुरब्बा आदि बनाने तथा संरक्षण का विधान भी बड़ी सरलता से समझाया गया है। साधारण जनता भी इस पुस्तक से बहुत लाभ उठा सकती है। मूल्य १-००

बस्तिशलाकाप्रवेश (एनिमा और कैथेटर)
(Enema Catheterization)

आयुर्वेदाचार्य **राजकुमार द्विवेदी** डी. आई. एम. एस.

द्विवेदी जी ने इस पुस्तिका में बस्तियों तथा शलाकाओं के प्रयोग पर व्यावहारिकज्ञान का बड़ा ही सुन्दर प्रकाशन किया है। जहाँ पुस्तिका छात्रों के लिए लाभदायक है वहाँ सहायक वैद्यों तथा उन वैद्यों के लिए जिन्हें इस उपयोगी विषय के अभ्यास का अवसर नहीं मिला, बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। मूल्य ०-४०

भारतीय-रसपद्धति
(Indian Pharmaceuticals)

कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार

भारतीय रस शास्त्र में धातुओं आदि का शोधन, जारण-मारण एक महत्त्व का विषय है। इस छोटी सी पुस्तक में यह विषय बहुत ही सरलता के साथ समझाया गया है-इसके सिवाय ओज, भावना, पुट, आदि सन्दिग्ध विषय पूर्णतः स्पष्ट कर दिये हैं। रस शास्त्र का इतना महान् विषय इस छोटी सी पुस्तक में सम्पूर्ण रूप से समा दिया गया है-इसी को देखकर—प्राणाचार्य श्री गोवर्धन शर्मा छांगाणी जी ने लिखा है कि—'अधिक तो क्या इस छोटी सी पुस्तिका रूपी गागर में रस शास्त्र सरीखे महान् सागर को भर दिया है। हमारी दृष्टि में रस शास्त्र के लिये प्राचीन ढंग का ऐसा सुन्दर और स्वल्पाकार ग्रन्थ यह पहला ही है'। १-५०

योग-चिकित्सा

(Indications of Drugs)

कविराज, अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार

इसमें बंगाल की परम्परा से प्राप्त अनुभूत प्रत्यक्ष फलप्रद योगों का तथा बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के पञ्चम वर्ष में जो रस, अवलेह, तैल, घृत, गुटिका आदि का ज्ञान कराने के लिए निर्धारित हैं, उन सब योगों का समावेश है। इसीलिए उत्तर प्रदेश के डिप्टी डायरेक्टर आयुर्वेद, महोदय ने लिखा है कि यह पुस्तक विद्यार्थी, प्रैक्टिशनरों तथा राजकीय चिकित्सक सबके लिए अत्यावश्यक तथा उपयोगी है। चिकित्सा में यश, धन तथा सफलता प्राप्त करने के लिए इस पुस्तक की एक प्रति पास में रहना अत्यावश्यक है।

पुस्तक उत्तम कागज, नवीन टाईप में बहुत सुन्दर छपी है। मूल्य ३–५०

यकृत् के रोग और उनकी चिकित्सा

(A Manual of the Diseases of the Liver & Gall bladder)

श्री सभाकान्त झा वैद्य शास्त्री

परिष्कर्ता—आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस.

पुस्तक में यकृत्, उसकी रचना, सूक्ष्म रचना, क्रिया, उसके विकार, विकारों के निदान, पूर्वरूप, सम्प्राप्ति, चिकित्सा, पित्ताशय और उसके विकारों का वर्णन सरल सुबोध भाषा में वैज्ञानिक प्रणाली से किया गया है। अन्त में अनेक उपादेय सिद्ध योगों का भी समावेश है। वैद्य, डाक्टर, छात्र सभी के लिए उपयोगी है मूल्य २–००

नाडीविज्ञानम्

(An Authoritative Work on the Examination of Pulse)

आयुर्वेदाचार्य—प्रयागदत्तजोषीकृत विबोधिनी विस्तृत हिन्दी टीका सहित

इसमें नाडी की सूक्ष्म तथा स्थूल भिन्न भिन्न गतियों का बहुत विचार-पूर्वक दिग्दर्शन कराया गया है। यहाँ तक कि भिन्न भिन्न कार्य करने पर तथा भिन्न भिन्न पदार्थ खाने पर एवं मृत्यु काल सम्बन्धी नाडी की गति में जो अन्तर होता है भली प्रकार दर्शाया गया है। षष्ठ संस्करण मूल्य ०–३५

रोगि-परीक्षा-विधि (सचित्र)

(Ancient & Modern Clinical Methods)

आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम० ए०, ए० एम० एस०

रोगि-परीक्षा-विधि चिकित्सा-विज्ञान का प्रथम सोपान है। रोगी की पूर्ण परीक्षा किये बिना रोग का निर्णय ठीक-ठीक नहीं हो सकता फलतः चिकित्सा भी सफल नहीं हो सकती। ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर अभी तक समन्वय प्रणाली से लिखे गए ग्रन्थ का अभाव चिरकाल से अनुभव किया जा रहा था। विद्वान् और अनुभवी लेखक ने अपने दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना कर एक बड़े अभाव की पूर्त्ति की है। इस ग्रन्थ में आयुर्वेदिक और एलोपैथिक दोनों पद्धतियों से रोगी-परीक्षा का पूर्ण विवरण दिया गया है जिससे दुरूह विषय भी करामलकवत् स्पष्ट हो गया है। प्रायः सभी स्थलों पर चित्रों को देकर विषय को और भी सरल तथा स्पष्ट रूप से समझाया गया है। मूल्य ६-००

स्त्री-रोग-विज्ञान (सचित्र)

(Gynocology)

डा० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस०

यह रचना आयुर्वेद के विद्यार्थियों अथवा सामान्यतया सभी चिकित्साविज्ञान के अभ्यासी छात्रों के लिये अत्यन्त ही उपादेय है। पुस्तक को 'नातिसंक्षेप-विस्तर' लिखते हुए छः खण्डों में पूरे विषय का विभाजन किया गया है जैसे अंगव्यापद, रजोव्यापद, योनिव्यापद, उपसर्गव्यापद, अर्बुदव्यापद तथा शस्त्रकर्म। परीक्षा के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए विषय को ठोस लिखने का प्रयास किया गया है जिससे परीक्षार्थियों को सरलता से विषय ग्राह्य हो सके और परीक्षाकाल में उन्हें पूर्ण सफलता भी प्राप्त हो। साथ ही चिकित्सा का प्रकरण बहुत ही व्यावहारिक दृष्टि से लिखा गया है, जिससे साधारण चिकित्सक अपनी नित्य की चिकित्सा में समान भाव से पुस्तक को उपयोगी बना सके। 'पुस्तक की सर्वोपरि विशेषता उसकी समन्वयात्मक पद्धति का लेखन है जिसमें अत्यन्त प्राचीन काल के आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्तों और सूत्रों के उल्लेख से प्रारम्भ करके आधुनिक युग के नवीनतम आविष्कारों से प्रकाशित रोग-विज्ञान तथा चिकित्सा का संकलन हो गया है। इस पुस्तक से आयुर्वेद-विद्यालयों में पाठ्य स्त्रीरोग-विज्ञान से सम्बद्ध प्राचीन तथा नवीन ज्ञातव्य विषयों का एकत्रीकरण सुलभ हो गया है। द्वितीय संस्करण मूल्य ३-५०

रोगीरोगविमर्श

(An Ayurvedic Guide for Examination of Patients and Diagnosis of Diseases)

डा० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस०

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। आतुरालय में रोगियों के इतिवृत्त के विभिन्न स्थलों का प्रारम्भ कैसे किया जाय, किन किन बातों की जानकारी किन किन विशिष्ट प्रश्नों के द्वारा की जाय, तथा रोगी और रोग की परीक्षा किन विधियों का अनुसरण करते हुए की जाय, इत्यादि आधुनिक युग के चिकित्सा-विज्ञान की प्रमुख बातें इसमें प्राचीन शास्त्रों के आधार पर लिखी गई हैं। आधुनिक वैद्यों, चिकित्सकों तथा छात्रों के लिए बहुत ही उपादेय पुस्तक है। मूल्य २-००

सचित्र—

भैषज्य कल्पना विज्ञान

(A Complete Guide for Preparation of Ayurvedic Medicine)

डा० अवध बिहारी अग्निहोत्री बी. ए., ए. एम. एस.

आयुर्वेदीय चिकित्सा-प्रणाली के अन्तर्गत आनेवाली भैषज्य-कल्पना से सम्बन्धित सभी विधियों का सुगम तथा विशद वर्णन इस पुस्तक में सुन्दरता के साथ किया गया है, जिसके अन्तर्गत आयुर्वेदीय तथा आधुनिक मान (माप, भार व तौल), यन्त्रोपकरण, मूषा, पुट, कोष्ठी, मुद्रा, पञ्चविध कषाय कल्पना (स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम, फाण्ट आदि), रसक्रिया (अवलेह), गुटिका, वटी, वर्ति, स्नेहपाक, आसवारिष्ट, उपनाह, लेप, मलहम, क्षार आदि की कल्पना से सम्बन्धित विषयों को आधुनिक तथा प्राचीन चिकित्सा-प्रणालियों के समन्वयात्मक सिद्धान्तों व विधियों के अनुसार अच्छी तरह समझाकर लिखा गया है। इन सब विषयों की जानकारी प्राप्त करने के लिए फिर किसी भी भैषज्य-कल्पना-ग्रन्थ को देखने की आवश्यकता नहीं रह जाती। इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखी गई, आयुर्वेद के महत्त्वपूर्ण अंग पर यथोचित प्रकाश डालनेवाली यह पुस्तक भारतवर्ष के विभिन्न आयुर्वेदिक कालेजों के विद्यार्थियों, विद्वानों, वैद्यों, चिकित्सकों तथा साधारण गृहस्थों आदि के लिए अत्यधिक उपादेय है। मूल्य ५-००

रसचिकित्सा

(Ayurvedic Chemotherapy)

डा० कविराज श्री प्रभाकर चट्टोपाध्याय

इस ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में प्राचीन रसग्रन्थों से अनुभूत पारद के १८ संस्कारों का तथा पारदभस्म, हरितालभस्म आदि की निर्माणविधि का वर्णन बहुत सुन्दर रीति से किया गया है तथा स्वर्णघटित मकरध्वज बनाने की ऐसी विधि बतलाई गई है जो आज तक किसी भी अन्य पुस्तक में प्रकाशित नहीं हुई थी और जिसे सर्वसाधारण वैद्य नहीं जान पाये थे। इसके अतिरिक्त अभ्रकादि खनिज धातुओं का आश्चर्यजनक शोधन, मारण तथा उनकी सेवन-विधियों का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसके द्वितीय तथा तृतीय खण्ड में ज्वरादि रोगों की चिकित्सा दी गई है और टायफाइड, न्यूमोनिया, इन्फ्लुयेञ्जा, कालाजार, प्लेग, गैस्ट्रिक अलसर, गलस्टोन, हैजा, सुजाक, उपदंश (आतशक) आदि वर्त्तमान काल में प्रचलित दुःसाध्य रोगों की भी सुन्दर अनुभूत चिकित्साविधि लिखी गई है। इस पुस्तक द्वारा चिकित्सक जटिल से जटिल आधुनिक रोगों की भी चिकित्सा करने में सफल हो सकता है। जिन प्रयोगों और अनुभवों को वैद्य लोग छिपाते थे, प्राच्य-प्रतीच्य चिकित्साशास्त्र के अद्वितीय मनीषी चट्टोपाध्यायजी ने स्वानुभूत उन योगों तथा अनुभवों को भी चिकित्सकों की सुविधा के लिये इसमें उल्लिखित कर दिया है। इस पुस्तक में वस्तुतः रसचिकित्सा का महत्व विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया है। इस पुस्तक के अध्ययन से रसचिकित्सा द्वारा असाध्य रोगों को भी साध्य करके साधारण वैद्य भी सफल रसचिकित्सक बनने का गौरव प्राप्त कर सकता है। अतः यह ग्रन्थ सभी रसचिकित्साभिलाषियों के लिये अत्यधिक उपयोगी होने से अवश्य संग्राह्य है। कागज, टाईप, गेटअप आदि सभी आधुनिकतम। मूल्य ६-००

राजमार्तण्ड

(An Easy but Effective Guide for Ayurvedic Preparations)

'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित

श्री भोज महाराज विरचित इस दुर्लभ प्राचीन ग्रन्थरत्न का सम्पादन आचार्य यादव जी त्रिकम जी ने टिप्पणी, उपशीर्षक आदि देकर बड़े श्रम से किया था। प्रत्येक रोग पर ग्रन्थकार के अनुभूत अनूठे योगों का वर्णन इसमें है। लोकोपकार की दृष्टि से अब इस ग्रन्थ को विशद हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

मूल्य २-५०

इ० मे० बोर्ड, यू० पी०, आयुर्वेद विद्यापीठ एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलनादि अनेक आयुर्वेदिक संस्थाओं द्वारा पाठ्य स्वीकृत—

व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतन्त्र

(Medical Jurisprudence and Toxicology)

डा० युगल किशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य

परिष्कर्त्ता—डा० बालकृष्ण पटवर्धन ए० एम० एस०

चिकित्सक तथा अध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

इस द्वितीय संस्करण को डा० पटवर्धनजी ने नवीन संस्करण के रूप में परिष्कृत कर दिया है तथा डा० रमानाथ द्विवेदी जी ने चरक, सुश्रुत, वाग्भट, काश्यप-संहितादि प्राचीन ग्रन्थोक्त परीक्षा निर्धारित 'अगदतन्त्र' जो इण्डियन मेडिसिन बोर्ड आदि परीक्षाओं में निर्धारित है एवं जिनके प्रश्न प्राचीन आयुर्वेद पद्धति के अनुसार पूछे जाते हैं उनका समाधान तथा तदुक्त ग्रन्थों के विपन्न ओषधि निर्माण, चिकित्सा, निदान, साध्यासाध्यता आदि का विशद विवेचन कर उसमें अगदतन्त्र नामक ग्रन्थ को भी जोड़ दिया है। चिकित्सकों की सुविधा के लिए उत्तरप्रदेश सरकार का इण्डियन मेडिसिन एक्ट भी इस चतुर्थ संस्करण में छपा है। आज तक इस विषय की दूसरी कोई भी पुस्तक इसके टक्कर की नहीं छपी है। मूल्य ५–००

राष्ट्रियचिकित्सा सिद्धयोगसंग्रहः

(An Exhaustive Register of Ayurvedic Prescriptions)

आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस.

भूमिका लेखक—प्रोफेसर श्री दत्तात्रय अनन्त कुलकर्णी एम. एस–सी.

डि० डायरेक्टर, मेडिकल एण्ड हेल्थ सर्विसेस, उत्तर प्रदेश

इस पुस्तक में आयुर्वेद के आठों अंगों के विभिन्न शतशोऽनुभूत सिद्ध कषाय, चूर्ण, तैल, घृत, अवलेह, गुटिका और रसयोगों के गुण, अनुपान और निर्माण का पूर्ण विवरण दिया गया है। इसके अतिरिक्त डाक्टरी के अनूठे मिक्श्चर्स, लोशन्स आदि तथा यूनानी के सफूफ, अर्क–खमीरा आदि भी दिये गये हैं ताकि प्रत्येक वैद्य या राष्ट्रिय चिकित्सक उससे लाभ उठा सके। मूल्य १–५०

आसवारिष्ट-विज्ञान

(A Handbook of Fermentative Preparations)

श्री पक्षधर झा

यह ग्रन्थ दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में मद्य-सुरा-प्रसन्ना-सीधु-वारुणी आदि सम्पूर्ण आसवारिष्ट-भेदों की परिभाषाएं, निर्माण-विधि की प्रक्रियाओं का सूक्ष्म विवेचन, सेवनविधि, मात्रा, पारिभाषिक शब्द तथा घन-द्रव पदार्थों के विभिन्न प्रचलित-अप्रचलित मानों का तुलनात्मक विवेचन है। द्वितीय खण्ड में रोगाधिकार-पूर्वक आसवारिष्टों का वर्गीकरण कर प्रत्येक आसवारिष्ट प्रकरण में ग्रन्थ, रोग, निर्माणप्रकार : घन-द्रव द्रव्य, प्रक्षेप द्रव्य, सन्धान प्रकार, सेवन प्रकार, मुख्य कार्य, मात्रा तथा 'वक्तव्य' में विशेष ज्ञातव्य सामग्री प्रस्तुत की गई है। आयुर्वेदीय आसवारिष्टों के सम्बन्ध में इतनी विशद सामग्री एक साथ प्रथम बार ही आप देखेंगे। विद्वान् लेखक के अध्यापन तथा प्रत्यक्ष कर्माभ्यास के अनुभवों से सम्पुटित यह ग्रन्थ छात्रों-चिकित्सकों की तो बात ही क्या, पठित व्यक्ति मात्र के लिये भी अमूल्य निधि है। मूल्य ३-००

विषविज्ञान और अगदतन्त्र

(Toxicology)

कविराज युगल किशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य तथा—
आयुर्वेदबृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस०

इस पुस्तक में उन मुख्य विषैली ओषधियों का वर्णन है, जिनसे साधारणतया दुर्घटनायें हो जाया करती हैं अथवा जिनका प्रायः आत्महत्या तथा परहत्या के लिये उपयोग किया जाता है। इस पुस्तक में विषों के लक्षण तथा उनकी चिकित्सा आदि पर विस्तार से लिखा गया है ताकि चिकित्सक विष का निर्णय कर अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक चिकित्सा कर सकें। इस परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण में डा० बा० पटवर्धन जी ने आधुनिक नवीन वैज्ञानिक ढंग से सम्पूर्ण ग्रन्थ का परिष्कार करके ग्रन्थ का कलेवर ही बदल दिया है। श्री द्विवेदी जी लिखित चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि प्राचीन आर्ष ग्रन्थों का सारभूत 'अगदतन्त्र' नामक ग्रन्थ भी इस संस्करण में संवलित कर दिया गया है। यह पुस्तक विद्यार्थियों तथा सामान्य चिकित्सकों के लिए समान रूप से पूर्ण उपयोगी सिद्ध हो चुकी हैं।

चतुर्थ संस्करण मूल्य २-००

रोगनामावलीकोष

(A Trilingual Dictionary of Diseases with Short Explanations)

वैद्यराज हकीम ठाकुर दलजीत सिंह, भिषग्रत्न

भूमिका लेखक—डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर

इस ग्रन्थ में सभी आयुर्वेदीय, यूनानी तथा डॉक्टरी रोगनामों का परिचयादि सहित समीचीन, आवश्यक, प्रामाणिक एवं सुन्दर संस्कृत–हिन्दी–उर्दू–अरबी—फारसी–अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में अकारादि क्रमानुसार संग्रह किया गया है। अस्तु, स्पष्ट है कि यह ग्रन्थ चिकित्सानुरागी साधारण जनता, ग्रन्थलेखक, वैद्य, हकीम और डाक्टर सभी के लिये समानरूप से उपयोगी है। मूल्य ३–५०

वनौषधि-चन्द्रोदय (विशाल निघण्टु-ग्रन्थ, चतुर्थ संस्करण)

(An Encyclopaedia of Indian Botanys & Herbs)

इस विशाल ग्रन्थ में भारतवर्ष में पैदा होने वाली तमाम वनस्पतियों, खनिज द्रव्यों और विष-उपविषों के गुण-धर्मों का सर्वांगीण विवेचन किया गया है। प्रत्येक वस्तु के भिन्न २ भाषाओं में नाम, उत्पत्तिस्थान, आयुर्वेदिक, यूनानी और आधुनिक चिकित्साविज्ञान की दृष्टि से उनके गुण-धर्मों का वर्णन, शरीर के अन्दर भिन्न २ अङ्गों पर उसके पड़ने वाले रासायनिक प्रभाव, भिन्न २ रोगों पर उसके उपयोग करने के तरीके, उस वस्तु के मेल से बनने वाले सिद्ध प्रयोगों का विवेचन बहुत ही सुन्दर तथा विस्तार से किया गया है जो आपको अन्यत्र किसी भी ग्रन्थ में मिलना असम्भव है।

इस विशाल निघण्टु ग्रन्थ की उपयोगिता स्वीकार करते हुए नई दिल्ली स्थित केन्द्रीय सरकार के तमाम जंगलों के प्रधान इन्स्पेक्टर जेनरल ने समस्त भारतीय जंगलों के प्रधान प्रबन्धकों के लिए तथा पंजाब, हिमाचल प्रदेश और मध्यभारत की सरकारों ने अपने अपने प्रदेशों के समस्त विभागीय जंगलों के अफसरों के लिए एवं केन्द्रीय सरकार के मेडिकल विभाग के डाइरेक्टर ने कुल मेडिकल संस्थानों के लिए पुस्तक का अनुमोदन कर खरीद करने की जोरदार सिफारिश की है। इनसे भिन्न मध्यभारत तथा उत्तर प्रदेश की सरकारों के शिक्षा विभागों ने भी अपने अपने प्रदेश के स्कूल, हाई स्कूल, इण्टर तथा डिग्री कालेजों की लाइब्रेरियों के लिए उक्त पुस्तक को संग्रह करने का पूर्ण समर्थन किया है।

पृथक् २ प्रत्येक भाग का मूल्य ५–०० तथा १–१० भाग सम्पूर्ण का मूल्य ४०–००

वैद्यकीय सुभाषितावली
(Medical Anthology)

—: संग्रहकर्ता :—

डा० प्राणजीवन माणेकचन्द मेहता

आयुर्वेद जगत में डा० मेहता जी को कौन नहीं जानता। मेहता जी की इस अमर कीर्ति की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। फिर भी इतना अवश्य कहूँगा कि इस ग्रंथ का निर्माण करके मेहता जी ने आयुर्वेद का मस्तक अधिक ऊँचा कर दिया है। आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है यह प्रायः सभी लोग जानते हैं किन्तु वेदादि में बिखरे हुए आयुर्वेद के चुने हुए सुभाषित पद्य कितने हैं इसका ज्ञान सभी को नहीं था। प्रस्तुत ग्रन्थ में उसी के संकलन का भगीरथ प्रयत्न किया गया है। चारों वेद, महाभारतादि १८ पुराण, चरक, सुश्रुत, वाग्भटादि आयुर्वेद के शिरोमणि ग्रन्थ, माघ, नैषध, हर्षचरित आदि काव्य ग्रन्थ तथा लोलिम्बराज विरचित वैद्यजीवन आदि के ग्रन्थों में जितने वैद्यकीय सुभाषित छन्दोबद्ध सुललित पद्य आये हैं उन सब का एकत्र संग्रह इस पुस्तक में किया गया है तथा साथ ही साथ अंग्रेजी भाषा में उनकी आलोचनात्मक व्याख्या भी कर दी गयी है। यह ग्रन्थ आयुर्वेद के आधुनिक स्नातकों एवं विद्वानों के लिए अत्यन्त उपादेय और संग्रह करने योग्य है।

पुस्तक की छपाई, कागज, जिल्द, गेटअप आदि बहुत सुन्दर है। मूल्य २–००

वैद्यजीवनम्
(A Comprehensive Book of Ayurvedic Prescriptions for all Diseases)

अभिनव 'सुधा' हिन्दी टीका टिप्पणी सहित

टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य श्री कालिकाचरण शास्त्री एम. ए.

इस संस्करण की सरल हिन्दी टीका में ग्रन्थ के आशय को भली प्रकार विस्तृत रूप से समझाते हुए विशद टिप्पणी में प्राचीन संस्कृत टीका की सभी विशेषतायें तथा स्थान स्थान पर प्रत्येक रोग के लक्षण भी दे दिये गये हैं।

तृतीय संस्करण मूल्य १–२५

सिद्ध-भेषज-संग्रह

(An Exhaustive Compilation of Ayurvedic Formulae)

आयुर्वेदाचार्य श्री युगल किशोर गुप्त डी. आई. एम. एस.

सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गंगासहाय पाण्डेय ए. एम. एस.

अध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

प्रस्तुत पुस्तक में सभी प्रचलित—चूर्ण, वटी, घृत, तैल, आसव-अरिष्ट, सुरा, रस, रसायन, पर्पटी, लौह, मण्डूर, गुग्गुलु, अवलेह, मोदक, पाक, क्वाथ, लवण, द्रव, क्षार, प्रलेप, अञ्जन, वर्ति, धूम आदि शास्त्रीय योग तथा श्रेष्ठतम रसायन-शालाओं में जिन योगों का निर्माण होता है उन अनुभवसिद्ध एवं वर्तमान समय में सिद्धहस्त चिकित्सक नित्यप्रति जिन योगों का प्रयोग करते हैं उन १००० सहस्र सिद्ध योगों का संग्रह तथा भस्म एवं शोधन-मारण की अनुभवसिद्ध, गुणकारी सरल विधियों का भी संकलन किया गया है। प्रत्येक योग के वर्णन में ग्रन्थ निर्देश, अधिकार, संयोगी द्रव्य, निर्माणप्रकार, मात्रा, अनुपान एवं गुणधर्म तथा उपयोगिता आदि आठ विभाग रखे गये हैं। विशिष्ट स्थलों पर प्रायः सर्वत्र ही विशेष वक्तव्य और नोट्स में संदिग्ध विषयों को विस्तार के साथ प्रतिपादन कर दिया गया है। सर्वसाधारण चिकित्सकों को, विशेषतया नवीन चिकित्सकों को सर्वविध औषधि-निर्माण तथा चिकित्सा के बारे में पूर्ण जानकारी एक ही ग्रन्थ से हो जाय, यह इस ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता है। यह अभिनव संस्करण प्रत्येक चिकित्सक के लिए संग्रह करने योग्य है।

पृष्ठसंख्या ७६०, छपाई, कागज, गेटअप आदि सभी आकर्षक एवं मनोहर हैं।

मूल्य—राज संस्करण ६-०० उत्तम संस्करण ८-०० सुलभ संस्करण ७-००

सुश्रुतसंहिता-शारीरस्थानम्

(Susruta Samhita-Sarirasthana)

नवीन वैज्ञानिक 'प्रभा'-'दर्पण' विस्तृत हिन्दीटीका सहित

इसकी 'प्रभा' तथा 'दर्पण' नाम की श्रेयस्कर दो टीकाओं में परीक्षोपयोगी विषयों का विवेचन निराले ढंग से किया गया है। सर्वत्र 'प्रभा' व्याख्या से मूल के वास्तविक अर्थों को तथा 'दर्पण' से विशेष २ अर्थों को विस्तृत रूप से दर्शाया गया है एवं शारीरिक शब्दों के पर्याय दे देने से तथा प्रति अध्याय के अन्त में प्रश्नसंग्रह के रखने से इस संस्करण की उपादेयता अति सौन्दर्यान्वित हो गई है। प्रथम एवं द्वितीय संस्करण अल्प समय में ही बिक गये। तृतीय संस्करण मूल्य ४-००

शिलाजीत विज्ञान

(Chemistry of Asfalium Panjainum and its Medical Application)

'शिलाजीत-विज्ञान' में भेदोपभेद एवं सूक्ष्म विश्लेषण सहित शिलाजीत का विशद परिचय, शोधन, परीक्षण, सामान्य और विशेष प्रयोग-विधि, शिलाजीत से निर्मित होनेवाले कुछ महत्त्वपूर्ण अनुभूत योग, कुछ विशिष्ट रोगों में शिलाजीत प्रयोग की चमत्कारिता आदि सब ज्ञातव्य विषयों का समावेश है। यह एक ही औषधि अनुपान भेद से अनेक व्याधियों को नष्ट कर सकती है। ऐसी उपादेय औषधि का सामान्य एवं विशेष ज्ञान प्राप्त करना मनुष्यमात्र के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण है और वह इसी एक पुस्तक से भलीभाँति प्राप्त हो सकता है। ०-७५

रसशास्त्र विषयावरील अभिनव ग्रन्थ—

+ रस धातु प्रकाश (१-२ भाग संस्कृत-मराठी)

पंचकर्म युक्त अभिनव चिकित्सा। वैद्य दा० मुले मूल्य १४-००

हिन्दी कामसूत्र

(The Most Authentic Work on Indian Erotics)

(जयमंगला संस्कृत टीका हिन्दी व्याख्यान सहित)

व्याख्याकार : **पं० देवदत्त शास्त्री**

यूरोप में कामशास्त्र एवं कामसूत्र पर लगभग एक शती से लगातार अत्यधिक चिन्तन तथा अनुशीलन किया गया है। भारत में वात्स्यायन-कामसूत्र पर अब तक संस्कृत की सर्वमान्य जयमंगला टीका ही अपना स्थान बनाए हुए है, हिन्दी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में कामसूत्र पर अभी तक व्यवस्थित, वैज्ञानिक ढंग से व्याख्या के साथ कोई नवीन चिन्तन प्रस्तुत नहीं किया गया है। इस अभाव की पूर्ति की आशा कामसूत्र के इस अनुचिन्तन से हम कर रहे हैं। प्राच्य-पाश्चात्य यौनविज्ञान, मनोविज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए यह अनुशीलन धर्म, अर्थ, काम—इस त्रिवर्ग की विशद व्याख्या पर आधारित है। यह अनुशीलन उन आलोचकों के लिए चुनौती है जो कामसूत्र जैसे शास्त्र को अश्लील, अनुपयोगी कह कर उसकी उपेक्षा और निन्दा करते हैं।

डबल डिमाई आकार के लगभग १५०० पृष्ठों का यह महान् ग्रन्थ सुप्रसिद्ध जयमंगला टीका के साथ गहन, गंभीर अनुचिन्तन, समाजविज्ञान तथा मनोविज्ञान पर आधारित है। छपते ही सैकड़ों प्रतियाँ हाथों-हाथ विक गईं। मूल्य १६-००

इ. मे. बोर्ड यू. पी., आयुर्वेद विद्यापीठ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा पाठ्य-स्वीकृत

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत—

सौश्रुती

(संशोधित परिवर्धित तृ० संस्करण)

(A comprehensive Treatise on ancient Indian Surgery mainly based on the classical medical work Sushruta Srmhita)

आयुर्वेदबृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.

चिकित्सक तथा अध्यापक, आयुर्वेद कालेज हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

प्राचीन शल्यतन्त्र (सर्जरी) पर लिखा हुआ यह विशद ग्रन्थ नाना दृष्टियों से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस विषय की जो सामग्री प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में बिखरी पड़ी है उस समस्त सामग्री को आधुनिक विज्ञान के आलोक में देखने का अथक प्रयास इस पुस्तक में किया गया है। साधारण पाठक भी इससे शस्त्रकर्म विज्ञान का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस विषय में जो नित-नई वैज्ञानिक खोजें हो रही हैं उनके परिणाम भी इस संस्करण में बढ़ा दिए गए हैं।

तृतीय संस्करण मूल्य १०-००

स्वास्थ्यसंहिता-हिन्दीटीका सहित

(An Anthology of Health and Hygiene)

आयुर्वेदाचार्य कविराज नानकचन्द्र वैद्यशास्त्री

नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ परीक्षा के छात्रों के लिए यह अनिवार्य पाठ्य पुस्तक है। 'स्वास्थ्य विज्ञान' के प्रश्नों का इस पुस्तक में सरल, स्पष्ट तथा विस्तृत विवेचन किया गया है। दीर्घजीवनार्थ अनेक उपायों के वर्णन इस पुस्तक में आपको देखने को मिलेंगे। अवश्य अवलोकन करें। परिष्कृत चतुर्थ संस्करण। मूल्य २-५०

वैद्यकपरिभाषाप्रदीपः

(A Book of Ayurvedic Terminology)

नवीन 'प्रदीपिका' नामक विस्तृत हिन्दी टीका सहित।

आयुर्वेदाचार्य श्री प्रयागदत्त जी जोषी ने इसकी अत्यन्त सरल हिन्दी टीका लिखी है। यह प्रदीपिका आपको शास्त्र तथा व्यवहार में मार्गदर्शक होगी।

तृतीय संस्करण १-५०

इ० मेडिसिन बोर्ड यू० पी०, आयुर्वेद विद्यापीठ, हि० सा० सम्मेलन आदि
अनेक आयुर्वेदिक शिक्षा संस्थाओं द्वारा स्वीकृत—

यू० पी० गवर्नमेंट आयुर्वेद एण्ड तिब्बी एकाडेमी द्वारा पुरस्कृत

शालाक्यतन्त्र (निमितन्त्र)

(A Comprehensive and Comparative Study of the Diseases of the Eye, Ear, Nose, Throat, Head and Nasal Accessary Sinuses based on Classical Medical Literature)

आयुर्वेदबृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.,

पुस्तक की भूमिका में ऐतिहासिक दृष्टि से विषय के विकास का विवेचन किया गया है। फिर पूरी पुस्तक को पाँच भागों में विभक्त किया गया है जिनमें क्रमशः नासिका, शिर, कान, मुंह और आँखों के रोगों के हेतु, निदान, सम्प्राप्ति आदि की विस्तृत विवेचना की गई है। विवेचना करते समय आधुनिक विज्ञान-सम्मत निदान और चिकित्सा आदि के साथ प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त इन्हीं विषयों से तुलना की गई है और मतभेदों तथा उनके कारणों पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है। विषय से सम्बन्धित कोई विषय छूटा नहीं है। पुस्तक आयुर्वेद के विद्यार्थियों के लिये जहाँ अत्यधिक उपयोगी हो गई है वहीं आधुनिक चिकित्सा के मर्मज्ञों के लिये भी विशेष अध्ययन-मनन की वस्तु बन गई है।

चिकित्सकों की सुविधा के लिये बहुत से अनुभूत योगों और सद्यः लाभप्रद ओषधियों का यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है। साथ ही अन्त में वर्तमान चिकित्सा में व्यवहृत होने वाले योगों का बृहत् संग्रह भी जोड़ दिया गया है।

इस प्रकार यह पुस्तक आयुर्वेद में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है तथा आयुर्वेद के विद्यार्थियों, चिकित्सकों, आधुनिक ढंग के चिकित्सा प्रेमियों और प्राचीन शास्त्रीय पद्धति के जिज्ञासुओं के लिये समानभाव से उपयोगी है।

पुस्तक बहुत ही सुन्दर बेजोड़ छपी है। द्वितीय संस्करण मूल्य ६—००

भिषक्-कर्म-सिद्धि

(A Treatise on Successful Ayurvedic Treatment)

डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम्. एस.

यह आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति की उत्कृष्टतम रचना है। लेखक ने इस विषय को इतना व्यवस्थित एवं उपयोगी बनाया है कि यह पुस्तक आयुर्वेद के परीक्षार्थी, अध्यापक तथा चिकित्सक वर्ग के लिये समान भाव से उपयुक्त सिद्ध होती है।

चिकित्सा के क्षेत्र में नित्य व्यवहार में आने वाले औषधि तथा अनुभूत योगों का विस्तृत संकलन इस पुस्तक मे प्राप्त होता है। साथ ही रोगों के सम्बन्ध में पृथक्-पृथक् उनका संक्षिप्त निदान, चिकित्सा के सूत्र, सूत्रों की विशद व्याख्या भी संक्षेपतः संगृहीत है। प्रत्येक रोग पर छोटी से बड़ी तक, कम कीमत से लेकर मूल्यवान् औषधियों तक के योगों का संकलन प्राप्त होता है। इस पुस्तक के विशाल योगसंग्रह में से किसी एक योग या औषधि का रोग की तीव्रातीव्रता के अनुसार स्वल्प या अधिक मात्रा में प्रयोग करते हुए चिकित्सक अपने कार्य में पूरी सफलता प्राप्त कर सकता है।

जहाँ व्यावहारिक दृष्टि से यह सामान्य चिकित्सक के लिये उपयोगी है, वहीं शास्त्र के गहन सिद्धान्तों की भी विवेचना प्रस्तुत करती है। पूरी पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है, सामान्य निदान, चिकित्साबीज तथा विशिष्ट चिकित्सा खण्ड। इस तरह सर्वाङ्गपूर्ण इस पुस्तक को देख कर यदि सम्पूर्ण कायचिकित्सा विषय का सार कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। मूल्य २०-००

काश्मीर के प्रसिद्ध कवि दामोदर गुप्त कृत

+ कुट्टनीमतम्

हिन्दी अनुवाद सहित

अनुवादक : अत्रिदेव विद्यालङ्कार

संस्कृत वाङ्मय में वेश्याओं का विशेष स्थान है; बहुत से राजपुत्रों ने इनसे लोक-शिक्षण प्राप्त किया था। जिस प्रकार शिष्य को आचार्य की आवश्यकता है, उसी प्रकार वेश्या को कुट्टनी की जरूरत है। कुट्टनी ही वेश्या को लोक-व्यवहार बताती है। एक कुट्टनी ने मालती नामक वेश्या को किस प्रकार उसके कार्यों की शिक्षा दी, यह सब इसमें विस्तार से वर्णित है। अपने विषय की यह अनुपम पुस्तक है। पुस्तक हाथ में लेकर छोड़ने को दिल नही चाहता। मूल्य ६-००

सूचीवेध-विज्ञान

(Injection Therapy)

डा० राजकुमार द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य

आयुर्वेद में सूचिकाभरण का वर्णन स्थल स्थल पर आया है किन्तु इसका विशद वर्णन नहीं है। इसमें आज तक की आविष्कृत परीक्षित तथा सभी उपयोगी सिद्ध ओषधियों का वर्णन है। यह अपने विषय की एक अद्वितीय पुस्तक सिद्ध हो चुकी है। द्वितीय संस्करण भी हाथों हाथ बिक गया। तृतीय परिवर्द्धित संस्करण मूल्य २-५०

रत्नविज्ञान

(Gemology)

डॉ० राधाकृष्ण पाराशर

वैद्यों, हकीमों, ज्योतिषियों तथा जौहरियों की कर्मसिद्धि रत्नोपरत्नों के यथार्थ परिज्ञान पर ही निर्भर है। ख्यातनामा लेखक ने लगातार २० वर्षों तक न केवल भारत अपितु संपूर्ण विश्व के विशिष्ट वैद्यों, ज्योतिषियों, जौहरियों, भूगर्भविज्ञानवेत्ताओं, राजदरबारों, प्राचीनतम प्राच्यपाश्चात्य ग्रंथों, हस्तलिखित पोथियों, खानों, पर्वतों, नदियों आदि से संपर्क स्थापित कर इस विषय का जो सम्यग्ज्ञान प्राप्त किया तथा स्वयं चिकित्सक एवं दैवज्ञ होने के नाते कर्माभ्यास वश जो सिद्ध अनुभव प्राप्त किये उन्हीं सब का सुसंयोजित एवं व्यवस्थित रूप प्रस्तुत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में प्रत्येक रत्न का अध्याय इन शीर्षकों में विभाजित किया गया है—१. विभिन्न प्रान्तीय एवं विदेशीय भाषापरक पर्याय, २. भारतीय तथा विदेशीय उद्भवक्षेत्र, ३. ऐतिहासिक महत्त्व, ४. वैज्ञानिकों की एतद्विषयक भावना, ५. कृत्रिम निर्माण, ६. असली और नकली में अन्तर, ७. भेद-निदर्शक सारिणी, ८. निर्णयात्मक परीक्षण, ९. कठोरता, आपेक्षिक गुरुत्व, द्विवर्णत्व, रासायनिक संयोजन, १०. गुणधर्म, ११. अचिन्त्य प्रभाव, १२. प्राच्य-पाश्चात्य ज्योतिष शास्त्रानुसार उपादेयता, १३. शोधन, १४. भस्मीकरण, १५. रोगों में उपयोग एवं मात्रा, १६. शास्त्रीय योग, इत्यादि।

जिज्ञासुओं को वरदानस्वरूप इस प्रामाणिक ग्रन्थरत्न की प्रति अवश्य सुरक्षित करा लेनी चाहिए। यन्त्रस्थ

हिन्दी प्रत्यक्षशारीर

(An Illustrated Work on Anatomy in Hindi)

कविराज गणनाथ सेन

संस्कृत में मानव शरीर-रचना-विज्ञान विषय पर श्री गणनाथ सेन जी ने बड़े श्रम से प्रत्यक्ष-शारीरम् नामक सचित्र ग्रन्थ लिखकर आयुर्वेद के छात्रों एवं अध्यापकों का परम हित किया है। उसी ग्रन्थ का अविकल हिन्दी अनुवाद 'हिन्दी प्रत्यक्षशारीर' है। अनुवाद, चित्र, विषय-विन्यास आदि में सर्वथा मूल ग्रन्थ का ही क्रम सुरक्षित रखा गया है। अनुवाद की भाषा विषय तथा छात्रों के स्तर के सर्वथा अनुकूल है। अँगरेजी शब्दों का स्पष्टीकरण टिप्पणी में किया गया है। प्र० भाग १०-०० द्वि० भाग १५-०० १-२ भाग मूल्य २५-००

सिद्धान्तनिदानम् (सचित्र)

(A Text Book of Etiology, Pathology and Symptomatology of Diseases) (in Sanskrit)

कविराज गणनाथ सेन

आयुर्वेद पढ़नेवाले छात्रों को पहले निदान पढ़ना ही आवश्यक होता है जो शरीरविज्ञानमूलक दोष-दूष्यादि-विवरण जाने विना ठीक नहीं समझा जा सकता। म० म० श्रीगणनाथसेन शर्माजी ने छात्रों के लाभार्थ उक्त विषय पर एक मूल्यवान् ग्रन्थ की रचना कर उसकी संस्कृत टीका भी विरचित की जो यह 'सिद्धान्तनिदानम्' रूप में प्रकाशित किया गया है। आयुर्वेद के छात्रों तथा अध्यापकों का इस ग्रन्थ से बड़ा उपकार होगा। प्र० भाग ७-०० द्वि० भाग ७-००
१-२ भाग मूल्य १४-००

+ चिकित्सा-रत्न

इस उपयोगी ग्रन्थ में आयुर्वेदीय और एलोपैथिक पद्धति से सचित्र शरीर-विज्ञान, निघण्टु, प्राचीन और अर्वाचीन माप, वात-पित्तादि दोष, उनके प्रकार, स्थान और कार्य, पुरुषों, स्त्रियों एवं बच्चों के सभी रोगों के निदान, लक्षण तथा आयुर्वेदीय एवं एलोपैथिक पद्धति से चिकित्सा, पेटेण्ट मेडिसिन्स, इन्जेक्शन्स, सहस्रशोऽनुभूत सैकड़ों योग, पेनिसिलिन और स्ट्रैप्टोमाइसिन, स्टेथिस्कोप, थर्मामीटर, डूस, पंचनिदान, अष्टपरीक्षा आदि सभी आवश्यक बातों का पर्याप्त ज्ञान एक ही स्थान पर स्पष्ट दर्शाया गया है। आधुनिक प्रचलित रोग, विटामिन्स, उनकी कमी से होने वाले रोग, आहार-तालिका, नाक, कान, आँख, जख्म धोने आदि के घोल तथा इंजेक्शन-निर्माण आदि के साथ ही सैकड़ों अनुभूत प्रयोग और शास्त्रोक्त योग दिए गये है। ५०४ पृष्ठों का सजिल्द तृतीय संस्करण ६-००

+ शल्यतंत्र में रोगी परीक्षा
(Clinical Methods in Surgery)

डा० पी. जे. देशपाण्डे
सहायक—डा० रमानाथ द्विवेदी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के योग्य, अनुभवी एवं उभयज्ञ अध्यापकों ने हिन्दी भाषा में इस पुस्तक को लिखने का प्रयास किया है। 'माडर्न सर्जरी' नामक विषय का क्षेत्र बृहद् एवं विशाल है, एक छोटी सी रचना में सम्पूर्णतः उसका वर्णन सर्वथा असम्भव है तथापि वैज्ञानिक दृष्टि से अभिनव शल्यतन्त्र के मूल-भूत तत्वों का संकलन इस पुस्तक में कर दिया गया है। पुस्तक के लेखक डा० देशपाण्डे गत कई वर्षों से पुस्तक सम्बन्धी विषय का पाठ विद्यालय के छात्रों को कराते आ रहे हैं एवं श्री द्विवेदी प्राचीन शल्यतन्त्र विषय के अध्यापक हैं। इन दोनों व्यक्तियों के सम्पूर्ण ज्ञान, अनुभव एवं प्रत्यक्ष कर्माभ्यास का बहुत कुछ सारांश पुस्तक के रूप में पाठकों के सम्मुख है। पुस्तक को सरल, बोधगम्य और सरस बनाने के लिये सभी प्रकार के प्रयत्न लेखकों ने किये हैं। रचना में भाषा एवं भावों का सामंजस्य देखते ही बनता है। धारा-प्रवाह भाषा का स्रोत इस प्रकार बहता हुआ मिलता है कि पाठकों को पढ़ने से 'क्लासिक' का और श्रोताओं को सुनने से 'क्लास लेक्चर' का आनन्द आता है। फलतः माडर्न सर्जरी के नैदानिक भाग के ज्ञान के लिये यह अनुपम रचना बन गई है।

डिमाई ८ पेजी, पृष्ठसंख्या २०० से अधिक, कागज सफेद मोटा, टाइप नया, सजिल्द मूल्य ७–००

त्रिदोष-विज्ञानम्
(A Comprehensive Discussion on the three basic Elements of Human Physique)

हिन्दी व्याख्या सहित
ले० श्री उपेन्द्रनाथ दास भिषगाचार्य

आयुर्वेद का सिद्धान्त है कि दोष के बिना रोग नहीं हो सकता। रोग की चिकित्सा दोषानुसार ही की जाती है। वात, पित्त और श्लेष्मा नामक तीन दोष ही शारीरिक रोगों के जनक हैं। विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक में इन तीनों दोषों का विशद विवेचन दस अध्यायों में किया है। प्रायः सभी आयुर्वेदिक कालेजों में यह पुस्तक पाठ्य स्वीकृत है। सर्वसाधारण चिकित्सक इस संस्करण के हिन्दी रूपान्तर से अधिक लाभान्वित होंगे। चतुर्थ संस्करण मूल्य ४–००

शल्य-प्रदीपिका (सचित्र)

(A Short Text Book of Surgery)

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा बी. एस्. सी., एम. बी. बी. एस्.
भूतपूर्व प्रिंसिपल तथा सर्जन, आयुर्वेदिक कालेज, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

मोटा कागज, मनोरम पक्की जिल्द, चित्र संख्या २९५,

पृष्ठ संख्या ७६८ मूल्य १५-००

'शल्य' आयुर्वेद का महत्त्वपूर्ण अंग है। पाश्चात्य देशों के अनवरत अनुसन्धानों ने इस विज्ञान को कितना समुन्नत बना दिया है एवं किस प्रकार हम इससे लाभान्वित हो सकते हैं, इन सबका ज्ञान प्राप्त करना यद्यपि आवश्यक है किन्तु अब तक हिन्दी में इसके लिये कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ था। विद्वान लेखक ने इस आवश्यकता को समझते हुए अपने ३० वर्षों के अध्यापन एवं चिकित्सा कार्य के प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर राष्ट्रभाषा में प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की है। इसमें जीवाणुवाद, जीवाणु द्वारा होने वाले संक्रमण का नाश, विद्रधि, व्रण, शरीर के अनेक भागों में पूयोत्पत्ति तथा उसकी अनेकविध चिकित्सा, पट्टियाँ बाँधना, प्लास्टर चिपकाना, रक्तप्रवाह, विभिन्न प्रकार के घाव, आगन्तुक शल्य, लघुशस्त्र-कर्म, पैरिस-प्लास्टर, अस्थिभग्न, पर्यावरणार्ति, उण्डुकार्ति, पित्ताशयार्ति, बद्धान्त्र, हार्निया, मलाशय और गुदा के रोग, पुरस्थ ग्रन्थि और मूत्रमार्ग आदि के प्रायः सभी रोगों के उद्गम, निराकरण, विविध प्रकार के सूचीवेध तथा छेदन आदि द्वारा उन सबकी अनेकविध चिकित्सा आदि का वर्णन है। यह सब ज्ञान-भण्डार विषयानुसार २२ परिच्छेदों में विभक्त है। प्रत्येक विषय के प्रतिपादन के प्रसङ्ग पर नवीनतम मतों एवं विधियों का विस्तृत वर्णन है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि विद्वान् लेखक का सुदीर्घकालीन अध्ययन एवं अनुभव ही प्रस्तुत ग्रन्थ में एकत्र भरा हुआ है। शल्य-विषयक सम्पूर्ण जानकारी के लिए तथा चिकित्साक्रम को वैज्ञानिक एवं सुलभ बनाने के लिये प्रत्येक विद्यार्थी, शिक्षक एवं चिकित्सक के लिये इस प्रकार का परमोपयोगी कोई दूसरा ग्रन्थ हिन्दी में नहीं है। डाक्टर साहब इस विषय के माने हुए विद्वान् हैं। आपकी सुगम एवं प्रवाहयुक्त शैली वैज्ञानिक विषयों को भी सहज ही बोधगम्य बना देती है। विश्वास है चिकित्सक समाज में लेखक की अन्य कृतियों के समान ही शल्य-प्रदीपिका का समादर होगा।

रोग-परिचय (सचित्र)

(Clinical Medicine)

(शोधपूर्ण तृतीय संस्करण)

डा० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस., पी. एच. डी.

इस उपयोगी पुस्तक में चिकित्सकों एवं विद्यार्थियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए रोग के सुगम बोधनार्थ चित्रों तथा तालिकाओं सहित सरल हिन्दी भाषा में सुन्दर ढंग से विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इसमें रोगों की व्याख्या, वर्णन, कारण, मरक-विज्ञान (Epidemiology), निदान, चिकित्सा आदि विषय आठ खण्डों में प्रतिपादित किये गये हैं। औपसर्गिक रोग (Tropical & infectious diseases), विविध प्रकार के रक्त-रोग, स्त्री-रोग, अन्तःस्रावी ग्रन्थियों (Endocrines) के रोग, पचन-रक्तवह-मूत्र-वात-नाड़ी-संस्थानों के रोग, जीवतिक्तियाँ (Vitamins), पारिभाषिक शब्दकोष (Terminology), परिमाण तथा नवीन व प्रचलित औषधियों का वर्णन तालिका (Charts) के रूप में किया गया है।

तृतीय संस्करण की विशेषताएँ

इस संस्करण में भाषा को यथासाध्य सरल कर उसे सर्वजनबोध्य बनाने का प्रयत्न किया गया है। प्रायः सभी विषयों में आमूल संशोधन कर नवीन वैज्ञानिक शोधों के आधार पर निदान एवं चिकित्सा की नवीन और प्राचीन पद्धतियों में समन्वय कर विषय में अधिक से अधिक स्पष्टता लाई गई है। नवीन अनुभवों के आधार पर बहुत-कुछ विषय भी बढ़ा दिए गए हैं।

इस दृष्टि से निःसन्देह यह संस्करण द्वितीय संस्करण की अपेक्षा छात्रों, अध्यापकों एवं चिकित्सकों के लिए समानरूप से अधिक उपादेय हो गया है।

पृष्ठसंख्या ८३२, मूल्य १५-००

+ रोग-निवारण

(Allopathic and Ayurvedic Treatment of Various Diseases)

डा० शिवनाथ खन्ना, एम. बी. बी. एस., पी. एच. डी.

इस पुस्तक में प्रधान रूप से आधुनिक (Allopathic) तथा गौणरूप से प्राचीन (Ayurvedic) चिकित्सा का विस्तारपूर्वक सरल भाषा में वर्णन किया गया है। चिकित्सा-सम्बन्धी क्रियायें—जैसे इन्जेक्शन सेलाइन, एनिमा आदि का चित्रोंसहित वर्णन है। पुस्तक ४ भागों में विभाजित है।

प्रथम भाग में चिकित्सा-सम्बन्धी क्रियाओं का वर्णन किया गया है, जैसे—इन्जेक्शन लगाना, लम्बरपंकचर (Lumbar Puncture) करना सेलाइन (Intravanus Saline) देना आदि।

द्वितीय भाग में औषधियों का प्रयोग, मात्रा, विषाक्तता आदि का वर्णन है।

तृतीय भाग में ऐलोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार रोगों की चिकित्सा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है तथा आवश्यकतानुसार आयुर्वेदिक चिकित्सा भी संक्षेप में दी गई है। रोगों की चिकित्सा के साथ-साथ रोगों के प्रधान लक्षण तथा निदान का भी संक्षेप में वर्णन किया गया है।

चतुर्थ भाग में औषधियों का प्रभाव तथा प्रयोग के अनुसार तालिका के रूप में संग्रह और औषधियों की मात्रा तथा प्रयोग की विधियों का वर्णन है।

कागज, छपाई, गेटअप आदि आधुनिकतम, पृष्ठसंख्या १०५० मूल्य १५–००

+ शारीरं तत्त्वदर्शनम् नाम वातादिदोषविज्ञानम्

(Philosophy of the three basic Elements of Human Physique)

'समीक्षा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहितम्

लेखकः श्री पुरुषोत्तमशर्मा वैद्य

प्रस्तुत ग्रंथ के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में कुल २४ अध्याय ('दर्शन') हैं जिनमें प्राचीन आयुर्वेद के मार्मिक विद्वान् ने 'शारीर' विषयक उच्च कोटि का शास्त्रीय एवं दार्शनिक विवेचन श्लोकबद्ध करके स्वयं संस्कृत व्याख्या भी प्रस्तुत की है। भारतीय आयुर्वेदिक शिक्षण समिति के विद्वान् कार्याध्यक्ष श्रीहरिहरशर्मा वैद्य द्वारा सरल हिन्दी व्याख्या भी प्रस्तुत की गई है। पाण्डित्यपूर्ण भूमिका, गद्य-पद्यमयी प्रशस्तियों तथा परिशिष्ट से ग्रंथ अलंकृत है। कागज, मुद्रण आदि सब उत्कृष्ट हैं। विद्वानों को यह ग्रन्थ अवश्य देखना चाहिए। मूल्य ६–००

+ नवपरिभाषा

(Ayurvedic Terminology)

कविराज उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दी टीका सहित। आधुनिक काल में प्राच्य पाश्चात्य मानादि विषयक झटिति ज्ञान प्राप्त कराने के लिये लेखक ने इस नव-परिभाषा का निर्माण किया है। इसमें प्राचीन सिद्धान्तों की रक्षा करते हुये नव्य मत से सन्तुलना की गयी है। द्वितीय संस्करण मूल्य १-७५

+ रसेन्द्रसारसंग्रह

(Ayurvedic Chemotherapy)

वैद्य घनानन्द कृत संस्कृत हिन्दी टीका सहित

रस-विषयक इस सर्वोपरि ग्रन्थ पर अधिकारी वैद्य विद्वान् द्वारा अभिनव संस्कृत टीका की गई है जिसमें पद-पदार्थ बहुत ही स्पष्ट है तथा हिन्दी अनुवाद भी सरल व्यावहारिक भाषा में दिया गया है। प्राचीन-नवीन चिकित्सा-पद्धतियों के समन्वय तथा स्वानुभव से संवलित होने के कारण आधुनिक वैद्यों के लिये यह संस्करण बड़ा उपयोगी है। १-२ भाग मूल्य ११-००

सचित्र क्रियात्मक औषधि परिचय विज्ञान

(Practical Pharmacognosy in Ayurveda)

श्री विश्वनाथ द्विवेदी

आयुर्वेद में ओषधियों के परिचय का महत्त्व तो प्रतिपादित किया गया और निघण्टुओं ने इसके लिए अनेक पर्यायों का भी निर्माण किया किन्तु अभी तक उसके क्रियात्मक रूप का स्वरूप निर्धारित नहीं हुआ था जिसके कारण असली-नकली की पहचान असंभव सी थी और जिसका लाभ उठाकर अनेक नकली ओषधियां असली को स्थानान्तरित करने लगी थीं। विद्वान् और अनुभवी लेखक ने अपने वर्षों के अनुसन्धान के फलस्वरूप इस विषय को नया वैज्ञानिक रूप दिया है जिससे ओषधियों के परिचय में बड़ी सहायता मिलेगी। आयुर्वेदिक कॉलेजों, स्नातकोत्तर शिक्षणसंस्थाओं तथा अनुसन्धानकेन्द्रों के लिए यह पुस्तक अतीव उपयोगी और संग्रहणीय है। मूल्य १२-००

+ स्वस्थवृत्तसमुच्चयः

(An Anthology of Important Sayings from Classical Medical Literature)

चरकाचार्य श्री राजेश्वरदत्त शास्त्री प्रणीत हिन्दी टीका सहित

यह ग्रन्थ भारतवर्ष के समस्त आयुर्वेद कालेजों में पाठ्य ग्रंथ रूप में स्वीकृत है ७-००

पञ्चभूतविज्ञानम्

(A Philosophical Discussion on the Hindu Theory of Five Elements)

कविराज श्री उपेन्द्रनाथ दास भिषगाचार्य

त्रिदोष-सिद्धान्त आयुर्वेद का जीवन है, पाञ्चभौतिक सिद्धान्त उसका मूल स्वरूप है। इन दोनों सिद्धान्तों का लुप्त होना आयुर्वेद का लुप्त हो जाना है। आधुनिक विज्ञानवादियों ने प्राचीन ऋषियों द्वारा वर्णित पाञ्चभौतिक सिद्धान्तों पर जो कुठाराघात किया है उससे प्राचीन शास्त्रों पर आस्था रखनेवाले भी पांचभौतिक सिद्धान्त की सत्यता पर सन्देह करने लग गए हैं, आयुर्वेद-जगत् के इस संकट को दूर करने, तथा पूर्व और पश्चिम का भेद मिटाने की दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हुई है। इससे प्राचीन एवं आधुनिक तन्त्रकारों के युक्ति, तर्क, प्रयोग आदि सिद्ध सिद्धान्तों को लेकर पञ्चभूत के विषय में सब मतों में सामञ्जस्य स्थापित करने का सफल प्रयास किया गया है। विवेचन यद्यपि दार्शनिक है किन्तु भाषा इतनी सरल और व्यावहारिक है कि साधारण पठित व्यक्ति भी प्रतिपाद्य विषय को सरलतापूर्वक हृदयङ्गम कर सकता है। प्रस्तुत द्वितीयावृत्ति में कुछ परिवर्तन परिवर्द्धन भी किया गया है। आयुर्वेद-प्रेमी छात्राध्यापकों के लिये यह उपादेय ग्रन्थ अवश्य संग्रहणीय है। मूल्य ४-००

+ पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन विज्ञान तथा मूत्र परीक्षा

(Penicillin, Streptomycin and Urine Examination)

इसमें पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन की उत्पत्ति, निर्माण, योग, व्यवहार तथा दुष्परिणामों का विशद वर्णन है। साथ ही सल्फा श्रेणी की ओषधियों की नामावली तथा मूत्र परीक्षा का वर्णन भी सरल भाषा में स्पष्ट रूप से किया गया है। मूल्य १-२५

+ अनुभूतयोग चर्चा

श्री पं० वन्सरी लाल साह्नी आयुर्वेदाचार्य

इस पुस्तक में प्रायः सभी प्रकार के रोगों के नाश करने के लिए थोड़ी लागत के सस्ते तथा सर्वसुलभ द्रव्यों से बनाये जा सकने वाले सरल सिद्ध तथा अनेक अनुभूत योग (नुस्खे) दिये गये हैं। गुप्त रोगों की चिकित्सा भी हृदय खोल कर स्पष्ट रूप से लिखी गई है। सरल हिन्दी भाषा में होने से यह पुस्तक सर्वसाधारण के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य १-२ भाग ६-००

रस-कौमुदी

(Medical Application of Mercury)

भिषग्वर ज्ञानचन्द्र शर्मा विरचित इस प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ में संक्षिप्त रूप से पारद-सम्बन्धी सभी चिकित्सोपयोगी योगों पर उत्तम प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ के परिशोधनादि संस्कार उत्तम रीति से करके हिन्दी व्याख्या भी प्रस्तुत की गई है जिससे यह संस्करण वैद्यों तथा आतुरों के लिये बहुत उपयोगी हो गया है। मूल्य १-५०

आयुर्वेदीय-यन्त्रशस्त्र-परिचय

(Ayurvedic Surgical Instruments)

आयुर्वेदाचार्य पं० सुरेन्द्र मोहन बी० ए०

यह द्वि० संस्करण लगभग १०० चित्रों से सुसज्जित प्राचीन तथा अर्वाचीन यन्त्रों और शस्त्रों के आकार तथा उपयोग विधि का पूर्ण बोध कराता है। इस के अध्ययन से वैद्य शल्य कर्मों में प्रवृत्त हो सकते हैं। आधुनिक शल्यशास्त्र के प्रमाण देकर प्राचीन शल्यतन्त्रों की तुलना तथा आलोचना की गई है। मूल्य १-७५

आयुर्वेदशास्त्राचार्य श्री पं० विश्वनाथ द्विवेदी रचित पुस्तकें—

+ नेत्ररोगविज्ञान (A Comprehensive and Comparative Treatise on the Eye Diseases) । (सचित्र) इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा पाठ्य स्वीकृत १५-००
+ वैद्य सहचर (A Comprehensive Guide for Ayurvedic Practioners) लेखक के ४० वर्ष के लाभप्रद सिद्धयोगों का संग्रह ३-००

कविराज गणनाथ सेन रचित पुस्तकें—

+ प्रत्यक्ष शारीरम् (संस्कृत) प्रथम भाग यन्त्रस्थ, तृतीय भाग यन्त्रस्थ
  द्वितीय भाग — ६–७५

  प्रत्यक्ष शारीर (हिन्दी) प्रथम-द्वितीय भाग — २५–००

  सिद्धान्तनिदान (संस्कृत) प्रथम-द्वितीय भाग — १४–००

+ संज्ञापंचक विमर्श। — ३–००

+ Hindu Medicine — 1–25

डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर रचित एवं प्रकाशित पुस्तकें—

+ औपसर्गिकरोग (Infectious Diseases) इस संशोधित परिवर्धित द्वितीयावृत्ति में रोगों का क्रम संस्थानों के अनुसार बदल दिया है, अनेक नये रोग समाविष्ट किये गये हैं। विषयों तथा रोगों का विवरण तथा प्रतिपादन बहुत अधिक विस्तार के साथ किया गया है।
  प्रथम भाग नेट १०–०० द्वितीय भाग १२–००

+ रक्त के रोग (Disorders of Blood and Allied Disorders) औपसर्गिक रोगों के समान यह ग्रन्थ भी अत्यन्त परिश्रम पूर्वक लिखा गया है। प्रथम अध्याय में रक्त का सम्पूर्ण विवरण, द्वितीय अध्याय में विविध रोगों के कारण रक्त परिवर्तन का विस्तृत विवरण, तृतीय अध्याय में हेतुकी, सम्प्राप्ति, शारीरिक विकृति, निदान, प्राग्ज्ञान, चिकित्सा इत्यादि की दृष्टि से रक्त तथा रक्त सम्बन्धी सम्पूर्ण रोगों का समष्टि रूप से वैश्लेषणिक विहङ्गावलोकन तथा चतुर्थ अध्याय में रक्त, प्लीहा, लसग्रन्थियों एवं रक्तक्षयकर अन्य रोगों का स्वतन्त्र वर्णन किया गया है। नेट १०–००

+ जीवाणु–विज्ञान। इस पुस्तक में तृणाणु (Bacteria) कीटाणु, (Protozoa), विषाणु (Virus) इत्यादि जीवाणुओं की विभिन्न श्रेणियों का विवरण, उनके प्रकार, उनसे उत्पन्न होने वाले रोग और उनकी सम्प्राप्ति तथा चिकित्सा इत्यादि विषयों का समावेश किया गया है। तृ० संस्करण १३–००

+ मूत्र के रोग (Diseases of Urine, Urinary System and Allied Diseases) नेट ६–००

+ आयुर्वेद शिक्षा पर विचार। भाषा — ०–४०

  स्वास्थ्य शिक्षा पाठावली। — ३–५०

वैद्यकीयसुभाषितसाहित्यम्

अथवा

साहित्यिकसुभाषितवैद्यकम्

(An Anthology of Didactic Savings on Health)

हिन्दी टीका सहित ।

संकलनकर्ता और व्याख्याकार : डॉ० भास्कर गोविन्द घाणेकर

इसमें आयुर्वेद के विविध ग्रन्थों से तथा श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास, काव्य, नाटक, चम्पू, सूत्रग्रन्थ, दर्शन, ज्यौतिष, व्याकरण, कोश एवं भाष्यादि विविध स्वरूप के ढाईसौ से अधिक ग्रन्थों से संकलित किये गये संपूर्ण गद्य-पद्य वचनों की संख्या ढाई हजार से अधिक है। इस ग्रन्थ के पढ़ने से पाठकों को मनोहारी संस्कृत साहित्यविश्व का मुखदर्शन होगा, साथ ही साथ शरीर स्वस्थ रखने के लिये आवश्यक आहार-विहारादि के नियमों का ज्ञान प्राप्त होगा। संस्कृत साहित्य में प्रौढ़ पाण्डित्य प्राप्त करने के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है २५-००

योगतरंगिणी संहिता

'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित

आयुर्वेद-साहित्य की यह बहुत प्रसिद्ध प्राचीन संहिता है। लोकोपकारके लिये प्राचीन विशालकाय संहिता ग्रन्थों से व्यवहारोपयोगी सार-संकलन करते हुए श्री त्रिमल्ल भट्ट द्वारा इस ग्रन्थ का निर्माण किया गया है। फलतः इसमें की चिकित्सा-व्यवस्था प्रामाणिक होने के साथ प्रायोगिक दृष्टि से सरल, निश्चित लाभकर तथा सभी स्तर के मानवों के लिये उपयुक्त है। रससिद्ध अनुभवी कविराज द्वारा इसकी सुविशद हिन्दी व्याख्या भी प्रस्तुत की गई है जो सरल, प्रवाहपूर्ण एवं स्पष्ट है; द्रव्यादि के ग्रहण एवं प्रयोग आदि में कहीं भी भ्रम सम्भव नहीं है। विचारपूर्ण बृहद् भूमिका, अनेक अनुक्रमणिकाएं आदि अनेक उपयोगी विषय भी दिए गए हैं। इस ग्रन्थ का हिन्दी व्याख्या युक्त यह सर्वश्रेष्ठ संस्करण है।

यन्त्रस्थ

डा० सुरेन्द्रनाथ गुप्त रचित पुस्तकें—

+ आपके बच्चे की खुराक (शिशु आहार व्यवस्था) ३–३७
+ गर्भवती स्त्री और प्रसवपूर्व व्यवस्था २–५०
+ यौनमनोविकार कारण और निवारण ३–५०
+ विटामिन और हीनताजनित रोग ४–००
+ विवाहित जीवन में यौन सम्प्रयोग ५–५०
+ सन्तति निरोध कब, क्यों और कैसे ? ४–००
+ नारी की यौन समस्यायें २–५० + परिवार नियोजन ०–२५
+ राजा बेटा कैसे बनायें ? श्रीमती पुष्पा सुरेन्द्रनाथ ३–००

कालेड़ा–बोगला की पुस्तकें—

+ चिकित्सा तत्त्वप्रदीप । प्रथम भाग अजिल्द १०–०० सजिल्द १२–००
द्वितीय भाग अजिल्द १०–०० सजिल्द १२–००
+ रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोग संग्रह । प्रथम भाग अजिल्द १०–००
सजिल्द १२–००
द्वितीय भाग अजिल्द ६–०० सजिल्द ८–००
+ धन्वन्तरिपूजा कथादर्श (भगवत् धन्वन्तरि के चित्र युक्त) ०–७५
+ सिद्ध परीक्षा पद्धति । प्रथम भाग ८–००
+ ज्वर विज्ञान । अजिल्द ३–०० सजिल्द ४–५०
+ गाँवों में औषध रत्न । प्रथम भाग रफ २–०० ग्लेज ३–५०
द्वि. भा. अ. ३–५० स. ५–०० तृतीय भाग अजिल्द ४–५० सजिल्द ६–००
+ औषध गुण धर्म विवेचन अजिल्द ३–०० सजिल्द ४–५०
+ संक्षिप्त औषध परिचय १–२५ + गृह विज्ञान ०–५०
+ भारतीय जनता का स्वास्थ्य तथा आयुर्वेद ०–७५
+ भूलोक में अमृत–गाय का दूध ०–७५
+ नित्योपयोगी चूर्णसंग्रह १–२५ + नित्योपयोगी क्वाथसंग्रह १–२५
+ नित्योपयोगी गुटिकासंग्रह २–००
+ रसतत्त्वविवेचन । हिन्दी टीका ३–५०

+ ज्वर विवेचन

(Diagnosis and Ayurvedic Treatment of Various Fevers)

अर्थात् (ज्वर निदान चिकित्सा)

पं० लीलाधर शर्मा शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

भूतपूर्व प्रिन्सिपल, आयुर्वेद कालेज, बीकानेर

इसमें विस्तारसे हेतु लिंगौषध ज्ञान अर्थात् कारण ज्ञान, लक्षण ज्ञान, औषध ज्ञान का वर्णन है। आयुर्वेदिक पद्धतिके साथ ही डाक्टरीसे तुलनात्मक विवेचनके साथ रोगोंका निदान, लक्षण, उपसर्ग, रोगोंका भावीफल, गति, समलक्षण रोगोंका प्रभेद विचार, प्रभेद निर्णय, वेदना निग्रह, स्थायी चिकित्सा, पथ्यापथ्य, थर्मामेटर ज्ञान, नाड़ी ज्ञान, श्वास ज्ञान, शरीर की लम्बाई, गुरुत्व, रोगपरीक्षाविधि, मूत्रपरीक्षा, मलपरीक्षा, दोष प्रधानता, क्वाथभेद निर्माण, गुण, गुरुपरंपरागत गुप्त सिद्धान्तके साथ नीचे लिखे रोगोंका वर्णन है। अष्टज्वर, सन्निपात ज्वर, विषम ज्वर, रात्रिज्वर, साप्ताहिक ज्वर, पंचाह ज्वर, नवाह ज्वर, मासिक, षाण्मासिक, वार्षिक ज्वर, दुर्जल ज्वर, प्रसूत ज्वर, सूतिका ज्वर, पूयज ज्वर, काला ज्वर, मोतीझरा, प्लेग, इन्फ्लुएंजा, निमोनिया, प्लूरिसि. गर्दनतोड़ ज्वर, शीतला ज्वर, उपद्रवरूपमें या स्वतंत्रतया श्वास, कास. मूर्च्छा, मृगी, हिस्टीरिया, सन्यास, अरुचि, वमन, हैजा, अतिसार. ग्रहणी, कृमिरोग, तृष्णा, कठोर कब्ज, हिचकी, अंगभंग, आध्मान, दाह, अनिद्रा, प्रलाप, अष्टशूल, परिणाम शूल, अश्मरी, शुक्राश्मरी. मूत्र पिंडकी पथरी, पित्ताश्मरी, ऋतुशूल, डिम्बकोषका स्नायुशूल, डिम्बकोषकी सूजन, सिकतामेह, मधुमेह, इन सबकी सद्यः फलप्रद चिकित्सा, स्थायी चिकित्सा आदिका आवश्यक वर्णन बड़े बड़े योग्य विद्वानोंके अनुभव के आधार पर लिखा गया है। यह पुस्तक चिकित्सा जगतमें अद्वितीय है। अभी तक राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखी हुई ज्वर चिकित्साके निमित्त ऐसी कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। यह पुस्तक साधारण वैद्य, चिकित्सक तथा विद्यार्थियोंको समान उपयोगी है। इसकी प्रशंसामें जितना वर्णन किया जाय थोड़ा ही है।

पृष्ठसंख्या ५००, कागज, टाइप, जिल्द आदि बहुत सुन्दर है। मूल्य १०—००

आयुर्वेदिक-यूनानी-एलोपैथिक-होमियोपैथिक-बायोकेमिक-प्राकृतिक चिकित्सा आदि पद्धतियों के संस्कृत-हिन्दी-बँगला-गुजराती-मराठी-अंग्रेजी भाषा में छपे ग्रन्थों का सूचीपत्र

पुस्तकों का आदेश देते समय इस सूचीपत्र की संख्या ४२, तथा पुस्तकों के नाम के साथ उनकी क्रमसंख्या एवं मूल्य का उल्लेख भी आदेशपत्र में अवश्य करें।

(जो पुस्तकें प्रायः बहुत समय से समाप्त हैं वे हटा दी गई हैं)

१ अंग्रेजी-हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी। (चौखम्बा मेडिकल डिक्शनरी) डा० अवध विहारी अग्निहोत्री। सम्पादक-डा० गंगासहाय पाण्डेय २०-००

२ अगद-तन्त्र। डॉ० श्रीरमानाथ द्विवेदी एम.ए., ए.एम.एस.। भाषा ०-७५

३ अगदतंत्र। प्रथम भाग-महाविष। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा ३-००

४ अगदतंत्र। द्वितीय भाग-उपविष। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा ५-००

५ अगदतंत्र। तृतीय भाग-वनस्पतिविष। द्रव्यगुण सहित। भाषा २-००

६ अंगूर के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-७५

७ अचार चटनी और मुरब्बा बहार। भाषा २-५०

८ अचूक चिकित्सा के प्रयोग। जानकी शरण वर्मा। भाषा २-५०

९ अजगर। रमेश वेदी १-५०

१० अजवायन के उपयोग। उमेदीलाल वैश्य। भाषा ०-३०

११ अजीर्णतिमिर भास्कर। भाषा ०-७२

१२ अजीर्णमंजरी। दत्तरामकृत हिन्दी टीका सहित ०-५४

१३ अञ्जननिदानम्। मथुराशंकर मिश्र कृत विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १-००

१४ अंजीर। रमेश वेदी। भाषा १-७५

१५ अण्ड (अन्त्रवृद्धि) चिकित्सा। कृष्णप्रसाद। भाषा ०-३७

१६ अदरख के उपयोग। उमेदीलाल वैश्य। भाषा ०-३०

१७ अद्भुत जन्तु । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
१८ अनङ्गरङ्ग । कल्याणमल्ल विरचित १-२५
१९ अनङ्गरङ्ग । कल्याणमल्ल विरचित । श्री लीलाधरशर्मा कृत हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ
२० अनङ्गरङ्ग । कल्याणमल्लविरचित । हिन्दी टीका सहित ३-००
२१ अनन्त मेटेरियामेडिका (होमियोपैथिक विज्ञान) डॉ० अनन्तलाल वर्मा ३-५०
२२ अनार के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-६२
२३ अनुपान कल्पतरु । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा २-५०
२४ अनुपानदर्पण । हिन्दी टीका सहित १-८०
२५ अनुपानविधि । श्री श्यामसुन्दराचार्य । भाषा ०-५०
२६ अनुभव के मोती : डाक्टरों के अनुभव तथा अनुभव विश्वकोष । हरनारायण कोकचा । भाषा ६-००
२७ अनुभविक औषधें अर्थात् सिद्धयोगसंग्रह । (मराठी) ४-००
२८ अनुभूत पशु चिकित्सा । सुरेन्द्र सिंह । भाषा २-५०
२९ अनुभूतयोग । १-२ भाग । श्री श्यामसुन्दराचार्य । भाषा २-००
३० अनुभूतयोगचर्चा । १-२ भाग । वंसरीलालसाहनी । भाषा ६-००
३१ अनुभूतयोगचिन्तामणि । भाग १-२ । डा० गणपतिसिंह । भाषा ६-००
३२ अनुभूतयोगप्रकाश । डा० गणपतिसिंह । पूर्वार्द्ध । भाषा ६-२५
३३ अनुभूत योगसंग्रह का पांचवां भाग (स्वादिष्ट योगचालीसा) रामस्वरूप वैद्यशास्त्री । भाषा ३-५०
३४ अनुभूतयोगावली । हिन्दी १-५६
३५ अनुभूति (अनुभूत औषधियों का संग्रह) वैद्य रघुनन्दन मिश्र । भाषा २-००
३६ अपटूडेट एलोपैथिक टेब्लेट्स गाइड चार्ट्स । हरनारायण कोकचा । भाषा ८-००
३७ अपना इलाज आप करो । भाषा १-२५
३८ अपूर्व चिकित्सा-विधान । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा ६-००
३९ अभिधानमञ्जरी । भिषगाचार्य विरचित । संस्कृत २-५०

६५ अष्टांगहृदयम् । भागीरथी विस्तृत टिप्पणी सहित ४-००
६६ अष्टांगहृदयम् । 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका 'वक्तव्य' परिशिष्ट विस्तृत भूमिका सहित । टीकाकार-कविराज श्रीअत्रिदेवगुप्त विद्यालङ्कार १५-००
६७ अष्टांगहृदयम् । अरुणदत्त-हेमाद्रिकृत टीकाद्वय सहितं दुष्प्राप्य
६८ अष्टाङ्गहृदयम् । (चिकित्सास्थान) सर्वांग सुन्दरी-शशिलेखा संस्कृत टीकाद्वय सहित । प्रथम भाग ३-७५
६९ अष्टांगहृदयम् (उत्तरतन्त्रं) शिवदाससेनकृत तत्त्ववोध सं० व्याख्यासहितं ४-००
७० अष्टांगहृदयम् । परमेश्वरविरचित वाक्यप्रदीप सं० व्याख्या १-२ भाग ८-००
७१ अष्टांगहृदयम् । श्रीदासपंडित कृत हृदयवोधिका सं० व्याख्या सहित १-३ भाग २२-२५
७२ अष्टांगहृदयम् (उत्तरस्थानं) कैरली संस्कृत व्याख्या सहितं ७-००
७३ अष्टांगहृदयम् । इन्दुरचित शशिलेखा संस्कृत टीका । सूत्रस्थान ८-५०
शारीरस्थान ५-००
चिकित्सितस्थान १०-००
७४ अष्टांगहृदयम् (सूत्रस्थानं) सर्वाङ्गसुन्दरी-पदार्थचन्द्रिका-आयुर्वेदरसायन-संस्कृतटीकात्रयोपेतम् ६-६०
७५ अष्टाङ्गहृदयम् । शारीरे प्रसूतितन्त्रम् । डा० शङ्करलाल कन्हैयालाल भेड़ा कृत अर्थप्रकाशिका हिन्दी टीका सहित १०-००
७६ अष्टांगहृदयकोशः । हृदयप्रकाश संस्कृतव्याख्यासहितः १२-००
७७ असली प्राचीन कोकशास्त्र । देवीचन्द वेरी । भाषा ४-००
७८ आँख का अचूक इलाज । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा २-२५
७९ आँखों का डाक्टर । रामनरायन शर्मा वैद्य २-५०
८० आँवला । रमेश वेदी । भाषा १-२५
८१ ऑलोपॅथिक औषधें । (मराठी) १-५०
८२ आक (अर्क) के गुण तथा उपयोग । सम्पादक-रामस्नेही । भाषा २-५०
८३ आकस्मिक दुर्घटनाओं की सरल चिकित्सा । गंगाप्रसाद गौड़ ०-५०
८४ आकृतिनिदान । डा० लुई कुने । भाषा २-५०
८५ आकृति से रोग की पहचान । लुई कूने । भाषा २-००
८६ आत्मसर्वस्वम् । भगीरथस्वामीकृत १००० अनुभूत योग । भाषा ६-३०

८७ आदर्श आहार। डा० सतीशचन्द्र दास गुप्त। भाषा १-२५
८८ आदर्श एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका। डा० रामनारायण ७-५०, ११-००
८९ आदर्श भोजन। डा० लक्ष्मीनारायण चौधरी। भाषा १-५०
९० आदर्श भोजन। चतुरसेनशास्त्री। " १-००
९१ आदिशास्त्र अर्थात् रतिशास्त्र। हिन्दी टीका सहित १-८०
९२ आधुनिक एलोपैथिक गाइड। हरनारायण कोकचा १५-००
९३ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान। प्रथम भाग। डा. आशानन्द पंचरत्न १०-००
९४ आधुनिक चिकित्सा शास्त्र। धर्मदत्त वैद्य ३६-००
९५ आधुनिक सिद्धरसेन्द्रविज्ञान। १-२ भाग। चन्द्रभानु शर्मा ६-००
९६ आध्यात्मिक व शारीरिक ब्रह्मचर्य। डा० चतुर्भुज सहाय। भाषा १-५०
९७ आनन्दकन्दम्। भैरवोक्तम्। संस्कृत मूल १०-५०
९८ आपका व्यक्तित्व। आनन्दकुमार। भाषा ४-००
९९ आपका शरीर। आनन्दकुमार। भाषा २-००
१०० आपके बच्चे की खुराक (शिशु आहार व्यवस्था) डा० सुरेन्द्र। भाषा ३-३७
१०१ आपणो खोराक। बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ३-००
१०२ आपरेशन कोनूं अने बीजी वार्ताओ। प्राणजीवनमेहता (गुजराती) ०-७५
१०३ आम के गुण तथा उपयोग। सम्पादक—अमोलचन्द्र शुक्ल। भाषा १-५०
१०४ आम्रगुणविधान। डा० गणपति। भाषा १-७५
१०५ आयुर्वेद अने वैज्ञानिक दृष्टि। बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ६-००
१०६ आयुर्वेद इंजेक्शन चिकित्सा। डा० श्यामसुन्दर शर्मा २-७५
१०७ आयुर्वेद उपचारशास्त्र (रसोद्धार तंत्र-रससंहितानो चिकित्साकाण्ड) चरणतीर्थ कृत (गुजराती) १०-००
१०८ आयुर्वेद का आधार-भूत-विज्ञान। रामराज शुक्ल। भाषा २-५०
१०९ आयुर्वेद का इतिहास। अत्रिदेव " ५-००
११० आयुर्वेद का बृहद् इतिहास। अत्रिदेव विद्यालंकार। भाषा ११-००
१११ आयुर्वेद की औषधियाँ व उनका वर्गीकरण। विश्वनाथ द्विवेदी २०-००
११२ आयुर्वेद की कुछ प्राचीन पुस्तकें। (आयुर्वेद वाङ्मय-शोध का एक विवरण)। श्री प्रियव्रत शर्मा १-००
११३ आयुर्वेद चिकित्सा मार्गदर्शिका। अत्रिदेव गुप्त ५-००
११४ आयुर्वेद चिकित्सासागर। शम्भुनाथ शास्त्री आयुर्वेदाचार्य। भाषा ३-००

११५ आयुर्वेद चिन्तामणिः। बल्देव प्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ५-५०
११६ आयुर्वेददर्शनम्। वैद्य महादेव चन्द्रशेखरपाठककृत हिन्दी अनुवाद सहित १-५
११७ आयुर्वेदनामूल सिद्धान्तो। प्राणजीवनदास मेहता (गुजराती) ७-००
११८ आयुर्वेद परिषद् निबन्धावली। (प्रमेह-अर्श-श्वास रोग)। भाषा १-२५
११९ आयुर्वेदप्रकाशः। सोमदेवशास्त्रीकृत संस्कृत हिन्दीटीका सहित पूर्वार्द्ध ६-००
१२० आयुर्वेदप्रकाशः। श्रीगुलराजशर्माकृत अर्थ विद्योतिनी संस्कृत अर्थ-प्रकाशिनी हिन्दी टीका सहित। परिष्कृत द्वि० संस्करण। संपूर्ण १२-५०
१२१ आयुर्वेद प्रदीप (आयु०-एलोपेथिक गाइड) डा० राजकुमार द्विवेदी। डा० गंगासहाय पाण्डेय सम्पादित। तृतीय परिवर्द्धित संस्करण। भाषा १०-००
१२२ आयुर्वेद मलेरिया चिकित्सा। डा० राधाकृष्ण पाराशर। भाषा २-००
१२३ आयुर्वेद महामंडल रजत-जयन्ती ग्रन्थ। १-२ भाग। सम्पादक—कविराज प्रतापसिंह। भाषा ५०-००
द्वितीय भाग मात्र ३०-००
१२४ आयुर्वेदमहोदधिः (अन्नपान विधि) सुषेणकृतः। संस्कृत १-२५
१२५ आयुर्वेदमीमांसा। जगन्नाथरथ कृत। संस्कृत मूल १-२५
१२६ आयुर्वेदरत्न गाइड। शिवकुमार 'व्यास'। प्रथम खण्ड १५-००
द्वितीय खण्ड १५-००
१२७ आयुर्वेद रत्न गाइड। डा० ज्ञानेन्द्र पाण्डेय। प्रथम खंड १०-००
१२८ आयुर्वेदरत्न मार्ग-निदर्शिका (गाइड)। जगदीश चन्द्र मिश्र पथिक प्रथम खण्ड १६-००
१२९ आयुर्वेदविज्ञानम्। 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका बृहत्परिशिष्ट सहित २-००
१३० आयुर्वेद विज्ञान (हिन्दी) डा० कमला प्रसाद मिश्र ३-५०
१३१ आयुर्वेद विहंगावलोकन। बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ४-००
१३२ आयुर्वेद व्याख्यानमाला। बापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ६-००
१३३ आयुर्वेद शिक्षा पर विचार। डा० घाणेकर। भाषा ०-४०
१३४ आयुर्वेद सार संग्रह। हिन्दी ६-००
१३५ आयुर्वेद सुलभ विज्ञान। डा० कमल सिंह। भाषा २-५०
१३६ आयुर्वेदसूत्रम्। रामप्रसादकृत हिन्दी टीका सहित १-८०
१३७ आयुर्वेदस्य वेदत्वम्-अचिन्त्यनिर्वचनत्वञ्च। संस्कृत १-००

१३८ आयुर्वेदादर्शसंग्रहः । दामोदर गौड़ कृतः । संस्कृत २-००
१३९ आयुर्वेदिक इञ्जेक्शन चिकित्सा । डा० श्यामसुन्दर । भाषा २-७५
१४० आयुर्वेदिक-एलोपेथिक गाइड । सम्पादक-डा० गंगासहाय पाण्डेय १२-००
१४१ आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा १-२५
१४२ आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति । जीवनराम गुंसाईलाल । भाषा ४-५०
१४३ आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति । स्वामी जीवाराम । भाषा ३-००
१४४ आयुर्वेदिक पत्रों का इतिहास । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा ०-४४
१४५ आयुर्वेदिक वैद्य रानी (लेडी डाक्टर) । रामनारायण शर्मा । भाषा २-५०
१४६ आयुर्वेदिक सफल सूचीवेध (इन्जेक्शन्स) प्रकाशचन्द्र जैन भाषा ४-००
१४७ आयुर्वेदीय औषधि विज्ञान अथवा रस-वीर्य-विपाक-
प्रभाव विज्ञान । ले० पु० स० हिर्लेकर (मराठी) २-००
१४८ आयुर्वेदीय औषधि-संशोधन । डा० धामणकर (हिन्दी) १-००
१४९ आयुर्वेदीय औषधि-संशोधन । (मराठी) १-००
१५० आयुर्वेदीय क्रियाशारीर । रणजीतराय । भाषा । परिवर्द्धित सं० १४-००
१५१ आयुर्वेदीय त्वचा रोग चिकित्सा । अमरनाथ शास्त्री १५-००
१५२ आयुर्वेदीय द्रव्यगुण विज्ञान । शिवकुमार 'व्यास' । भाषा १०-००
१५३ आयुर्वेदीय पथ्यापथ्य विमर्शः । वैद्यरत्न परमानन्द । संस्कृत १०-००
१५४ आयुर्वेदीय पदार्थविज्ञान । श्री वागीश्वर शुक्ल ८-००
१५५ आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान । रणजीतराय । भाषा ६-७५
१५६ आयुर्वेदीयपदार्थविज्ञानम् । बलवन्तशर्माकृत हिन्दी टीका सहित ४-००
१५७ आयुर्वेदीय-परिभाषा । अभिनव-प्रकाशिका-हिन्दी टीका सहित १-२५
१५८ आयुर्वेदीय पारिवारिक चिकित्सा । विद्यानारायण शास्त्री । भाषा २-५०
१५९ आयुर्वेदीय यन्त्रशस्त्र परिचय । आचार्य सुरेन्द्रमोहन बी. ए. १-७५
१६० आयुर्वेदीय विश्वकोष । १-२ भाग ३१-००
१६१ आयुर्वेदीयव्याधिविज्ञान । भाग १-४ (गुजराती) वैद्य चंद्रशेखर ठक्कुर ७-५०
१६२ आयुर्वेदीय व्याधिविज्ञान । (१-२ भाग) वैद्य यादव जी । भाषा ८-२५
१६३ आयुर्वेदीय व्याधि विज्ञान । ५-००
१६४ आयुर्वेदीय सिद्धचिकित्सा । रामनारायण श्रोत्रिय । भाषा २-००
१६५ आयुर्वेदीय सिद्धभेषजमणिमाला । वेद व्रत शर्मा । भाषा २-५०

१६६ आयुर्वेदीयहितोपदेशः। वैद्य रणजीतराय कृत हिन्दी अनुवाद सहित ३-५०
१६७ आरोग्य की कुंजी। महात्मा गांधी। भाषा ०-४४
१६८ आरोग्य चिन्तामणिः। दामोदर भट्टाचार्य कृत। संस्कृत मूल ६-००
१६९ आरोग्य दर्पण। चन्द्रशेखर गोपालजी ठक्कुर (गुजराती) २-००
१७० आरोग्य दर्शनम्। पंचभूत त्रिदोषबोध समेत। धीरजराम दयाशङ्कर शास्त्री। संस्कृत ०-५०
१७१ आरोग्यप्रकाश। रामनारायणशर्मा। भाषा सजिल्द ४-००
१७२ आरोग्य बाला। प्रेमलता अग्रवाल। ,, ०-४०
१७३ आरोग्य मणि। सिद्धिसागर। भाषा १-००
१७४ आरोग्यलेखाञ्जलि। श्री केदारनाथ। ,, १-००
१७५ आरोग्यविज्ञान। डा० लक्ष्मीनारायण। भाषा २-००
१७६ आरोग्यविधान। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। ,, समाप्त
१७७ आरोग्य विज्ञान तथा जन-स्वास्थ। डॉ० लक्ष्मीकान्त ८-००
१७८ आरोग्य शास्त्र। डा० विश्वनाथ भावे। भाषा २-५०
१७९ आरोग्य शिक्षा। मुरलीधर शर्मा। ,, ०-६०
१८० आरोग्यासने। डॉ० र० कृ० गर्दे। मराठी २-५०
१८१ आर्गेनन। भट्टाचार्य। भाषा ४-५०
१८२ आर्गेनन। डा० सुरेश। भाषा ४-५०
१८३ आर्गेनन (होमियो) डा० टण्डन। भाषा २-७५
१८४ आर्तव दोष और चिकित्सा। शीलवती देवी वैद्या। भाषा ०-५०
१८५ आर्य स्वास्थ्य विज्ञान। (बंगला) प्रभाकर चट्टोपाध्याय १-२ भाग ४-५०
१८६ आसन। सातवलेकर। भाषा २-५०
१८७ आसनों के व्यायाम (सचित्र) ब्रह्मचारी वेद व्रत। भाषा ०-६०
१८८ आसव अरिष्ट। सत्यदेव विद्यालङ्कार २-५०
१८९ आसवारिष्टविज्ञान। श्री पक्षधर झा ३-००
१९० आहार। रामरक्ष पाठक। भाषा ५-००
१९१ आहार। सर राबर्ट मैक्कैरिसन। भाषा २-२५
१९२ आहार। लक्ष्मीनारायण शर्मा। भाषा १-५०
१९३ आहार और आरोग्य। ज्योतिर्मयी ठाकुर। भाषा ३-००

१९४ आहार और आहार सुधार। डा० केदारनाथ सिंह। भाषा १–२५
१९५ आहार और पोषण। झवेर भाई पटेल १–५०
१९६ आहार और स्वास्थ्य। १–२ भाग। डा० हीरालाल। भाषा ८–००
१९७ आहार चिकित्सा। एरनोल्ड इहरिट २–००
१९८ आहार संयम और स्वास्थ्य। भगवती प्रसाद। भाषा ३–००
१९९ आहार सूत्रावली। केदारनाथ पाठक। भाषा ०–५०
२०० इंजेक्शन (सचित्र) डा० शिवनाथ खन्ना। भाषा ११–००
२०१ इंजेक्शन गाइड। डा० एस० पी० कुमार। ,, ५–००
२०२ इंजेक्शनचिकित्सा। डा० राधावल्लभ पाठक। भाषा ५–००
२०३ इंजेक्शन चिकित्सा प्रणाली। डा० ए० एल० वर्मा। भाषा ३–००
२०४ इंजेक्शनतत्त्वप्रदीप। डा० गणपति। भाषा ५–००
२०५ इंजेक्शन बुक। हरनारायण कोकचा। भाषा ८–२५
२०६ इंजेक्शन रहस्य और वैज्ञानिकचमत्कार। सिद्धिसागर। भाषा ४–२५
२०७ इंजेक्शन विज्ञानांक। भाषा ४–००
२०८ इच्छाशक्ति (मानस आरोग्य प्रदर्शिका) डा. श्यामदास प्रपन्नाश्रमी। भाषा १–२५
२०९ इच्छाशक्ति। जॉन कनैडी। शैलेन्द्रकुमार पाठक अनुवादित १–५०
२१० इनफ्लुएञ्जा–वात–श्लैष्मिक ज्वर। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ०–५६
२११ इन्द्रायण (गडुम्बा) के गुण तथा उपयोग। सं०–रामस्नेही। भाषा ०–८८
२१२ इन्द्रायणगुणविधान। डा० गणपति सिंह। भाषा ०–५०
२१३ इलाजुलगुरबा। (यूनानी)। भाषा ३–६०, ४–००, ५–००
२१४ उठो ! आत्मोन्नति के पथ पर। स्वामी कृष्णानन्द। भाषा १–२५
२१५ उथले जल के पक्षी। जगपति चतुर्वेदी। भाषा २–००
२१६ उपचारपद्धति और पथ्य। रवीन्द्र शास्त्री ,, ०–६५
२१७ उपदंशचिकित्सासंग्रहः। गणेशदत्त कृत हिन्दी टीका सहित १–००
२१८ उपदंश तिमिर (गर्मी) नाशक। हिन्दी ०–३८
२१९ उपदंश विज्ञान। बालकराम शुक्ल। भाषा १–००
२२० उपदंश सूजाक चिकित्सा। भाषा १–२५
२२१ उपयोगी नुसखे तरकीबें और हुनर। डा. गोरखप्रसाद, डा. सत्यप्रकाश। भाषा ३–५०

२२२ उपयुक्त ॲलोपॅथिक औषधें । प्रभाकर शंकर गुप्ते । मराठी १-५०
२२३ उपवास । शरण प्रसाद १-२५
२२४ उपवास और स्वास्थ्य । हीरालाल । भाषा ३-००
२२५ उपवासचिकित्सा । वी० मैकफेडेन । अनु०-रामचन्द्र वर्मा । भाषा २-००
२२६ उपवास-प्रयोग और लाभ । ज्योतिर्मयी ठाकुर । भाषा २-००
२२७ उपवास से जीवन रक्षा । हर्बर्ट एम० शेल्टन ३-००
२२८ उपवास से लाभ । विट्ठलदास मोदी । भाषा १-५०
२२९ उपवैद्य गाइड । शिवकुमार 'व्यास' ५-००
२३० उषःपान । लक्ष्मीप्रसाद पाण्डेय । भाषा ०-७५
२३१ ऊर्ध्वजत्रुजरोगाङ्क । भाषा ४-००
२३२ ऊर्ध्वाङ्गचिकित्सा । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल ३ भाग में । भाषा ८-००
पृथक् पृथक् भाग (१) कर्णरोग विज्ञान २-५०
(२) नासारोग विज्ञान २-७५
शेष भाग समाप्त (३) मुखरोग विज्ञान २-७५

२३३ ऋद्धिखण्ड-वादिखण्ड । नित्यनाथ सिद्ध विरचित । गोंडल ४-००
२३४ एकौषधिगुणविधान । डा० गणपति सिंह । भाषा २-००
२३५ एकौषधि चिकित्सा । अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ५-००
२३६ एनाटामी तथा फिजियालोजी । राधावल्लभ पाठक । भाषा ५-००
२३७ एनीमा और कैथेटर । भाषा ०-५०
२३८ एलेन्स की नोट्स (आफ दी लिडिंग रेमिडीज) । भट्टाचार्य । भाषा ५-५०
२३९ एलोपेथिक-आयुर्वेदिक गाइड । डा० राजकुमार द्विवेदी । भाषा १२-००
२४० एलोपैथिक औषधें । डॉ० प्रभाकर शंकर गुप्ते १-५०
२४१ एलोपेथिक चिकित्सा विज्ञान । डा० विजयकृष्ण सिन्हा । भाषा ५-००
२४२ एलोपेथिक चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा १२-७५
२४३ एलोपेथिक निघण्टु । डा० रामनाथ वर्मा । भाषा १२-००
२४४ एलोपैथिक नुस्खा । डा० एम० एल० शर्मा ३-००
२४५ एलोपेथिकपाकेटगाइड । डा० सुरेश ,, ३-००
२४६ एलोपैथिक पाकेट प्रेस्क्राइबर (एलोपैथिक गाइड)
डा० शिवनाथ खन्ना ५-००

३०१ कामकला । हिन्दी टीका सहित । ले० विजय बहादुर सिंह ५-००
३०२ कामकला और दाम्पत्य जीवन । ५-००
३०३ कामकुंज । सन्तराम बी. ए. । भाषा २-५०
३०४ कामकुंज । विजय बहादुरसिंह । भाषा टीका ८-००
३०५ कामकुंजलता । संस्कृत । मूल २०-००
३०६ काम-प्रेम और परिवार । जैनेन्द्र कुमार । भाषा ४-००
३०७ कामरत्नम् । नित्यनाथ विरचित । ज्वाला प्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ६-००
३०८ कामविज्ञान । ६-००
३०९ कामविज्ञान । देवीचन्द्र बेरी ५-००
३१० काम विज्ञान । दीनानाथ व्यास । भाषा ३-७५
३११ कामसूत्रम् । 'जयमंगला' टीका सहित विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित । व्याख्याकार-देवदत्त शास्त्री १६-००
३१२ कामसूत्र । हिन्दी भाषा मात्र । कविराज विपिनचन्द्र बन्धु ५-००
३१३ कामसूत्र । काशी राम चावला । भाषा ३-००
३१४ कामसूत्र । अत्रिदेव गुप्त । भाषा ६-००
३१५ कामसूत्र नवनीत चार्टस । हरनारायण कोकचा ५-००
३१६ कामसूत्र परिशीलन । श्री वाचस्पति गैरोला १६-००
३१७ कायचिकित्सा । कविराज रामरक्ष पाठक । १-२ भाग । भाषा २५-००
तृतीय भाग यन्त्रस्थ
३१८ कायचिकित्सा । डा० गंगासहाय पाण्डेय १५-००
३१९ कायचिकित्सा परिचय । सी० द्वारकानाथ । अनुवादक-त्रिलोकचन्द्र जैन । भाषा २०-००
३२० कायचिकित्साङ्क । आचार्य रघुवीरप्रसाद द्विवेदी । भाषा ८-५०
३२१ कायाकल्प । संस्कृत मूल अंग्रेजी टीका जीवराम कालिदास शास्त्री ०-५०
३२२ कायाकल्प । संस्कृत मूल, गुजराती अनुवाद ०-५०
३२३ कायाकल्पयोग । नरेन्द्रशास्त्री १-२५
३२४ कालज्ञानम् । हिन्दी टीका सहित ०-५७
३२५ कालरा या हैजा । डा० टण्डन । भाषा २-००
३२६ काश्यपसंहिता । (वृद्धजीवकीयतन्त्र) विद्योतिनी हिन्दी टीका, राजगुरु हेमराज कृत विस्तृत संस्कृत-हिन्दी उपोद्घात सहित १६-००

३२७ कासरोगांक (धन्वन्तरि) । भाषा १-००
३२८ किंग होमियो मिक्सचर एवं पेटेन्ट मेडीशन गाइड । डॉ० शंकरलाल गुप्ता-डॉ० सरस्वतीनारायण गुप्ता । प्रथम भाग ६-००
३२९ किंग होमियो मिक्सचर्स । शंकरलाल गुप्ता । भाषा २-५०
३३० किशमिश चिकित्सा । भाषा ०-७५
३३१ किशोर रक्षा और ब्रह्मचर्य । रविनाथ शास्त्री । भाषा १-०४
३३२ किशोरावस्था । गोपालनारायण सेन । भाषा २-००
३३३ कीकर गुणविज्ञान । अब्दुल्ला । भाषा ०-५०
३३४ कीटाणुओं की कहानी । ले० जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
३३५ कुचिमारतन्त्रम् । हिन्दी टीका सहित ०-५०
३३६ कुट्टनीमतम् । दामोदरगुप्त कृत । मधुसूदन कौल संपादित । संस्कृत ३-००
३३७ कुट्टनीमतम् । दामोदर गुप्त कृत । हिन्दी व्याख्या ६-००
३३८ कुट्टनीमतम् । जगन्नाथ पाठक कृत हिन्दी टीका सहित ७-५०
३३९ कुमारतन्त्रम् । रावणकृतम् । हिन्दी टीका सहित ०-६०
३४० कुल्लियात । हकीम दलजीत सिंह । भाषा १-२५
३४१ कुशल कम्पाउण्डर । हरनारायण कोकचा । भाषा ५-००
३४२ कुष्ठ-सेवा । डा० रविशंकर शर्मा १-२५
३४३ कूटमुद्गरः । हिन्दी टीका सहित ०-३०
३४४ कूपीपक्वरसनिर्माणविज्ञान । हरिशरणानन्द । भाषा ५-००
३४५ केलिकुतूहलम् । म. म. मथुराप्रसाद दीक्षित कृत । मूल, संस्कृत २-००
३४६ केलिकुतूहलम् । हिन्दी टीका सहित ४-००
३४७ केशरोग और उनकी चिकित्सा । शिक्षाभल्ला ५-७०
३४८ कैंट मेटेरिया मेडिका । १-२ भाग । भट्टाचार्य । भाषा २४-००
३४९ कैंसर चिकित्सा । (बंगला) प्रभाकर चट्टोपाध्याय ५-००
३५० कैंसर रोग की चिकित्सा । प्रभाकर चट्टोपाध्याय । भाषा ६-००
३५१ कोकविज्ञान व रतिरहस्य । वैद्य प्रभुदयाल । भाषा ३-००
३५२ कोकशास्त्र । बड़ा सजिल्द । भाषा ४-००
३५३ कोकसार । आनंद कृत । भाषा पद्य ०-५०
३५४ कोकसार वैद्यक सचित्र । कोकपण्डित । हिन्दी टीका सहित ६-००

४०२ गृहविज्ञान एवं व्यावहारिक प्रयोग। कालेड़ „ ०-५०
४०३ गृहविज्ञान एवं शिशुकल्याण। डॉ० सरला शुक्ला व प्रेमप्रकाश ५-००
४०४ गृहवैद्य अथवा क्षार चिकित्सा। डॉ० र० कृ० गर्दे। मराठी ३-५०
४०५ गृहस्थ सूत्र। कांशी राम चावला। भापा ६-००
४०६ गृहस्थी जीवन के लिए अद्भुत दर्पण सांसारिक आनंद। (सचित्र) टेकचन्द कौशल। भापा २-५०
४०७ गोपालनशास्त्र और पशुरोगों की चिकित्सा। गिरीशचन्द्र। भापा २-७५
४०८ गोरसादि ओषधि। शंकरदाजी पदे। भापा ०-१६
४०९ ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग। महेन्द्रनाथ पाण्डेय। भापा १-००
४१० ग्राम का वैद्य। श्री कृष्णजसराय। भापा १-२५
४११ ग्रामीणों का स्वास्थ्य। केदारनाथ पाठक। भापा १-००
४१२ ग्राम्य चिकित्सा। श्री केदारनाथ। भापा ०-६२
४१३ घर का वैद्य। सम्पादक—अमोलचन्द्र शुक्ला। भापा ७-५०
४१४ घर का वैद्य। राजेश्वरी शर्मा। भापा ५-००
४१५ घर का वैद्य। ऋषिकुमार शर्मा। भापा १-२५
४१६ घरका वैद्य-गरीबों का इलाज। भापा ०-७५
४१७ घरगथ्थु वैद्यक। वापालाल ग० वैद्य (गुजराती) ५-५०
४१८ घर में वैद्य अर्थात् सब रोगों की बेदाम ओपधियाँ। भापा १-००
४१९ घरेलू इलाज। चन्द्रशेखर गोपालजी ठकुर। भापा २-००
४२० घरेलू इलाज। सन्तराम वत्स्य १-२५
४२१ घरेलू इलाज। रमेश वर्मा। भापा १-००
४२२ घरेलू कुदरती इलाज। केदारनाथ गुप्त। भापा १-००
४२३ घरेलू चिकित्सा। भापा। काशी १-५०
४२४ घरेलू डाक्टर। डा. जी. घोष, डा० उमाशङ्कर, डा० गोरखप्रसाद। भापा ४-००
४२५ घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा। धर्मचंद सरावगी ०-७५
४२६ घरेलू सस्ती दवायें। भापा ३-००
४२७ घाव की चिकित्सा। श्यामसुन्दर शर्मा। भापा १-००
४२८ घीकवार (गवार पट्ठा) के गुण तथा उपयोग। अमोलचन्द्र शुक्ला २-५०
४२९ घृतकुमारी विधान। सिद्धिसागर प्राणाचार्य। भापा १-२५

४३० घृत (घी) के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा १-००
४३१ घृतगुण विधान । डा० गणपति । भाषा ०-५०
४३२ चक्रदत्तः । श्री जगदीश्वर प्रसाद कृत नवीन वैज्ञानिक भावार्थसंदीपिनी
विस्तृत हिन्दी टीका टिप्पणी परिशिष्ट सहित । अजिल्द १०-००
कपडे की पक्की जिल्द १२-००

४३३ चमत्कार पूर्ण औषधियाँ और चिकित्सा विज्ञान में नवयुग ।
फ्रेड रेनफेल्ड । अनुवादक वी० के० वड़सूवाला १-५०

४३४ चरक मुनि । वैद्य सोमदेव । भाषा ०-५०
४३५ चरकसंहिता । मूल ८-००
४३६ चरकसंहिता । सविमर्श 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित ।
व्याख्याकार : पं० काशीनाथ शास्त्री, डॉ० गोरखनाथ चतुर्वेदी ।
सम्पादक : पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री, पं० यदुनन्दन उपाध्याय,
डा० गंगासहाय पाण्डेय, पं० ब्रह्मशंकर मिश्र । १-२ भाग संपूर्ण ३६-००
,, आरंभ से इन्द्रियस्थान पर्यन्त प्रथम भाग १६-००
,, चिकित्सास्थान से समाप्ति पर्यन्त द्वितीय भाग ।
डा० बनारसीदास गुप्त कृत विस्तृत परिशिष्ट सहित २०-००

४३७ चरकसंहिता । चक्रपाणिदत्त कृत संस्कृत टीका सहित २८-००
४३८ चरकसंहिता । चक्रपाणिदत्त कृत संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ
४३९ चरकसंहिता । आयुर्वेददीपिका-जल्पकल्पतरु संस्कृत व्याख्याद्वयसहित ४५-००
४४० चरकसंहिता । अंग्रेजी-हिन्दी-गुजराती-अनुवादसहित १-६ भाग
जामनगर समाप्त

४४१ चरकसंहिता का अनुशीलन । अत्रिदेव गुप्त । भाषा २-००
४४२ चरकसंहिता का सांस्कृतिक अनुशीलन । अत्रिदेव गुप्त १५-००
४४३ चरकसंहिता तथा काश्यपसंहिता का निर्माणकाल ।
वैद्य श्रीरघुवीरशरण शर्मा । भाषा २-००

४४४ चरक सुमनशतक । चन्द्रदत्त त्रिपाठी २-५०
४४५ चर्मरोगचिकित्सा । डा० प्रियकुमार चौबे २-५०
४४६ चर्मरोगचिकित्सा । डॉ० पद्मदेव नारायण सिंह ५-००
४४७ चर्या अंक । भाषा ३-००
४४८ चर्याचन्द्रोदयः । हिन्दी टीका सहित ५-१०

४४९ चाय विज्ञान । ०-०६
४५० चारु चिकित्सा । (सिद्ध प्रयोग) गोपीनाथ गुप्त । उत्तरार्ध । भाषा ३-००
४५१ चालमुग्रा । रमेश वेदी । भाषा १-७५
४५२ चिकित्सा तत्त्वप्रदीपिका । महावीर प्रसाद पाण्डेय । १-२ भाग । १८-५०
४५३ चिकित्सा विज्ञान कोष । एस० सी० सेन गुप्त ७-५०
४५४ चिकित्साकलिका । तीसटाचार्यकृत मूल २-५०
४५५ चिकित्सा की कुञ्जी । भाषा २-२५, २-५०
४५६ चिकित्सा की प्रगति । २-००
४५७ चिकित्सा के महान आविष्कारों की कहानी । डेविड डाइट्ज ।
अनुवादक धर्मपाल शास्त्री २-५०
४५८ चिकित्सा कौमुदी उर्फ सुनवाई चा बरथ । मराठी २-००
४५९ चिकित्सा चन्द्रोदय । हरिदास वैद्य । १-७ भाग । भाषा ५८-००
४६० चिकित्सा ज्ञान संग्रह । (मेडिसन) राधावल्लभ पाठक । भाषा ५-००
४६१ चिकित्सा चन्द्रिका । कन्हैयालाल जोशी । प्रथम खण्ड । भाषा २-५०
४६२ चिकित्साञ्जन । विद्यापति प्रणीत । हिन्दी टीका सहित १-३०
४६३ चिकित्सातत्त्वप्रदीप । भाषा प्रथम भाग अजिल्द १०-०० सजिल्द १२-००
द्वितीय भाग अजिल्द १०-०० सजिल्द १२-००
४६४ चिकित्सा तिलकम् । श्रीनिवासकृत । संस्कृत ६-२५
४६५ चिकित्सा दर्पण । स्वामी रामानन्द सरस्वती । भाषा ४-००
४६६ चिकित्सादर्श । वैद्य राजेश्वरदत्त शास्त्री । १-३ भाग । भाषा १८-००
४६७ चिकित्सा प्रदीप (गुजराती) १-२ भाग ८-००
४६८ चिकित्साप्रभाकर । १-८ भाग । ए. पी. ओगले । मराठी २२-५०
४६९ चिकित्सामञ्जरी । रघुनाथ पंडित मनोहर कृत । तत्कृत नाड़ी
ज्ञानविधि सहित । एस० एल० कात्रे सम्पादित । संस्कृत ५-००
४७० चिकित्सारत्न । रामरतन गंगेल । भाषा ६-००
४७१ चिकित्सा रहस्य । कृष्णप्रसाद त्रिवेदी । भाषा ४-५०
४७२ चिकित्सा विज्ञान कोश । ७-५०
४७३ चिकित्सा व्यवहार विज्ञान । सूर्यनारायण वैद्य ०-५०
४७४ चिकित्सा शब्दकोश । (चौखम्बा मेडिकल डिक्शनरी) २०-००

४७५ चिकित्सा समन्वयांक । भाषा ६-००
४७६ चिकित्सासोपान । विजयकान्तराय चौधुरी । भाषा २-७५
४७७ चिकित्सोपदेशिका । पं० गणेशदत्त । भाषा १-००
४७८ चीरफाड़ज्ञानसंग्रह । (सर्जरी) डा० राधावल्लभ पाठक । भाषा ६-००
४७९ चूर्णभण्डार । रामनारायन शर्मा वैद्य । भाषा १-२५
४८० चूर्णभंडार अर्थात् चूर्णरत्नाकर । हरनारायण कोकचा । भाषा ३-००
४८१ चौखम्बा चिकित्सा-विज्ञान-कोश । डॉ० अवधविहारी अग्निहोत्री २०-००
४८२ चौसठ भारतीय औषधियाँ एवं उसके गुण । इन्द्रदेवनारायण सिंह ०-२५
४८३ छांगाणी अभिनन्दन ग्रन्थ । भाषा ६-००
४८४ छाछ के गुण तथा उपयोग । अमोलचन्द्र शुक्ल । भाषा ०-७५
४८५ छायालोक की रहस्यनगरी । यक्ष्मा आदि रोग किन्हीं तस्वीरों से फैल रहे हैं इसका वर्णन । भाषा १-२५
४८६ जटिल रोगों की सफल चिकित्सा । वैद्य वासुदेव कृत । भाषा २-००
४८७ जड़ी बूटियों द्वारा इलाज । विश्वनाथ शास्त्री । सचित्र । भाषा ३-००
४८८ जड़ी बूटी विज्ञान । (महात्माओं की गुप्त बूटियाँ) । भाषा ३-००
४८९ जन स्वास्थ्य और ऋतुएँ । हरिचरण वैद्य ४-००
४९० जननी और शिशु । द्वारकानाथ पंड्या । भाषा ०-७५
४९१ जननेन्द्रिय के रोग । भट्टाचार्य । भाषा १-५०
४९२ जननेन्द्रिय रोग चिकित्सा । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा २-५०
४९३ जन स्वास्थ्य विज्ञान । प्रकाशचन्द्र गौड़ ४-००
४९४ जन्मनिरोध (सचित्र) । भाषा ६-००
४९५ जर्राहीप्रकाश (चारों भाग) । भाषा ४-००
४९६ जलचर पक्षी । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
४९७ जल चिकित्सा । डा० हीरालाल एन० डी० । भाषा ८-००
४९८ जलचिकित्सा । २-३ भाग । राखालचन्द्र चट्टोपाध्याय । भाषा ३-२५
४९९ जलचिकित्सा । सुरेशप्रसाद शर्मा ०-५०
५०० जलचिकित्सा विज्ञान । देवराज विद्यावाचस्पति । भाषा २-००
५०१ जार फोर्टी इयर प्रैक्टिस । भट्टाचार्य । भाषा ८-००

५०२ जीने की कला । विट्ठलदास मोदी । भाषा १-५०
५०३ जीने की कला । सन्तराम बी० ए० ३-५०
५०४ जीने के लिए । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
५०५ जीरा के उपयोग । छमेदीलाल वैश्य । भाषा ०-३०
५०६ जीवतिक्ति विमर्श । (Vitamins) डा० हरिश्चन्द्र । भाषा १-२५
५०७ जीवतिक्ति विमर्श या विटामिन तत्त्व । डॉ० पद्मनारायण सिंह ५-००
५०८ जीवनतत्त्व । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा १-५०
५०९ जीवनतत्त्व । रामचरन मिश्र । भाषा ०-१६
५१० जीवनरक्षा । हनुमान प्रसाद शर्मा । भाषा १-२५
५११ जीवनरसायनचिकित्साशास्त्र अथवा शूश्लर साहब की बारह दवाइयाँ । भाषा । अनुवादक डा० घाणेकर ७-००
५१२ जीवन विज्ञान तथा भूगर्भशास्त्र । डा० उमाशंकर । भाषा ३-७५
५१३ जीवरसायनकोश । ब्रजकिशोर ६-००
५१४ जीव विज्ञान की प्रारम्भिक पुस्तक । बांकेविहारी लाल । भाषा २-५०
५१५ जीव वृत्ति विज्ञान । डा० महाजीत सहाय । भाषा १-५०
५१६ जीवशास्त्र विज्ञान । इ० विलियम् । भाषा २-५०
५१७ जीवाणु विज्ञान । डा० घाणेकर । भाषा १३-००
५१८ जीवानन्दम् । आनन्दरायमखिप्रणीत। अत्रिदेव कृत हिन्दीटीका सहित ४-००
५१९ जीवानन्दम् । नारायणदत्त वैद्य कृत रसायन टिप्पणी सहित ४-००
५२० जुकाम । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा १-७५
५२१ ज्योतिष और रोग । जगन्नाथ भसीन । भाषा ५-००
५२२ ज्योतिषशास्त्र में रोग-औषध उपचार प्रकरण । अजीतमल मेहता ३-६५
५२३ ज्वर और फेफड़े के रोग । भाषा ०-७५
५२४ ज्वरचिकित्सा । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा २-७५
५२५ ज्वरचिकित्सा । डा० अयोध्यानाथ पाण्डेय । भाषा २-००
५२६ ज्वरचिकित्सासार । शिवनाथ सिंह । भाषा १-३७
५२७ ज्वरतिमिर नाशक । रामप्रसाद कृत हिन्दीटीका सहित २-१०
५२८ ज्वरनिर्णयः । नारायण पंडित प्रणीतः (संस्कृत) २-७५

५२९ ज्वरमीमांसा । हरिशरणानन्द । भाषा १-५०
५३० ज्वरविज्ञान । कालेड़ा । भाषा अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०
५३१ ज्वरविवेचन (ज्वरनिदान चिकित्सा) वैद्य लीलाधर शर्मा। भाषा १०-००
५३२ ज्ञान भैषज्यमंजरी । हिन्दी टीका सहित ०-७५
५३३ टेब्लेट्स गाइड । हरनारायण कोकचा । भाषा ८-२५
५३४ टोटका चिकित्सा (टोटकाज्ञानविज्ञान) अमोलचन्द्र शुक्ल। भाषा ०-७५
५३५ टोटका विज्ञान । केदारनाथ शर्मा । भाषा ०-३७
५३६ टोटका विज्ञान । स्वामी कृत्यानन्द ,, २-५०
५३७ ठीक खाओ और स्वस्थ रहो । २-००
५३८ डाक्टरी गाइड (पाश्चात्य चिकित्सा पथ प्रदर्शक)। भाषा ४-००
५३९ डाक्टरी चिकित्सार्णव । भाषा ५-४०
५४० डॉक्टरी चिकित्सा सार । भाषा १-२०
५४१ डाक्टरी नुस्खे । भाषा २-५०
५४२ डाक्टरी नुस्खे तथा नई पेटेण्ट दवायें। राधावल्लभपाठक। भाषा ५-००
५४३ डाक्टरी मेटेरिया मेडिका । भाषा ८-००
५४४ डाक्टरों के मत (होमियोपैथी) । डा० डी० पी० मैत्र ०-७५
५४५ ढाक के गुण तथा उपयोग । अमोलचन्द्रशुक्ल । भाषा ०-७५
५४६ तत्काल फलप्रद प्रयोग १-४ भाग । चन्द्रशेखर जैन शास्त्री । भाषा ८-७५
५४७ तत्त्वों की खोज में । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००
५४८ तन्त्रयुक्ति । संस्कृत १-००
५४९ तन्त्रसारसंग्रहः (विषनारायणीयं) संस्कृत व्याख्या । नारायणकृत १५-२५
५५० तन्दुरुस्त कैसे रहें ? वर्नर मैकफैडेन । भाषा ३-००
५५१ तन्दुरुस्त रहने के उपाय । धर्मचंद सरावगी । भाषा १-२५
५५२ तन्दुरुस्ती की कहानियाँ । एस० जे० सिंह ०-५०
५५३ तन्दुरुस्ती हजार नियामत है । डा० हीरालाल । भाषा १-००
५५४ तन्दुरुस्ती हजार नियामत । भाषा ०-३७
५५५ तपेदिक का प्राकृतिक इलाज । डा० एम० एल० पाण्डेय । भाषा ४-५०
५५६ तपेदिक से बचिये । ०-८५
५५७ तम्बाकू के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा १-२५

५५८ तम्बाखू जहर है। युगलकिशोर चौधरी। भाषा ०-५०
५५९ तरकारी तथा साग भाजी। राजेश गुप्त। भाषा ३-५०
५६० तरबूज के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-६२
५६१ तात्कालिक चिकित्सा। डा० शिवदयालगुप्त। भाषा १-५०
५६२ तात्कालिक चिकित्सा। लालबहादुरलाल। भाषा २-५०
५६३ तापमापन (थर्मामीटर) डा० राजकुमार द्विवेदी। भाषा ०-२५
५६४ ताम्बूल मञ्जरी। जे० एस० पाण्डे सम्पादित। संस्कृत ८-००
५६५ तिब्ब इहसानी। भाषा २-५०
५६६ तीन सौ लक्षण अथवा थ्री हंड्रेड एबसोल्यूट्स। डा० मैत्र ०-७५
५६७ तीमारदारी। भाषा १-००
५६८ तुम कहाँ से आये। २-५०
५६९ तुलनात्मक मेटेरिया मेडिका। भट्टाचार्य। भाषा २०-००
५७० तुलसी। श्री रमेश वेदी। भाषा २-००
५७१ तुलसी के गुण तथा उपयोग। डॉ० हरनारायण कोकचा। भाषा ३-००
५७२ तुलसी गुण विधान। सिद्धिसागर। भाषा १-५०
५७३ तुलसी विज्ञान। (तुलसी के वैज्ञानिक २४२ परीक्षित प्रयोग) भाषा ०-७५
५७४ तुवरक और चालमोग्रा। रमेश वेदी। भाषा ०-७५
५७५ तेजपात के उपयोग। उमेदीलाल वैश्य। भाषा ०-३०
५७६ तोरी। रमेश वेदी। भाषा १-२५
५७७ त्रिदोषतत्त्वविमर्श। रामरक्ष पाठक। भाषा ३-००
५७८ त्रिदोष परिचय। वैद्य चन्द्रशेखर गोपालजी ठक्कुर (गुजराती) १-००
५७९ त्रिदोष परिज्ञान। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा ३-५०
५८० त्रिदोषमीमांसा। हरिशरणानन्द। भाषा २-५०
५८१ त्रिदोषविज्ञानम्। जामनगर। संस्कृत ३-२५
५८२ त्रिदोषविज्ञानम्। उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दी टीका सहित ४-००
५८३ त्रिदोष-संग्रहः। श्री धर्मदत्त वैद्य कृत विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित ३-५०
५८४ त्रिदोषावाद। भानुशंकरशर्मणा संगृहीत। संस्कृत टीका सहित २-००
५८५ त्रिधातु सर्वस्व। विश्वेश्वर दयालु। भाषा २-००
५८६ त्रिफला। श्री रमेश वेदी। भाषा ३-२५
५८७ त्रिफला के गुण तथा उपयोग। भाषा १-५०

५८८ त्रिफला (त्रिफला से सर्व रोगों की चिकित्सा एक लाभ)। भाषा ०-५०
५८९ त्रिशतिः। शार्ङ्गधर कृत संस्कृत हिन्दी टीका सहित ३-००
५९० थर्मामीटर (ताप-मापन)। डा० राजकुमार द्विवेदी। भाषा ०-२५
५९१ दन्त विज्ञान। गोपीनाथ। भाषा ०-३७
५९२ दवा का भूत-औषधियों में अंधविश्वास। भाषा ०-३७
५९३ दशमूल। (सचित्र) रूपलाल वैश्य। भाषा ०-५०
५९४ दही के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा २-५०
५९५ दाई की शिक्षा। दत्तात्रय वासुदेव चाफेकर। भाषा ४-००
५९६ दाँतों का डाक्टर या वैद्य। कालीचरन गुप्त। भाषा २-५०
५९७ दाँतों की चिकित्सा। वै० रामनारायण शर्मा। भाषा १-२५
५९८ दाम्पत्य जीवन। रामनारायण यादवेन्द्र। भाषा ३-००
५९९ दाम्पत्य जीवन। विजयबहादुर सिंह ४-००
६०० दिल्लगन चिकित्सा। भाषा ०-७५, १-५०
६०१ दीनजनचिकित्सा। वैद्य सत्यदेव। भाषा ४-००
६०२ दीर्घजीवन। विश्वेश्वर दयालु। भाषा १-००
६०३ दीर्घजीवन। गोपालराम गहमरी। भाषा ०-३७
६०४ दीर्घायु अर्थात् आरोग्य सूत्रावली। शंकर दाजी पदे। भाषा १-२५
६०५ दुग्ध कल्प। विट्ठलदास मोदी १-००
६०६ दुग्ध कल्प व दुग्ध चिकित्सा। डा० युगलकिशोर गुप्त। भाषा २-२५
६०७ दुग्धगुणविधान। डा० गणपति। भाषा १-००
६०८ दुग्ध चिकित्सा। महेन्द्रनाथ पाण्डेय „ ४-००
६०९ दुग्ध-चिकित्सा। लुई कूने। भाषा ०-२५
६१० दुग्ध-तक्रादि चिकित्सा। भागवत शरण। भाषा १-००
६११ दूध के गुण तथा उपयोग। सम्पादक—रामस्नेही। भाषा २-००
६१२ दूध-सचित्र। (समतोल आहार) डा. एन. एन. गोडबोले। भाषा ४-५०
६१३ दूध से सब रोगों का इलाज। डा० युगल किशोर गुप्त। भाषा १-००
६१४ दूध ही अमृत है। हनुमानप्रसाद गोयल। भाषा २-५०
६१५ दृष्ट फल चिकित्सा। (बंगला) प्रभाकर चटर्जी ४-००
६१६ देहात की दवाएँ। रमेश वेदी। भाषा ०-७५

६१७ देहातियों की तन्दुरुस्ती। केदारनाथ। भाषा ०-७५
६१८ देहाती अनुभूतयोग संग्रह। अमोलचन्द्र शुक्ल। भाषा १४-००
६१९ देहाती इलाज। रामनारायण शर्मा। भाषा २-५०
६२० देहाती इलाज। रमेश वेदी। भाषा १-००
६२१ देहाती जड़ीबूटियाँ। संन्यासियों की गुप्त बूटियाँ। भाषा ७-५०
६२२ देहाती प्राकृतिक चिकित्सा। सम्पादक-अमोलचन्द्र शुक्ल। भाषा ५-००
६२३ देहाती सरल होमियोपैथिक चिकित्सा। भाषा २-५०
६२४ देहाती होमियोपैथिक इन्जेक्शन-गाइड। भाषा ५-००
६२५ देहातों के रोग और उनकी चिकित्सा।
केशवकुमार ठाकुर। भाषा १-२५
६२६ दैनन्दिन रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा। कुलरंजन मुकर्जी „ ४-००
६२७ दैनिकप्रयोगावली। गंगाशरण (औषध निर्माण विज्ञान सहित) भाषा ३-५०
६२८ दैवत संहिता (आयुर्वेद प्रकरण) ५-००
६२९ दैव महौषधि। वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य ०-५०
६३० दोषकारणत्वमीमांसा। वैद्य प्रियव्रत शर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित १-००
६३१ द्रव्यगुणः। चक्रपाणिदत्त कृत। ज्वालाप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित २-४०
६३२ द्रव्यगुणमंजूषा। आचार्य शिवदत्त शुक्ल। प्रथम भाग २-००
६३३ द्रव्यगुण विज्ञान। वैद्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस.
अभिनव श्रेष्ठ संस्करण (१-३ भाग, २ जिल्द में) १६-५०
संशोधित द्वितीय संस्करण प्रथम भाग ७-०० द्वितीय तृतीय भाग १२-५०
६३४ द्रव्यगुण विज्ञानम्। वैद्य यादवजी कृत हिन्दी टीका सहित प्रथम भाग ४-७५
६३५ द्रव्यगुणशतकम्। त्रिमल्लभट्टकृत। शालग्राम कृत हिन्दी टीका सहित ०-७२
६३६ द्रव्यसंग्रह। अनु० मोहनलाल जैन शास्त्री। भाषा ०-५०
६३७ द्रव्यसंग्रह। अमृतलाल। भाषा ०-५०
६३८ द्रव्यसंग्रह विज्ञान। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल। भाषा १-२५
६३९ धतूरा के गुण तथा उपयोग। सम्पादक—रामस्नेही। भाषा १-१२
६४० धतूरा गुण विधान। गणपति सिंह वर्मा ०-६५
६४१ धनिया के उपयोग। उमेदीलाल वैश्य। भाषा ०-३०
६४२ धनिया के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-५०

६४३ धन्वन्तरि अंक। भाषा-माता (चेचक) अंक १-००
भगन्दर अंक १-०० मधुमेह अंक १-००
६४४ धन्वन्तरिनिघण्टुः-राजनिघण्टु। संस्कृत ६-५०
६४५ धन्वन्तरि परिचय। रघुवीर शरण शर्मा। भाषा २-५०
६४६ धन्वन्तरि विशेषांक। भाषा-कल्प एवं पंचकर्म चिकित्साङ्क ४-०
नारीरोगाङ्क १०-०० पुरुषरोगाङ्क ६-००
संक्रामक रोगाङ्क १-२ भाग ५-०० इंजेक्शन विज्ञानांक ४-००
चिकित्सासमन्वयाङ्क १-२ भाग ६-०० काय चिकित्साङ्क ८-५०
वनौषधि विशेषांक १-४ भाग ३५-५०
शिशुरोगांक ८-५० यूनानी चिकित्सांक ८-५०
६४७ धन्वन्तरिपूजा कथादर्श। (भगवत् धन्वन्तरि के चित्रयुक्त) भाषा ०-७५
६४८ धन्वन्तरि व्रतकल्प। सार्थ पूजा विधान कथा सहित १-००
६४९ धातुरोग और उसका इलाज। महेन्द्रनाथ पांडेय २-००
६५० धात्री विज्ञान। शिवदयाल गुप्त। भाषा ३-००
६५१ धूप हवा और सर्दी का इलाज। डा० युगलकिशोर चौधरी। भाषा १-००
६५२ नई मानसिक चिकित्सा। लालजीराम शुक्ल ५-५०
६५३ नपुंसक चिकित्सा। हरनारायण कोकचा। भाषा ६-००
६५४ नपुंसक चिकित्सा। (यौवन के गुप्त रहस्य) डा० गणपति सिंह। भाषा ३-००
६५५ नपुंसकामृतार्णव। रामप्रसाद कृत हिन्दीटीका सहित २-१०
६५६ नपुंसक संजीवन। शंकरदत्त गौड़। भाषा १-००
६५७ नमक (लवण) के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-५०
६५८ नरदेह परिचय। भट्टाचार्य। भाषा १-७५
६५९ नलपाक-पाकदर्पणम्। नलविरचित यन्त्रस्थ
६६० नवपरिभाषा। कविराज उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दीटीका सहित १-७५
६६१ नवयुवतियों को क्या जानना चाहिए ?। ज्योतिर्मयी ठाकुर ४-००
६६२ नवीन चिकित्सा। महावीरप्रसाद पोद्दार। भाषा १-५०
६६३ नवीन प्राकृतिक चिकित्सा। डा० हीरालाल। भाषा ३-५०
६६४ नवीन प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली। डा० लूई कुने। भाषा ६-००
६६५ नव्य चिकित्सा विज्ञान। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। १-२ भाग १६-००

६९४ नित्योपयोगी क्वाथ संग्रह । भाषा १-२५
६९५ नित्योपयोगी चूर्ण संग्रह । भाषा १-२५
६९६ निदान चिकित्सा हस्तामलक । रणजीतराय । प्र० खण्ड । भाषा ६-००
६९७ निदान पञ्चक । सर्वरोगसंप्राप्तिविज्ञान । चन्द्रशेखर-ठक्कुर (गुजराती) ३-००
६९८ निदान नवनीत चार्ट्स तथा निदान विश्वकोष ।
हरनारायण कोकचा । भाषा ८-००
६९९ निदानात्मक प्रयोग विधियां तथा विवेचन । एस. वी. व्यास । भाषा ५-५०
७०० निमोनिया चिकित्सा । डा० वी. एन. टण्डन । भाषा १-००
७०१ निम्बू और उसके सौ उपयोग । गंगा प्रसाद गांगेय । भाषा ०-३७
७०२ निम्बू के गुण तथा उपयोग । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा ०-७५
७०३ निम्बू गुण विधान । डा० गणपति वर्मा । भाषा ०-७५
७०४ नींबू संतरा-माल्टा । रामेश्वर 'अशान्त' २-२५
७०५ नीम और उसके सौ उपयोग । गंगा प्रसाद गांगेय । भाषा ०-३७
७०६ नीम के उपयोग । केदारनाथ पाठक । भाषा १-००
७०७ नीम के गुण तथा उपयोग । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा १-२५
७०८ नीमगुणविधान । डा० गणपति । भाषा १-००
७०९ नीमचिकित्साविधान । डा० सुरेश । भाषा ०-६२
७१० नीम : बकायन । रमेशवेदी । भाषा २-००
७११ नीरोग कैसे रहें ? महेन्द्रनाथ पांडेय । भाषा ०-६४
७१२ नीरोग जीवन । चतुरसेन शास्त्री । भाषा १-००
७१३ नीरोग होने का सच्चा उपाय । डा० आर. डी. ट्राल । भाषा १-००
७१४ नूतन अमृतसागर । भाषा । रफ कागज ८-००
७१५ नेत्ररक्षा व नेत्ररोगों की प्राकृतिक चिकित्सा । भाषा १-२५
७१६ नेत्र रोग विज्ञान (सचित्र) विश्वनाथ द्विवेदी । अत्युत्तम । भाषा १५-००
७१७ नेत्ररोग विज्ञान (सचित्र) डा० शिवदयाल गुप्त । भाषा ६-००
७१८ नेत्रसुधार (सचित्र) डा० आर० एस० अग्रवाल । सजिल्द ४-००
७१९ नेशलीडर इन होमियोपेथिक थेराप्युटिक्स । भट्टाचार्य । भाषा ६-५०
७२० नैसर्गिक आरोग्य । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा २-००
७२१ नोट्स आन मेटेरिया मेडिका । डा० श्यामसुन्दर शर्मा ३-००

७२२ न्यूमोनियाँ प्रकाश । टेचकरण वाजपेयी । भाषा ०-३७
७२३ पंचकर्म कल्पनांक । शिवकुमार व्यास १-५०
७२४ पंचकर्मविज्ञान । शिवकुमार व्यास ४-००
७२५ पञ्चकर्मविधान । जगन्नाथप्रसाद शुक्ल । भाषा १-००
७२६ पञ्चभूतविज्ञानम् । कविराज उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दीटीका सहित ४-००
७२७ पञ्चविध कषाय-कल्पना विज्ञान । डा० अवधविहारी अग्निहोत्री १-५०
७२८ पंचशील । दयानिधि शर्मा । भाषा ४-००
७२९ पञ्चसायकः । ज्योतीश्वराचार्यकृत । नर्मकेलिकौतुकसंवाद सहित १-००
७३० पञ्चसायकः (सचित्र) श्रीराधाकृष्ण शास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ३-००
७३१ पञ्चसायक । राजेश दीक्षित । हिन्दी टीका सहित ४-००
७३२ पत्नीपथप्रदर्शक । हरनाम दास । भाषा २-००
७३३ पथ्यापथ्यम् । हिन्दीटीका सहित २-००
७३४ पथ्यापथ्य चिकित्साङ्क (जय आयुर्वेद) ५-००
७३५ पथ्यापथ्य निरूपण । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा ०-७५
७३६ पथ्यापथ्यविनिर्णयः । खूबचन्द्र कृत हिन्दीटीका सहित ०-७५
७३७ पदार्थमीमांसा (प्रथम भाग) । त्र्यम्बकनाथ शर्मा । भाषा ३-००
७३८ पदार्थविज्ञानम् । कविराज सत्यनारायण शास्त्री कृत । संस्कृत ३-००
७३९ पदार्थ विज्ञानम् । श्री वागीश्वर शुक्ल बी. ए., ए. एम. एस. ८-००
७४० पदार्थविज्ञान । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा १-२५
७४१ पदार्थविज्ञान । बलवन्त शर्मा । हिन्दी टीकासहित ४-००
७४२ पदार्थविज्ञान और चिकित्सा । कवि० अम्बिकाचरण चक्रवर्ती । भाषा १-००
७४३ पदार्थ विद्या । वैद्य दुर्गादत्त पंत । भाषा यन्त्रस्थ
७४४ पदार्थविनिश्चय । दत्तात्रय अनन्त कुलकर्णी । भाषा १-००
७४५ पन्द्रह मिनट में स्वस्थ बनो । ब्रजभूषण मिश्र । भाषा १-६२
७४६ पपीता । रमेशवेदी । भाषा १-२५
७४७ पर्यायमुक्तावली । हरिचरण सेन कृत । संस्कृत ६-००
७४८ पर्यायरत्नमाला । श्री माधवकर कृत । संस्कृत ६-५०
७४९ परख कर देखिए । सुमित्रादेवी अग्रवाल । भाषा २-५०
७५० परमाणु के चमत्कार । जगपति चतुर्वेदी । भाषा २-००

७५१ परिचर्या और गृह प्रबन्ध । रानी टण्डन । भापा २-७०
७५२ परिभाषा प्रबन्ध । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल (परिभापा का श्रेष्ठग्रन्थ)। भाषा २-५०
७५३ परिवार आयोजन—बर्थ कन्ट्रोल । डा० सत्यवती ५-००
७५४ परिवार चिकित्सा । डॉ० युद्धवीर सिंह ३-५०
७५५ परिवार नियोजन क्या-क्यों और कैसे । डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ०-२५
७५६ परिवार नियोजन कब क्यों और कैसे ।
अत्रिदेव विद्यालङ्कार । भापा ३-००
७५७ परिवार नियोजन के लिए आपरेशन की विधि ।
डा० सुरेन्द्रनाथ गुप्त । भापा ०-२५
७५८ परिवार नियोजन क्यों और कैसे । विजयकुमार गुप्त ३-००
७५९ परिवार नियोजन : सुख का आयोजन । हरनारायण कोकचा ६-००
७६० परिवार में परमाणु । लाला फरमी । अनुवादक ज्ञानचन्द्र ३-७५
७६१ परिशिष्ट वनस्पति विप । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भापा २-००
७६२ परीक्षित प्रयोग । शिवदयालगुप्त तथा चन्द्रशेखर जैन १-२ भाग । भाषा २-००
७६३ पलाण्डु के गुण तथा उपयोग । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा ०-७५
७६४ पलाण्डुगुणविधान । डा० गणपति सिंह । भाषा ०-५०
७६५ पलाश । रमेशवेदी । भाषा १-२५
७६६ पशुओं का इलाज । भापा ०-७५
७६७ पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज । अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ६-००
७६८ पशुओं के घातक रोग और उपचार । आर्केश दीक्षित । भापा १-२५
७६९ पशुओं के रोग । व्यथित हृदय । भापा १-१२
७७० पशुओं के रोग व उपचार । आर० के० दीक्षित । भाषा १-२५
७७१ पशुओं के रोग और उनकी चिकित्सा । ए० ए० अनन्त । भाषा ५-००
७७२ पशुचिकित्सा । एम० एस० अग्रवाल २-५०
७७३ पशु चिकित्सा (नृपकल्पद्रुम) छन्दोवद्ध भाषा २-४०
७७४ पशुचिकित्सा (वड़ी) भापा ३-००
७७५ पशुचिकित्सा (वहुत वड़ी) ,, ४-००
७७६ पशु चिकित्सा (होमियो) गंगाधरमिश्र । भाषा २-२५
७७७ पशुचिकित्सा (वृहद्) । शालिहोत्र सहित ४-५०

७७८ पशु संक्रामक रोग चिकित्सक । राजेन्द्रप्रसाद सिंह ३-००
७७९ पशुरोग । ए० ए० अनन्त । भाषा ५-००
७८० पशुरोगचिकित्सा । श्री नर्गीन सिंह । भाषा ०-७५, ४-५०
७८१ पहला सुख निरोगी काया । विष्णुप्रभाकर । भाषा ०-५०
७८२ पाकप्रदीप और पुष्टिप्रकाश । हिन्दीटीका सहित १-३२
७८३ पाकभारती । अमोलचन्द्र शुक्ल । भाषा ६-००
७८४ पाक विज्ञान । ज्योतिर्मयी ठाकुर । भाषा ४-००
७८५ पाक विज्ञान । भाषा (दिल्ली) ३-००
७८६ पाकविज्ञान (बृहद्) निरामिष और आमिष । नृसिंहराम । भाषा ३-००
७८७ पाक विद्या । मणिराम शर्मा । भाषा १-००
७८८ पाकावली । मूल । संस्कृत ०-६२
७८९ पाकावली । हिन्दीटीका सहित १-२५
७९० पाचन-तन्त्र के रोगों की चिकित्सा । शरणप्रसाद २-००
७९१ पाचन प्रणाली के रोग । महेन्द्रनाथ । भाषा २-२५
७९२ पाचनसंस्थान की व्याधियाँ । कविराज विद्यानारायण शास्त्री । भाषा ०-५०
७९३ पाण्डुरोग । रामरक्ष पाठक । भाषा ५-००
७९४ पायरिया रोगांक । भाषा १-००
७९५ पारदसंहिता । हिन्दीटीका सहित दुष्प्राप्य
७९६ पारिवारिक चिकित्सा । भट्टाचार्य । भाषा १०-००
७९७ पारिवारिकचिकित्सा-संक्षिप्त । भट्टाचार्य । भाषा ३-००
७९८ पारिवारिक भेषजतत्त्व । भट्टाचार्य । भाषा ६-००
७९९ पारिषद्यं शब्दार्थ शारीरम् । दामोदर शर्मा गौड़ ४-५०
८०० पालतू पशु । कमलाकान्त पाण्डेय । भाषा ०-६२
८०१ पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान (मेटेरिया मेडिका) रामसुशील सिंह । भाषा । प्रथम भाग समाप्त द्वितीय भाग ३०-००
८०२ पीपल । रमेश बेदी । भाषा १-२५
८०३ पीपल के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा १-००
८०४ पीपलगुणविधान । डा० गणपति । भाषा ०-५०
८०५ पुरानी बीमारियाँ । डा० सरस्वतीप्रसाद मिश्र । भाषा ४-५०

८०६ पुराने रोगों की गृह चिकित्सा। कुलरञ्जन मुखर्जी। भाषा ४-००
८०७ पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा। हरनारायण कोकचा ३-००
८०८ पुरुष गुप्तरोग चिकित्सा। ऋषिकुमार शर्मा। भाषा १-२५
८०९ पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा-नवनीत चार्टस तथा पुरुष गुप्त रोग
विश्वकोष। हरनारायण कोकचा २-५०
८१० पुरुष जीवन संदेश। परशुराम जोशी १-२५
८११ पुरुषरोग चिकित्सांक। चन्द्रशेखर जैन शास्त्री। भाषा ३-५०
८१२ पुरुषरोगाङ्क। भाषा ६-००
८१३ पुरुष-विज्ञान। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल। भाषा ७-००
८१४ पुरुषेन्द्रिय के रोग। डा० टण्डन ,, २-२५
८१५ पुष्पविज्ञान। हनुमानप्रसाद शर्मा। भाषा १-२५
८१६ पेट और आतों के रोग। डा० युगलकिशोर चौधरी। भाषा २-५०
८१७ पेटेंट अद्वयात अर्थात् नवीन प्रमाणित औषधियां। भाषा।
सम्पादक-रघुवीरशरण वंसल ६-००
८१८ पेटेण्ट औषधें और भारतवर्ष (परिष्कृत संस्करण) १-२ भाग,
११३० दवाइयों के योग युक्त। रामकृष्ण वर्मा। भाषा ८-००
८१९ पेटेण्ट चिकित्सा (एलोपेथिक) डा० अयोध्यानाथ पाण्डेय। भाषा २-५०
८२० पेटेण्ट प्रेस्क्राइबर (पेटेण्ट मेडिसिन्स-Current
Therapeutics) डा. रमानाथ द्विवेदी। (अभिनव संस्करण) ८-००
८२१ पेठा-कद्दू। रमेशवेदी। भाषा ०-७५
८२२ पेनिसिलिन की कहानी। जगपति चतुर्वेदी। भाषा २-००
८२३ पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन विज्ञान तथा मूत्र परीक्षा। भाषा १-२५
८२४ पैसे पैसे के चुटकुले। डा० गणपति सिंह। भाषा ३-००
८२५ पैसे पैसे के चुटकुले। अमोलचन्द्र शुक्ला। भाषा ४-५०
८२६ पोलियो तथा आयुर्वेद। ओमप्रकाश ८-००
८२७ प्रतिश्याय-जुकाम। श्यामलाल 'सुहृद'। भाषा ०-३१
८२८ प्रतिसंस्कृतनिदानचिकित्सा। केवल दूसरा भाग। घनानन्दपन्त १-००
८२९ प्रत्यक्षशारीरम् (संस्कृत)। गणनाथसेन कृत। प्रथम भाग यन्त्रस्थ
तृतीय भाग यन्त्रस्थ द्वितीय भाग मात्र ६-७५

८३० प्रत्यक्षशारीरम् (हिन्दी)। गणनाथ सेन । प्रथम-द्वितीय भाग २५-००
प्रथम भाग १०-०० द्वितीय भाग १५-००
८३१ प्रत्यक्षशारीर कोश । एस. सी. सेन गुप्त ८-००
८३२ प्रमाण विज्ञान । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भापा २-५०
८३३ प्रमेह रोगांक । सं० ज्ञानेन्द्र पाण्डेय । भापा ४-००
८३४ प्रमेह विवेचन । महेन्द्रनाथ । भापा २-००
८३५ प्रयोगमणिमाला । २५१ वैद्यों के ५०१ प्रयोग । भापा ८-००
८३६ प्रयोगमणिमालांक । भापा ४-००
८३७ प्रयोगरत्नावली । केदारनाथ पाठक । भापा २-००
८३८ प्रयोग साहस्री । उत्तरखण्ड । रामदेव त्रिपाठी । भापा १-८७
८३९ प्रवेशिका भौतिकी (पदार्थविज्ञान परिचय) । गणेशप्रसाद दूबे
शिवनन्दन प्रसाद । भापा ६-५०
८४० प्रसूति तन्त्र । (जच्चा बच्चा) रामदयाल कपूर । भापा ५-७५
८४१ प्रसूति तंत्र । वामनकृष्ण पटवर्धन । भापा १५-००
८४२ प्रसूतिविज्ञान (सचित्र) डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. १०-००
८४३ प्रसूति शास्त्र । डा० चमनलाल । भापा १२-००
८४४ प्राकृतिक चिकित्सा । रामनारायण वर्मा । भापा ०-८५
८४५ प्राकृतिक चिकित्सा । केदारनाथ गुप्त । भापा ५-००
८४६ प्राकृतिक चिकित्सा (अभिनव) कुलरञ्जन मुखर्जी । भापा ४-००
८४७ प्राकृतिक चिकित्सा पथ-प्रदर्शक । युगलकिशोर चौधरी । भापा ०-३७
८४८ प्राकृतिक चिकित्सा क्या व कैसे । महावीरप्रसाद पोद्दार । भापा १-००
८४९ प्राकृतिक चिकित्सा क्यों और कैसे । स्वामी शङ्करानंद सरस्वती ३-००
८५० प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार । महावीरप्रसाद पोद्दार । भापा १-५०
८५१ प्राकृतिक चिकित्सा प्रश्नोत्तरी । युगल किशोर चौधरी । भापा ०-८५
८५२ प्राकृतिक चिकित्सा-विधि । शरणप्रसाद २-५०
८५३ प्राकृतिक चिकित्सा सागर । डा० युगलकिशोर चौधरी । भापा १-१२
८५४ प्राकृतिक चिकित्सासार । के० प्रसाद । भापा ६-००
८५५ प्राकृतिक चिकित्सा सिद्धान्त और व्यवहार ।
डा० हीरालाल । प्रथम भाग १०-००

८५६ प्राकृतिक चिकित्सा सूर्योदय। डा० युगलकिशोर चौधरी। भाषा १–००
८५७ प्राकृतिक जीवन की ओर। विट्ठलदास मोदी। भाषा १–५०, ४–००
८५८ प्राकृतिक ज्वर। राधावल्लभ। भाषा ०–३१
८५९ प्राकृतिक शिशुचिकित्सा। डा० सुरेश। भाषा २–००
८६० प्राचीन भारत में रसायन का विकास। डॉ० सत्यप्रकाश। भाषा १४–००
८६१ प्राचीन व्यायाम पद्धति–बड़ा योगासन। स्वामी सेवानंद २–५०
८६२ प्राच्यशल्य तन्त्र। बालकराम शुक्ल। प्रथम भाग १०–००
८६३ प्राणायाम मीमांसा। विजयबहादुर सिंह १–५०
८६४ प्राणिज औषधि। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल। भाषा ०–५०
८६५ प्राथमिक चिकित्सा। डा० डी. पी. मैत्र „ १–००
८६६ प्राथमिक चिकित्सा एवं जन-प्रतिरक्षा। केवल धीर २–००
८६७ प्राथमिक सहायता। लाल बहादुर लाल श्रीवास्तव। भाषा २–००
८६८ प्रारम्भिक उद्भिद (वनस्पति) शास्त्र। प्रो० बलवन्तसिंह। भाषा ४–५०
८६९ प्रारम्भिक उपचारः। गणेशदत्त कृत हिन्दी टीका सहित १–००
८७० प्रारम्भिकजीवविज्ञान। १–२ भाग। सन्तप्रसाद टण्डन। भाषा ४–६४
प्रथम भाग। प्राणि विज्ञान २–४७ द्वितीय भाग। वनस्पति विज्ञान २–४७
८७१ प्रारंभिक पाठशाला प्रबन्ध तथा स्वास्थ्य रक्षा। रानीटंडन-संतप्रसाद टंडन। भाषा ३–५०
८७२ प्रारम्भिक–भौतिकी। निहालकरण सेठी। द्वितीय संस्करण। भाषा ५–५०
८७३ प्रारम्भिक–रसायन। फूलदेवसहाय वर्मा। तृतीय संस्करण „ ४–५०
८७४ प्रारम्भिक रसायन। अमीचन्द्र विद्यालङ्कार। भाषा १–५०
८७५ प्रारम्भिक स्वास्थ्य। गौरी शंकर। भाषा ०–३७
८७६ प्रेमसूत्र। काशीराम चावला। भाषा ३–००
८७७ प्रैक्टिस आफ मेडिसिन (चिकित्सा-विज्ञान) श्यामसुन्दर शर्मा ३–५०
८७८ प्याज के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०–७५
८७९ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा। कविराज ब्रह्मानन्द। भाषा ०–३५
८८० प्लीहा रोग चिकित्सा। ज्ञानचन्द। भाषा ०–२५
८८१ प्लेग की बीमारी और बचने के उपाय। भाषा ०–०६
८८२ फ़ल उनके गुण तथा उपयोग। केशवकुमार ठाकुर। भाषा २–५०

८८३ फल संरक्षण । डा० गोरखप्रसाद-वीरेन्द्रनारायण सिंह । भाषा २-५०
८८४ फलसंरक्षणविज्ञान । डा० कविराज युगलकिशोर गुप्त । भाषा १-००
८८५ फल सब्जी संरक्षण । जगपति चतुर्वेदी । भाषा १-००
८८६ फलाहार । सन्तराम । भाषा १-४५
८८७ फलाहार चिकित्सा । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा २-५०
८८८ फलों की खेती । डा० नारायण दुलीचन्द व्यास । भाषा ३-५०
८८९ फलों की खेती । भाषा ३-५०
८९० फलों द्वारा इलाज । भाषा २-००
८९१ फलों से इलाज । डा० गणपति सिंह । भाषा २-५०
८९२ फलों द्वारा चिकित्सा । हकीम मुहम्मद अब्दुल्ला । भाषा २-००
८९३ फसल के शत्रु । शङ्करराव जोशी । भाषा ३-५०
८९४ फसल रक्षक औषधियाँ । रामेश्वर अशान्त २-२५
८९५ फसलरक्षा की दवाएँ । जगपति चतुर्वेदी । भाषा ०-५०
८९६ फिटकड़ीगुणविधान । डा० गणपति सिंह । भाषा १-५०
८९७ फिटकरी । (स्फटिका) । भाषा ०-३७
८९८ फिटकरी के गुण तथा उपयोग । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा २-५०
८९९ फुफ्फुसपरीक्षा । रमेशचन्द्र वर्मा । भाषा १-२५
९०० फुफ्फुस सन्निपात चिकित्सा । हनुमत प्रसाद जोशी । भाषा २-६६
९०१ फेफड़ों की परीक्षा, रोग व चिकित्सा (सचित्र) कविराज शिवशरण शर्मा । भाषा ५-००
९०२ फैमिली प्लानिंग । के० सत्यवती । भाषा ५-००
९०३ बच्चों का पालन और रोगों की चिकित्सा । युगलकिशोर । भाषा १-५०
९०४ बच्चों का पालन और स्त्री चिकित्सा । २ जिल्दमें ,, ,, भाषा ६-५०
९०५ बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग । विट्ठलदास मोदी । भाषा ३-००
९०६ बच्चों की सरल होमियोपैथिक चिकित्सा । डा० एस. डी. अग्रवाल । भाषा २-५०
९०७ बबूल के गुण तथा उपयोग । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा १-००
९०८ बबूलगुणविधान । डा० गणपति सिंह । भाषा ०-५०
९०९ बबूल चिकित्सा विधान । डा० सुरेश । भाषा ०-३७
९१० बरगद । रमेशवेदी । भाषा १-००

१११ बरगद (बड़) के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-८८
११२ बर्थ कंट्रोल : क्या क्यों, कैसे । डा० केवलधीर । सचित्र ३-२५
११३ बर्नेट के ५० कारण । भट्टाचार्य । भाषा १-५०
११४ बस्तिशलाकाप्रवेश (एनीमा और कैथेटर) डा. राजकुमार द्विवेदी ०-४०
११५ बहेड़ा । रमेश वेदी । भाषा १-५०
११६ बांसा (अडूसा) बूटी के गुण तथा उपयोग । रामनारायणशर्मा । भाषा १-२५
११७ बादाम के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-७५
११८ बापू और प्राकृतिक चिकित्सा । डा० हीरालाल । भाषा ०-३१
११९ बायोकेमिकचिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा ४-००
१२० बायोकेमिक चिकित्सा विज्ञान । भट्टाचार्य । भाषा ६-५०
१२१ बायोकेमिक चिकित्साशास्त्र । शिवनाथ सिंह १-७५
१२२ बायोकेमिक चिकित्सासार । भट्टाचार्य । भाषा २-००
१२३ बायोकेमिक पाकेट गाईड । सुरेश । भाषा १-००
१२४ बायोकेमिक मिक्सचर । एस. ए. माजिद । भाषा ०-६५
१२५ बायोकेमिक मेटेरिया मेडिका (जीवन रसायन शास्त्र)
डा० श्यामसुन्दर शर्मा ३-५०
१२६ बायोकेमिकरहस्य । डा० कैलाशभूषण त्रिपाठी । भाषा १-५०
१२७ बायोकेमिक रेपर्टरी । डा० कामता प्रसाद मिश्र । भाषा ५-००
१२८ बायोकेमिक विज्ञान चिकित्सा । भाषा १-२५
१२९ बायोकेमिस्ट्री । डा० अनन्तलाल शर्मा १-००
१३० बाल चिकित्सा । पं० किशोरीदत्त । भाषा १-५०
१३१ बालकों का पालन-पोषण । एस० टी० आचार । भाषा २-५०
१३२ बालतन्त्रम् । कल्याणवैद्यकृत हिन्दी टीका सहित ३-००
१३३ बालरोग चिकित्सा । पं० ऋषिकुमार शर्मा । भाषा १-२५
१३४ बालरोग चिकित्सा । डा० रमानाथ द्विवेदी ६-००
१३५ बाह्यप्रयोग की औषधियाँ (होमियोपैथिक) सरस्वतीप्रसाद मिश्र १-००
१३६ बीमारी कैसे दूर करें । भाषा ०-३७
१३७ बीसवीं शताब्दी की औषधियाँ । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा ८-००
१३८ बुखार का अचूक इलाज । युगल किशोर चौधरी । भाषा ०-७५

१३९ बुढ़ापा और बीमारी से बचने के सरल उपाय। भाषा ०-७५
१४० वृद्धों का आरोग्य। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल। भाषा ५-००
१४१ बृहच्छारीरम्। वारियर कृत। संस्कृत २०-००
१४२ बृहत् आसवारिष्ट संग्रह। दूसरा भाग मात्र। कृष्णप्रसाद मिश्र। भाषा २-५०
१४३ बृहद् आसवारिष्ट संग्रह। कविराज देवीसिंह। भाषा ३-५०
१४४ बृहत् कम्पाउन्ड्री शिक्षा। डा. आर. एल. बंसल ,, ३-००
१४५ बृहद् कम्पाउण्डरी शिक्षा। डा० रा० कु० दीक्षित। भाषा २-५०
१४६ बृहन्निघण्टुरत्नाकरः। शालिग्रामकृत हिन्दीटीकासहित।
चतुर्थ भाग ६-६० पञ्चम भाग १६-२० षष्ठ भाग १४-४०
सप्तम-अष्टम भाग समाप्त भाग चार से षष्ठ तक ४३-२०
१४७ बृहत् पाकसंग्रह। श्री कृष्णप्रसाद त्रिवेदी। भाषा ४-००
१४८ बृहत् पाकावली। हिन्दी टीका १-२५
१४९ बृहद् बूटी प्रचार। भाषा २-५०
१५० बृहद्योगतरङ्गिणी। त्रिमल्लभट्टकृत १-२ भाग। संस्कृत १६-२५
१५१ बृहद् रसराजसुन्दरः। दत्तराम चौबेकृत हिन्दी टीका सहित १२-००
१५२ बृहत् होमियोपैथिक मेटेरिया-मेडिका। डा० टण्डन।
१-२ भाग। भाषा १३-७५
१५३ बृहत् होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका। १-२ भाग भट्टाचार्य ,, २५-००
१५४ बोपदेववैद्यकशतकम्। हिन्दी टीका सहित १-०२
१५५ व्रण बन्धन (पट्टी बांधना)। डा० भवानी प्रसाद। भाषा ४-२५
१५६ ब्रह्मचर्य। १-२ भाग। महात्मा गांधी। भाषा २-५०
१५७ ब्रह्मचर्य की महिमा। सूर्यबली सिंह ,, १-५०
१५८ ब्रह्मचर्य के अनुभव। म० गांधी ,, १-५०
१५९ ब्रह्मचर्य के साधन। ब्रह्मचारी भगवान देव। १-१० भाग। भाषा ३-६०
१६० ब्रह्मचर्य क्यों और कैसे। स्वामी शंकरानंद। सचित्र। भाषा २-५०
१६१ ब्रह्मचर्य जीवन। स्वामी योगानन्द। भाषा १-५०
१६२ ब्रह्मचर्य-जीवन है। सचित्र। स्वामी शंकरानंद सरस्वती। भाषा २-५०
१६३ ब्रह्मचर्य मीमांसा। विजय बहादुर। भाषा १-२५
१६४ ब्रह्मचर्य विवाह के पहले और विवाह के बाद। हीरालाल ३-००

१६५ ब्रह्मचर्यविवेक। भाषा ३-००
१६६ ब्रह्मचर्यशतकम्। मेधाव्रत। हिन्दी टीका सहित ०-६५
१६७ ब्रह्मचर्यसाधन। स्वामी निगमानन्द सरस्वती देव १-५०
१६८ ब्रह्मचर्य ही जीवन है। शिवानन्द। भाषा २-००
१६९ ब्रह्मचर्य-सचित्र। सातवलेकर। हिन्दी टीका सहित १-५०
१७० ब्रह्मचर्य सन्देश। सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार। भाषा ४-५०
१७१ ब्रह्मचर्यसाधन। चतुरसेन शास्त्री। भाषा २-००
१७२ ब्रह्मचर्य साधन। विष्णुदत्त श्रीश। भाषा १-२५
१७३ ब्रह्मचर्यामृत अर्थात् जीवनसन्देश। ब्रह्मचारी भगवानदेव। भाषा ०-३७
१७४ भस्मपर्पटी। देवीशरण गर्ग। भाषा ०-१०
१७५ भस्मविज्ञान। १-२ भाग। हरिशरणानन्द। भाषा १०-००
१७६ भारतभैषज्यरत्नाकरः। हिन्दी टीका सहितः। १-५ भाग समाप्त
१७७ भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटेन्ट मेडिसिन। भाषा १-५०
१७८ भारतीय जड़ी बूटी अर्थात् संन्यासियों की गुप्त बूटियां।
१-२ भाग। डा० गणपति। भाषा ६-००
१७९ भारतीय जनता का स्वास्थ्य तथा आयुर्वेद। भाषा ०-७५
१८० भारतीय जीवाणु विज्ञान। श्रीरघुवीर शरण शर्मा वैद्य। भाषा २-५०
१८१ भारतीय निसर्ग उपचारपद्धति। मराठी ०-२५
१८२ भारतीय नूतन योग संचय। बद्रीनारायण शास्त्री। भाषा १-००
१८३ भारतीय भौतिकविज्ञान। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा १-२५
१८४ भारतीय मल्ल शिक्षा (सचित्र)। श्यामसुन्दर 'सुमन'। भाषा २-५०
१८५ भारतीय-रसपद्धति। कविराज श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार। भाषा १-५०
१८६ भारतीय-रसशास्त्र। बापालाल ग० शाह (गुजराती) १२-००
१८७ भारतीय रसायन शास्त्र। विश्वेश्वर दयालु १-००
१८८ भारतीय वनौषधि (सचित्र)। [बंगला भाषा]
डा० के. पी. विश्वास। १-३ भाग २२-००
१८९ भावप्रकाशः। मध्यमोत्तरखण्ड समाप्त मूल-पूर्वार्द्ध ३-००
१९० भावप्रकाशः। नवीन वैज्ञानिक 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका
परिशिष्टसहित पूर्वार्द्ध १२-०० मध्यमोत्तरखण्ड १५-०० संपूर्ण २६-००

९९१ भावप्रकाश-ज्वराधिकारः। विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित ५-००
९९२ भावप्रकाशनिघण्टुः। आयुर्वेदिक कालेज के छात्रों के लिये डा० श्रीकृष्णचन्द्र चुनेकर विरचित विमर्शात्मक हिन्दी व्याख्या से विभूषित नवीन मौलिक संस्करण। सम्पादक-आयुर्वेदाचार्य डा० गङ्गासहाय पाण्डेय ६-००
९९३ भिन्न-भिन्न रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा। १-००
९९४ भिलावा। रमेश वेदी। भाषा १-५०
९९५ भिषक् कर्मसिद्धि। डा० रमानाथ द्विवेदी २०-००
९९६ भिषग् विलासः। (चित्रकाव्य) रसायन विलास नामक प्रथम विलास। हिन्दी टीका सहित ०-५०
९९७ भूलोक का अमृत-गाय का दूध। भाषा ०-७५
९९८ भेलसंहिता-सटिप्पण। पं. गिरिजा दयालु शुक्ल संशोधित संपादित १०-००
९९९ भेषजलक्षणसंग्रह। (बृहत् होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका) १-२ भाग। भट्टाचार्य। भाषा २५-००
१००० भेषजविधान। भट्टाचार्य। भाषा ३-००
१००१ भेषजसार। सुरेशप्रसाद ,, २-००
१००२ भेषजसंहिता। (आयुर्वेदिक फार्माकोपिया) ४-५०
१००३ भैषज संहिता। अत्रिदेव विद्यालंकार। भाषा ४-५०
१००४ भैषज्य कल्पना विज्ञान। (सचित्र) डॉ० अवधविहारी अग्निहोत्री ५-००
१००५ भैषज्य भास्कर। रामचरणमिश्र। भाषा। प्रथम खंड १-२५
१००६ भैषज्यरत्नावली। नवीन वैज्ञानिक 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका 'विमर्श' 'टिप्पणी'-परिशिष्ट सहित। कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री। पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री सम्पादित परिष्कृत द्वितीय संस्करण १६-००
१००७ भैषज्यरत्नावली। विनोदलालसेन कृत संस्कृत टीका सहित ८-००
१००८ भैषज्यरहस्य। (होमियो०) डा० टण्डन। भाषा ५-००
१००९ भैषज्य सुपथ। लक्ष्मीप्रसाद गुप्त। भाषा ३-००
१०१० भोजन। भगवानदेव। भाषा ०-६५
१०११ भोजन एवं स्वास्थ्य। स्वामी शंकरानंद सरस्वती। भाषा २-५०
१०१२ भोजन और स्वास्थ्य। डा० सत्यप्रकाश। भाषा ३-००
१०१३ भोजन और स्वास्थ्य। डा० जी० एस० सहारिया-श्रीमती ए० के० सहारिया ३-००

१०१४ भोजन और पाचन । ज्योतिर्मयी ठाकुर । भाषा २-५०
१०१५ भोजनकुतूहलम् । रघुनाथ विरचित । प्रथम भाग ४-००
१०१६ भोजन क्या, क्यों और कैसे ? डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ४-००
१०१७ भोजन द्वारा चिकित्सा । कालीचरण गुप्त ०-५०
१०१८ भोजन द्वारा स्वास्थ्य । हरनामदास २-००
१०१९ भोजनशास्त्र । रुक्मिणी देवी । भाषा ३-००
१०२० भोजन ही अमृत है । महेन्द्रनाथ । भाषा १-७५
१०२१ मकरध्वज । (चन्द्रोदय तथा स्वर्णसिन्दूर बनाने की विधि) भाषा ०-५०
१०२२ मकरध्वज सिद्धयोगसंग्रह । शम्भूनाथ । भाषा ३-००
१०२३ मखजन उल मुफरदात । (निघण्टु विज्ञान) यूनानी । भाषा २-००
१०२४ मगरैला के उपयोग । उमेदीलाल वैश्य । भाषा ०-३०
१०२५ मठा उसके गुण तथा उपयोग । महेन्द्रनाथ । भाषा १-००
१०२६ मठा के गुण तथा उपयोग । ०-७५
१०२७ मदनपालनिघण्टुः । संस्कृत । सटिप्पण १-००
१०२८ मदनपालनिघण्टुः । वैद्य रामप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित ४-८०
१०२९ मदनपालनिघण्टु । (हिन्दी) शक्तिधर कृत ३-००
१०३० मधु के उपयोग । केदारनाथ । भाषा १-००
१०३१ मधु (शहद) के गुण तथा उपयोग । के० प्रसाद । भाषा २-५०
१०३२ मधुगुणविधान । डा० गणपति । भाषा १-५०
१०३३ मधुचिकित्सा । रामचन्द्र वर्मा । भाषा ०-३१
१०३४ मधु चिकित्सा विधान । डा० सुरेश । भाषा ०-५०
१०३५ मधु मक्खी पालन । दयाराम जुगड़ाण ,, ३-००
१०३६ मधुमेह । पुच्चा व्यंकट रामय्या ०-७५
१०३७ मधुमेह । परशुराम शास्त्री १-००
१०३८ मधुमेह : निदान और उपचार । महेन्द्रनाथपाण्डेय । भाषा २-००
१०३९ मधुमेह अंक (धन्वन्तरि) । १-००
१०४० मधुमेहचिकित्सा । महेन्द्रनाथ । भाषा ०-३८
१०४१ मनुष्य और मस्तिष्क । श्यामलाल 'सुहृद' । भाषा ०-१६
१०४२ मनुष्य पूर्ण निरोगी कैसे हो । रामजीलाल शर्मा । भाषा ७-००

१०४३ मनुष्य शरीर और स्वास्थ्य । रानी टंडन । भाषा ४-५०
१०४४ मनुष्य शरीर की श्रेष्ठता । देवीप्रसाद खत्री । भाषा ०-५०
१०४५ मनोरञ्जन और दिलबहलाव । श्यामलाल 'सुहृद' । भाषा ०-१२
१०४६ मन्थरज्वर चिकित्सा । कविराज हरिवल्लभ । भाषा २-००
१०४७ मन्थरज्वरविज्ञान । हरिशरणानन्द । भाषा २-००
१०४८ मन्दाग्नि । रामजीवन शर्मा । भाषा १-००
१०४९ मरहम बनाना । रामनारायण शर्मा वैद्य । भाषा १-२५
१०५० मर्दनशास्त्र पौर्वात्य व पाश्चिमात्य । डा० र० कृ० गर्दे । मराठी १-५०
१०५१ मर्म-विज्ञान । (सचित्र) आचार्य रामरक्ष पाठक । भाषा ३-५०
१०५२ मल-मूत्र-कफ-रक्तादि परीक्षा । (बृहत्) सचित्र
(Clinical Pathology including Laboratory technique, Parasitology & Bacteriology) डा० शिवनाथ खन्ना । भाषा १२-००
१०५३ मलेरिया । डा० युगलकिशोर चौधरी । भाषा १-००
१०५४ मलेरिया-एलोपैथिक । मनमोहन धूप । भाषा २-२५
१०५५ मलेरिया और कालाजार चिकित्सा । राधाचन्द्र भट्टाचार्य । भाषा १-७५
१०५६ मवेशियों की घरेलू चिकित्सा । डा० सुरेश । भाषा १-००
१०५७ मवेशियों के कृमिरोग । जगपति चतुर्वेदी । भाषा ०-५०
१०५८ मवेशियों के विविध रोग । जगपति चतुर्वेदी । भाषा ०-५०
१०५९ मवेशियों के साधारण रोग । जगपति चतुर्वेदी । भाषा ०-५०
१०६० महात्मा जी के १२५१ नुसखे । महात्मा कौड़ीराम जी । भाषा ३-००
१०६१ महादेवरत्नप्रकाश । (अनुभूतवैद्यक) चारोखंड । महादेवप्रसाद । भाषा ४-००
१०६२ महामारी का विवेचन । हिन्दी टीका सहित ०-६२
१०६३ महाविष । जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल । भाषा ३-००
१०६४ महिला जीवन । स्त्री-जीवन को सफल व स्वस्थ बनाने का मार्ग ।
सरोजनी देवी वैद्या । भाषा १६-००
१०६५ महिलारोग चिकित्सांक (तत्काल फलप्रयोग का तीसरा भाग) २-००
१०६६ महिलाओं के रोग : निदान तथा उपचार । महेन्द्रनाथ पाण्डेय २-५०
१०६६(ख) महौषध-निघण्टुः । आर्यदास कुमारसिंह वैद्य प्रणीत ।
सविमर्श 'विद्योतिनी' हिन्दी टीका सहित [illegible]
१०६७ माँ और बच्चा । डा० बोधराज चोपड़ा । भाषा २-७५
१०६८ माडर्न एलोपैथिक मेडिसिन्स । रामकुमार गुप्त ६-००

१०६९ मॉडर्न डायग्नोसिस (निदान की आधुनिक प्रक्रिया)
डा० केशवानन्द नौटियाल १०–००
१०७० माडर्न मेडिकल ट्रीटमेंट । एम० एल० गुजराल । भाषा २०–००
१०७१ मातृकला और शिशुपालन । हीरालाल ५–००
१०७२ मानव शरीर विज्ञान । यदुवीर सिन्हा । भाषा २–५८
१०७३ माधवनिदानम् । 'सुधालहरी' संस्कृत टीका परिशिष्ट सहित गुटका यन्त्रस्थ
१०७४ माधवनिदानम् । मधुकोश–आतङ्कदर्पण संस्कृत व्याख्याद्वय सहित ७–००
१०७५ माधवनिदानम् । मधुकोश व्याख्या, विद्योतिनी हिन्दी टीका वैज्ञानिक विमर्शयुक्त । सम्पादक–वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय । परिष्कृत द्वितीय श्रेष्ठ संस्करण । पूर्वार्ध ७–५०, उत्तरार्ध ७–५०, संपूर्ण १४–००
१०७६ माधवनिदानम् । मधुकोश संस्कृत व्याख्या, मनोरमा हिन्दी टीका सहित ६–०
१०७७ माधवनिदानम् । सर्वाङ्गसुन्दरी विस्तृत हिन्दी टीका सहित ४–५००
१०७८ मानव शरीर दीपिका । मुकुन्दस्वरूप वर्मा । भाषा ६–००
१०७९ मानव शरीर रचना । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । प्रथम भाग ३०–००
१०८० मानव शरीर रचना विज्ञान । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा १४–००
१०८१ मानव शरीर रहस्य । १–२ भाग । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । भाषा ८–००
१०८२ मानव संतति–प्रसूतिशास्त्र । कविराज वलवन्त सिंह । भाषा २–१०
१०८३ मानवोत्पत्ति विज्ञान । (प्रथम भाग) वैद्य चन्द्रिकानारायण शर्मा २–५०
१०८४ मानसरोगविज्ञान । डा० बालकृष्ण पाठक । भाषा ५–७५
१०८५ मानसिक चिकित्सा । लालजी राम शुक्ल । भाषा ४–२५
१०८६ मानसिक दक्षता । राजेन्द्र विहारीलाल । भाषा ३–००
१०८७ मासिकधर्म एवं गर्भपात । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा १–००
१०८८ मासिक विकार और गर्भपात । प्रियकुमार चौबे । भाषा १–००
१०८९ मिट्टी चिकित्सा (गुण और उपयोग) । युगल किशोर चौधरी ०–७५
१०९० मिट्टी सभी रोगों की रामबाण ओषधि है । भाषा ०–५०
१०९१ मिडवाइफरी–दाईगिरी शिक्षा । श्रीमती बसन्तीरानी गुप्ता । भाषा ४–००
१०९२ मिरच के गुण तथा उपयोग । अमोलचन्द्र शुक्ला । भाषा ०–८८
१०९३ मिर्चे । रमेशवेदी । भाषा १–००
१०९४ मीजानतिब्ब अर्थात् सर्वाङ्गचिकित्सा । भाषा ३–५०

१०९५ मुकलावा बहार। दशों भाग सचित्र। अर्जुनलाल अग्रवाल। भाषा ६-००
१०९६ मुखरोगविज्ञान। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा २-७५
१०९७ मूत्र के रोग। डा० घाणेकर। भाषा ६-००
१०९८ मूत्र परीक्षा। एस० के० जायसवाल। भाषा ०-५०
१०९९ मूत्र परीक्षा। भट्टाचार्य। भाषा १-५०
११०० मूत्रविज्ञान। हरिशरणानन्द। भाषा १-५०
११०१ मूली के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा १-००
११०२ मेघविनोद। मेघमुनि। भाषा ६-००
११०३ मेटेरिया मेडिका। रेपर्टरी सहित। डा० विलियम बोरिक १५-००
११०४ मेटेरिया मेडिका तथा फ़ार्मेसी। डा० राधावल्लभ पाठक। भाषा ८-००
११०५ मेडिकल डिक्शनरी (चौखम्बा)। एंग्लो-हिन्दी २०-००
११०६ मेडिकल सर्टिफिकेट। डा० श्यामसुन्दर शर्मा १-२५
११०७ मेरे होम्योपैथ बनने के पचास कारण। १-५०
११०८ मेथी के उपयोग। उमेदीलाल वैश्य। भाषा ०-३०
११०९ मेंहदी के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-७५
१११० मैं तन्दुरुस्त हूँ या बीमार ? लुई कुने ,, ०-५०
११११ मैं निरोग हूँ या रोगी ? लुई कुने ,, ०-६२
१११२ मोटापन कम करने का उपाय। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी। भाषा २-००
१११३ मोटापा कम करने के उपाय। प्रभुनारायण त्रिपाठी। भाषा १-००
१११४ यकृत् के रोग और उनकी चिकित्सा। वैद्य श्री सभाकान्त २-००
१११५ यकृत्-चिकित्सा। डा० श्यामसुन्दर शर्मा। भाषा ०-७५
१११६ यकृत और प्लीहा के रोग। भाषा ०-५०
१११७ यक्ष्मा चिकित्सा। (बंगला) प्रभाकर चट्टोपाध्याय। १-२ भाग ७-५०
१११८ यक्ष्म चिकित्सा। क्षय-रोग की प्राकृतिक अचूक चिकित्सा। भाषा ६-५०
१११९ यन्त्रशास्त्रपरिचय। दाऊदयाल गर्ग। भाषा ६-००
११२० यन्त्रशास्त्र परिचय। (आयुर्वेदीय) आचार्य सुरेन्द्रमोहन बी० ए० १-७५
११२१ यादव स्मृति ग्रन्थ। (श्री यादवाभिनन्दन ग्रन्थ सहित) ३१-००
११२२ युवती रहस्य अंक। 'मिलिन्द' (गुजराती) ०-६५
११२३ यूनानी-चिकित्सा-विज्ञान। (पूर्वार्द्ध) दलजीत सिंह। भाषा ८-५०

११५३ रक्त विक्षेप या ब्लड प्रेशर। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा ०-७५
११५४ रतिमंजरी। हिन्दी गद्यपद्यानुवाद सहित ०-४०
११५५ रतिरत्नप्रदीपिका। मूल। श्री प्रौढदेवराज महाराज विरचित १-००
११५६ रतिरत्नप्रदीपिका। राजेश दीक्षित। हिन्दी टीका ४-००
११५७ रतिरत्नप्रदीपिका। हिन्दी टीका सहित ३-००
११५८ रतिरहस्यम्। काञ्चीनाथ कृत दीपिका संस्कृत टीका सहित ५-००
११५९ रतिरहस्य। (सचित्र) श्रीराधाकृष्ण शास्त्री कृत भाषाटीका सहित ३-००
११६० रतिरहस्य। राजेश दीक्षित कृत हिन्दी टीका ४-००
११६१ रत्नचिकित्सा। डा० विनयतोष भट्टाचार्य। भाषा ३-००
११६२ रत्नदीपिका (रत्नों, उपरत्नों, संगों, मोहरों का विवेचन)
लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी। भाषा १-२५
११६३ रत्नधातु विज्ञान। बद्रीनारायण शास्त्री। भाषा ४-००
११६४ रत्नपरीक्षा। (स्मृतिसारोद्धारान्तर्गता-ईश्वरदीक्षितीया च)
द्राविडानुवाद सहित। सुब्रह्मण्यशास्त्री संपादित। संस्कृत १-२५
११६५ रत्नपरीक्षा। संपादक-अगरचन्द नाहटा। भाषा २-००
११६६ रत्नप्रकाश। सचित्र। राजरूप टॉक जौहरी। भाषा १०-००
११६७ रत्नविज्ञान (Gemology)। डॉ० राधाकृष्ण पाराशर।
प्रत्येक रत्न-उपरत्न के असली, नकली की पहिचान और उसकी ज्योतिष शास्त्रानुसार एवं प्राच्य-पाश्चात्य चिकित्सात्मक उपयोग का विवेचन करनेवाला प्रथमोपस्थित स्वतन्त्र प्रामाणिक ग्रन्थ। यन्त्रस्थ
११६८ रत्नविज्ञान—श्रीपुरुषोत्तमदास स्वामी १५-००
११६९ रसकौमुदी। भिषग्वर ज्ञानचन्द्र शर्मा विरचित। हिन्दी टीका सहित १-५०
११७० रसचिकित्सा। कविराज प्रभाकर चट्टोपाध्याय (हिन्दी) ६-००
११७१ रसचिन्तामणिः। मुरलीधर कृत हिन्दी टीका सहित ४-००
११७२ रसजलनिधिः। संस्कृत मूल तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित।
सजिल्द १-५ भाग। भूदेव मुकर्जी ५०-००
११७३ रसतरङ्ग-विवेचन। हिन्दी टीका सहित ३-५०
११७४ रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोगसंग्रह। भाषा। प्रथमखण्ड अजिल्द १०-००
प्रथमखण्ड सजिल्द १२-०० द्वितीयखण्ड अजिल्द ६-०० सजिल्द ८-००

१२२५ रीजनल लीडर्स। डा० इ० वी० नैश। भाषा २-५०
१२२६ रीठा के गुण तथा उपयोग। सम्पादक—रामस्नेही। भाषा ०-८८
१२२७ रीठा गुण विज्ञान। गणपति सिह। भाषा ०-५०
१२२८ रूपनिघण्टुः। रूपलाल वैश्य। भाषा ३-००
१२२९ रेपर्टरी। दवा चुनने के लिए। भट्टाचार्य ,, ११-००
१२३० रोग चिकित्सा। डा० श्यामसुन्दर शर्मा ७-००
१२३१ रोगनामावली कोष (रोग निदर्शिका) तथा वैद्यकीय मान-तौल।
वैद्यराज हकीम दलजीत सिंह ३-५०
१२३२ रोगनिदान। (गुजराती) चंद्रशेखर गोपालजी ठक्कुर ६-००
१२३३ रोगनिदानचिकित्सा। डा० श्यामसुन्दर। भाषा २-००
१२३४ रोग निवारण। डा० शिवनाथ खन्ना। भाषा १५-००
१२३५ रोगपरिचय। (सचित्र) डा० शिवनाथ खन्ना। भाषा १५-००
१२३६ रोगलक्षणसंग्रह। भाषा ०-२०
१२३७ रोग विज्ञान और चिकित्सा। जगदीशचन्द्र मिश्र ५-००
१२३८ रोगिमृत्युविज्ञान। मथुराप्रसाद दीक्षित १-५०
१२३९ रोगिरोग-विमर्श। डा० रमानाथ द्विवेदी ८-००
१२४० रोगी की सेवा और पथ्य। (सचित्र) डा० सुरेशप्रसाद। भाषा ३-००
१२४१ रोगि-परीक्षा-विधि। सचित्र। आचार्य प्रियव्रत शर्मा (नवीन संस्करण) ६-००
१२४२ रोगि परीक्षा। डा० शिवनाथ खन्ना। भाषा ६-००
१२४३ रोगीमन (असामान्य मनोविज्ञान या व्यक्तित्व विकार)
सूरजनारायण मुंशी-श्रीमती सावित्री एम० निगम १०-००
१२४४ रोगी शुश्रूषा। महेन्द्रनाथ पाण्डेय। भाषा २-५०
१२४५ रोगों की अचूक चिकित्सा। जानकीशरण वर्मा। भाषा ८-००
१२४६ रोगों की सरल चिकित्सा। विठ्ठलदास मोदी। भाषा ४-००
१२४७ रोगोत्पादक मक्खी। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। भाषा ०-२५
१२४७(अ) लंकाभैषज्यमणिमाला। आर्यदासकुमार सिंह वैद्य प्रणीत।
'विद्योतिनी' हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ
१२४८ लक्ष्मीमोदतरंगिणी। गणेशदत्त १-५०
१२४९ लगाने की औषधियाँ और प्रथमोपचार। भट्टाचार्य। भाषा १-५०
१२५० लघुद्रव्यगुणादर्श। चन्द्रशेखर गोपालजी ठक्कुर। भाषा ३-५०
१२५१ लघुनिघण्टः। केशवराय व्यास विरचित। संस्कृत ८-००

१२५२ लवण गुण विधान । गणपति सिंह । भाषा ०-२५
१२५३ लवण विज्ञान । (नमक चिकित्सा) श्यामलाल सुहृद् । भाषा ०-३७
१२५४ लहसुन के उपयोग । उमेदीलाल वैश्य । भाषा ०-३०
१२५५ लहसुन के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-६२
१२५६ लहसुन प्याज । रमेश वेदी । भाषा २-५०
१२५७ लाठी एवं शस्त्र शिक्षा । (सचित्र) श्यामसुन्दर 'सुमन' । भाषा २-५०
१२५८ लीडर्स इन होमियोपैथिक थेराप्युटिक्स । ६-५०
१२५९ लोहसर्वस्वम् । सुरेश्वर विरचित । हिन्दी टीका सहित २-००
१२६० वक्षपरीक्षा । भट्टाचार्य । भाषा २-००
१२६१ वङ्गसेनः । (चिकित्सासारसंग्रहः) मूल संस्कृत समाप्त
१२६२ वटिका चिकित्सा । रामदेव त्रिपाठी । भाषा ०-७५
१२६३ वनस्पति की कहानी । जगपति चतुर्वेदी ,, २-००
१२६४ वनस्पति कोश (उपयोगी पौधों का हिन्दी-लैटिन कोश) ।
सुधांशुकुमार जैन १०-००
१२६५ वनस्पति-परिचय । (संक्षिप्त-सचित्र) छन्नुभाई वैद्य । भाषा ६-००
१२६६ वनस्पति विशेषांक । सं० ज्ञानेन्द्र पाण्डेय । १-२ भाग ३-००
१२६७ वनस्पतिशास्त्र । ए. सी. दत्त-सक्सेना । १-२ भाग । भाषा १२-००
१२६८ वनस्पति शास्त्र । डा० धर्मनारायण । भाषा ७-५०
१२६९ वनस्पति सृष्टि अर्थात् उद्भिज कोटि अने तेनो आहारिक औषधीय
अने आर्थिक परिचय । गोकुलदास । १-३ भाग (गुजराती) ५०-००
१२७० वनौषधि-चन्द्रोदय । चन्द्रराज भण्डारी । १-१० भाग । भाषा ४०-००
प्रत्येक पृथक्-पृथक् भाग का मूल्य ५-००
१२७१ वनौषधिदर्शिका । वनस्पति विशेषज्ञ प्रो० बलवन्त सिंह । भाषा ४-००
१२७२ वनौषधि-शतक । रामनाथ वैद्य २-५०
१२७३ बसवराजीयम् । बसवराजकृत । संस्कृत मूल ६-००
१२७४ बसवराजीय । (भाषा) पूर्वार्ध ४-०० उत्तरार्ध ५-००
१२७५ वाग्भट विवेचन (वाग्भट का सर्वांगीण समीक्षात्मक अध्ययन)
आचार्य प्रियव्रतशर्मा २०-००
१२७६ वात-गठिया तथा लकवा रोग चिकित्सा । हरस्वरूपप्रसाद मिश्र १-००

१२७७ वात्स्यायन के योग । केदारनाथ पाठक । भाषा ०—७५
१२७८ वादिखण्डः-ऋद्धिखण्डः । नित्यनाथ सिद्ध विरचित ३—००
१२७९ विजया कल्प । श्रीनिवास पाठक । भाषा ०—३७
१२८० विज्ञान में ब्रह्मदर्शन या आयुर्वेद में आत्मदर्शन । (पहला भाग)
कविराज कृष्णपद भट्टाचार्य । भाषा २—५०
१२८१ विटामिन और हीनता जनित रोग । डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ८—००
१२८२ विटामिन द्वारा स्वास्थ्य । डा० हीरालाल । भाषा १—००
१२८३ विटामिन्स । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा २—२५
१२८४ विद्युत चिकित्सा विज्ञान । भाषा ०—७५
१२८५ विलुप्त वनस्पति । जगपति चतुर्वेदी „ २—००
१२८६ विवाहित जीवन । भाषा २—५०
१२८७ विवाहित जीवन में यौन संप्रयोग । डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ५—५०
१२८८ विविध चिकित्सा चन्द्रोदय—हम निरोगी कैसे रहें ?
स्वामी ब्रह्मानन्द । भाषा १—२५
१२८९ विवेचनात्मक सूचीवेध पद्धति । डा० प्रभाकर मिश्र । भाषा ५—५०
१२९० विश्वविज्ञान । हरिशरणानन्द वैद्य ३—००
१२९१ विषविज्ञान और अगदतन्त्र । डा० युगलकिशोर गुप्त एवं
डा० रमानाथ द्विवेदी । भाषा २—००
१२९२ विहार की वनस्पतियाँ । ठा० बलवन्त सिंह । भाषा २—००
१२९३ वीरसिंहावलोकः (Astro-Medical Science) । मूल लेखकः—
राजा वीरसिंह तोमर । अनुवादक—डॉ० राधाकृष्ण पाराशर ।
प्रत्येक रोग का ज्योतिष, कर्मकाण्ड और आयुर्वेद के अनुसार
एवं कारण चिकित्सा विषयक अनुपम और अनूठा बेजोड़
प्रामाणिक ग्रन्थ यन्त्रस्थ
१२९४ वीरसिंहावलोकः । वीरसिंह कृत । मूल संस्कृत ४—२०
१२९५ वृक्षविज्ञान । प्रवासीलाल वर्मा । भाषा ५—००
१२९६ वृक्ष विज्ञान चिकित्सा । राधाकृष्ण पाराशर एवं कृष्णादेवी
पाराशर । भाषा २—५०
१२९७ वृन्दमाधव—सिद्धयोगः । कण्ठदत्त कृत संस्कृत टीका १०—००

१२९८ वृन्दवैद्यकः। वृन्दप्रणीत हिन्दी टीका सहित ८-४०
१२९९ वेदों में आयुर्वेद। रामगोपाल शास्त्री। भाषा १०-००
१३०० वेदों में वैद्यक ज्ञान। राधावल्लभ। भाषा ०-२५
१३०१ वैज्ञानिक पशुपालन व चिकित्सा। चन्द्रनाथ मिश्र। भाषा ३-००
१३०२ वैज्ञानिक प्राणायामरहस्य। अशोककुमार सिंह। भाषा २-२५
१३०३ वैज्ञानिक सूर्य किरण चिकित्सा। भाषा १-००
१३०४ वैदिक चिकित्सा। सातवलेकर। भाषा १-५०
१३०५ वैद्यकपरिभाषाप्रदीपः। नवीन 'प्रदीपिका' हिन्दी टीका सहित १-५०
१३०६ वैद्यकरसराजमहोदधि। भाषा। १-५ भाग ६-६०, १२-००
१३०७ वैद्य कलाधर। शिवनाथराम। भाषा १-८०
१३०८ वैद्यकल्पद्रुमः। रघुनाथप्रसाद कृत हिन्दी टीका सहित १०-२०
१३०९ वैद्यक शब्दकोष। विश्वेश्वर दयालु ०-२५
१३१० वैद्यकसार। शिवनाथ राम। भाषा ०-७५
१३११ वैद्यक सार संग्रह। गोपालप्रसाद कौशिक। भाषा १-००
१३१२ वैद्यक सारोद्धार। वैद्यनाथ शर्मा २०-००
१३१३ वैद्यकीयसुभाषितसाहित्यम् अथवा साहित्यिक सुभाषितवैद्यकम्। संकलनकर्त्ता और व्याख्याकार डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर। हिन्दी टीका सहित २५-००
१३१४ वैद्यकीय सुभाषितावली। अंग्रेजी अनुवाद सहित। डा० मेहता २-००
१३१५ वैद्यकौस्तुभः। श्रीमेवारामभिश्र कृत। संस्कृत २-००
१३१६ वैद्य-चन्द्रोदयः। त्रिमल्लभट्ट कृत। हिन्दीटीका सहित १-५०
१३१७ वैद्यजीवनम्। लोलिंबराजकृत। अभिनव 'सुधा' हिन्दीटीका टिप्पणी सहित १-२५
१३१८ वैद्य-दर्पण। प्राणनाथ दलपति। हिन्दी टीका सहित २-५०
१३१९ वैद्य बाबा का बस्ता। (७६५ सिद्धयोगों का संग्रह) भाषा १-२५
१३२० वैद्यमनोत्सव। नैनसुख कृत। भाषा ०-४८
१३२१ वैद्यमनोरमा-धाराकल्पः। कालिदास कृत। हिन्दीटीका सहित २-१०
१३२२ वैद्यरत्न। शिवनाथ राम। भाषा ०-६५
१३२३ वैद्यरहस्यम्। विद्यापति प्रणीत। दत्तराम कृत हिन्दीटीका सहित ६-००
१३२४ वैद्यवल्लभ। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल। भाषा ०-५०

१३२५ वैद्यवल्लभ । हस्तिरुचि विरचित । हिन्दी टीका सहित ०-५०, १-२०
१३२६ वैद्यविनोदसंहिता । शंकरभट्ट कृत मूल सटिप्पण ३-६०
१३२७ वैद्य विशारद गाइड । ज्ञानेन्द्र पाण्डेय वैद्य । भाषा
प्रथम खण्ड ६-०० द्वितीय खण्ड ८-००
१३२८ वैद्य विशारद गाइड (प्रश्नोत्तर सं० २०१६-२०१७) प्रथम खण्ड ४-००
१३२९ वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड) शिवकुमार व्यास ।
प्रथम खण्ड ६-०० द्वितीय खण्ड ८-००
१३३० वैद्यविशारदप्रश्नोत्तरी । हिन्दी साहित्य सम्मेलन । योगेशचन्द्र शुक्ल ४-००
१३३१ वैद्यसहचर । आचार्य विश्वनाथ द्विवेदी । भाषा ३-००
१३३२ वैद्यसार । हिन्दी टीका सहित २-२५
१३३३ वैद्य हकीम डायरेक्टरी । प्रथम भाग । भाषा २-५०
१३३४ वैद्यावतंसः (लघुनिघण्टुः) लोलिम्बराज प्रणीत ।
हिन्दी टीका सहित १-५०
१३३५ वैद्योद्बोधन । गिरजादत्तपाठक वैद्य । भाषा ०-७५
१३३६ व्यञ्जन प्रकाश । भाषा ०-३५
१३३७ व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतन्त्र । डा० कविराज युगल
किशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी । भाषा ५-००
१३३८ व्याधिनिग्रहः प्रशस्तौषधसंग्रहः । मूल संस्कृत १-२५
१३३९ व्याधिमूलविज्ञान । स्वा० हरिशरणानन्द । पूर्वार्द्ध । भाषा १२-००
१३४० व्याधिविज्ञान । आशानन्द । १-२ भाग २०-००
१३४१ व्यायाम और शारीरिक विकास । श्री अशोककुमार । भाषा २-५०
१३४२ व्यायाम करो-स्वस्थ रहो । राधाकृष्ण नेवटिया । भाषा १-५०
१३४३ व्यायाम वा कल्प (कायाकल्प) । युगलकिशोर चौधरी । भाषा २-००
१३४४ व्यायाम शिक्षा । (सचित्र) स्वामी शंकरानन्द सरस्वती । भाषा २-५०
१३४५ व्यायाम सन्देश । आचार्य भगवान देव । भाषा १-००
१३४६ व्रणबन्धन । डा० भवानी प्रसाद । भाषा ४-२५
१३४७ व्रणशोथविमर्श । डा० अवधविहारी अग्निहोत्री ३-००
१३४८ व्रणोपचार पद्धति । महावीर प्रसाद मालवीय । भाषा ०-५०
१३४९ शरभेन्द्र वैद्य रत्नावली (मराठी) १०-००

१३५० शरीर और स्वास्थ्य। डा० गिरीशनाथ दीक्षित। भाषा २-००
१३५१ शरीर और स्वास्थ्य संदेश। हरसहाय महता। प्रथम भाग १-५०
१३५२ शरीरक्रियाविज्ञान। (सचित्र) वैद्य प्रियव्रतशर्मा। भाषा १०-००
१३५३ शरीरपुष्टिविधान। भाषा ०-७२
१३५४ शरीर प्रदीपिका। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। भाषा ५-५०
१३५५ शरीर-रचना (शरीर विज्ञान)। डा० टण्डन। भाषा २-७५
१३५६ शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान। डा० एस० आर० वर्मा। भाषा ४-००
१३५७ शरीर रचना-क्रिया और स्वास्थ्य विज्ञान। डॉ० एल० पी० माथुर २-७५
१३५८ शरीर विकास एवं स्वास्थ्य सिद्धान्त। हीरालाल ओझा १-००
१३५९ शरीर विज्ञान। डा० वि० ना० भावे। भाषा ३-२५
१३६० शरीर-विज्ञान। श्रीमती कुसुमकुमारी साहा। भाषा ३-००
१३६१ शरीर विज्ञानऔर तात्कालिक चिकित्सा। केदारनाथ गुप्त। भाषा १-२५
१३६२ शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य। श्रीमती रानी टण्डन। भाषा २-५०
१३६३ शरीर विज्ञान और स्वास्थ्यकला। आर. एम. मेहरोत्रा। भाषा ०-७५
१३६४ शरीर विद्या। (बंगला) रुद्रेन्द्रकुमार पाल १२-००
१३६५ शरीर शिक्षक। श्री जगन्नाथ वापट ४-५०
१३६६ शरीर स्वास्थ्य विज्ञान। डा० नागेन्द्रपति त्रिपाठी। भाषा २-००
१३६७ शर्वतविज्ञान अथवा शर्वतों का व्यापार। हुकुमचन्द गुप्ता। भाषा २-५०
१३६८ शल्यतन्त्र परिचय। जगदीशचन्द्र मिश्र 'पथिक' २-५०
१३६९ शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा। डा. पी. जे. देशपाण्डे B. H. U. ७-००
१३७० शल्यतन्त्रसमुच्चयः। वामदेवमिश्र कृत। मूल संस्कृत ३-००
१३७१ शल्य-प्रदीपिका। (A Text Book of Surgery) २९२ चित्रों सहित। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। भाषा १५-००
१३७२ शल्य विज्ञान की कहानी। जगपति चतुर्वेदी। भाषा २-००
१३७३ शल्य-समन्वयः। व्रणवर्णन विमर्शः। डा० अनन्तराम शर्मा। (उत्तर तथा मध्यप्रदेश सरकारद्वय पुरस्कृत) १-२ भाग २२-००
१३७४ शवच्छेदविज्ञान। प्र० भाग। डा० विद्यासागर पाण्डेय ३-००
१३७५ शहतूत। (उपयोग करने के विस्तृत तरीके) रमेश वेदी। भाषा ०-४०

१३७६ शहतूत के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-५०
१३७७ शहद । रमेश वेदी । भाषा ३-००
१३७८ शहद के गुण और उपयोग । महेन्द्रनाथ । भाषा ०-७५
१३७९ शाक भाजी की खेती । भाषा ३-५०
१३८० शारीरं तत्त्वदर्शनम् । हिर्लेकर शर्मा । संस्कृतटीका हिन्दी अनुवाद ६-००
१३८१ शारीरिकोन्नति । वैद्य ठाकुरदत्तशर्मा । भाषा २-००
१३८२ शार्ङ्गधरसंहिता । मूल सटिप्पण २-५०
१३८३ शार्ङ्गधरसंहिता । नवीन वैज्ञानिक विमर्शोपेत 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका 'लक्ष्मी' टिप्पणी तथा पथ्यापथ्यादि विविध परिशिष्ट सहित ५-००
१३८४ शालहोत्र । बड़ा । सचित्र (भाषा) ३-००
१३८५ शालाक्यतन्त्र (निमितन्त्र) । डा० रमानाथ द्विवेदी । भाषा ८-००
१३८६ शालिग्रामौषधि-शब्दसागरः । वैद्य शालग्राम कृत ५-४०
१३८७ शालिहोत्रम् । भोजराज विरचित । ए० द० कुलकर्णी संपादित ८-००
१३८८ शालिहोत्र । नकुलकृत । छन्दोबद्ध भाषा १-५०
१३८९ शालिहोत्र संग्रह । बड़ा । छन्दोबद्ध । भाषा ६-००
१३९० शिफाउल अमराज । १-२ भाग । यूनानी । भाषा ४-००
१३९१ शिलाजीत विज्ञान । डा० जाह्नवीप्रसाद जोशी । भाषा ०-७५
१३९२ शिवनाथसागर । डा० शिवनाथ सिंह । भाषा ८-४०
१३९३ शिशु आहार व्यवस्था । सुरेन्द्रनाथ „ ३-३७
१३९४ शिशुपालन । बलवन्त सिंह । भाषा २-१०
१३९५ शिशुपालन । युद्धवीर सिंह । भाषा ३-५०
१३९६ शिशुपालन । अत्रिदेव गुप्त „ ३-७५
१३९७ शिशुपालन । व्यथित हृदय „ ०-६२
१३९८ शिशुपालन । मुरलीधर चौड़ाई „ ४-००
१३९९ शिशुपालन । दुर्गादेवी-मायादेवी । भाषा २-००
१४०० शिशुपालन । चक्र० राजगोपालाचार्य „ ०-५०
१४०१ शिशुपालन विज्ञान । गंगाप्रसाद गौड़ १-००
१४०२ शिशुरोगांक । रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी „ ७-००
१४०३ शिशुरोगाङ्क । भाषा (धन्वन्तरि) ८-५०

१४०४ शिशुरोगों की गृह चिकित्सा। कुलरंजन मुकर्जी। भाषा ३-००
१४०५ शिशु संरक्षण। मुकुन्दस्वरूप वर्मा। भाषा २-२४
१४०६ शीतला परिहार (आरोग्यामृत विन्दु)। जीयालाल कृत। भाषा ३-००
१४०७ शुद्ध आयुर्वेद चिकित्सा मार्गदर्शिका (आयुर्वेदिक गाइड)
अत्रिदेव विद्यालंकार। भाषा ५-००
१४०८ शुभसन्ततियोगप्रकाशः। रामप्रसाद कृत हिन्दीटीका सहित ३-००
१४०९ शुसलर की बारह तन्तु औषधियाँ। डॉ० विलियम बोरिक-
डा० विलिस ए० डेवी। भाषा ७-००
१४१० शेखर सम्प्रदाय (दूसरी पुस्तक)। डा० स्वामी चन्द्रशेखर चौधरी १-४१
१४११ शेखावाटी की जड़ी बूटियां। नित्यानन्द-कैलाशचन्द्र शर्मा। भाषा १-५०
१४१२ श्वासरोग अङ्क। (धन्वन्तरि)। भाषा १-५०
१४१३ श्वास रोग चिकित्सा। गोकुलप्रसाद ०-३७
१४१४ श्वास रोग पर स्नातकोत्तर निबंध। भाषा १-५०
१४१५ संकटकालीन प्राथमिक चिकित्सा। डा० प्रियकुमार चौबे ४-७५
१४१६ संक्रामक रोग। रघुवीर शरण शर्मा वैद्य। प्रथम भाग ३-५०
१४१७ संक्रामक रोग विज्ञान। कविराज बालक राम शुक्ल। भाषा १०-००
१४१८ संक्रामकरोगाङ्क। सपरिशिष्ट। मदन गोपाल। भाषा ५-००
१४१९ संक्रामक रोगों का उपचार। डा० राधाचरण भट्टाचार्य। भाषा २-००
१४२० संक्षिप्त औषध-परिचय। कालेड़ा १-२५
१४२१ संक्षिप्त चिकित्सा विज्ञान। प्रथमखंड। वैद्य रामशिरोमणि द्विवेदी ५-००
१४२२ संक्षिप्त दोषधातु मलविज्ञान। डा० ह० म० पटवर्धन। भाषा ३-५०
१४२३ संक्षिप्त निदानात्मक प्रयोग विधियां तथा विवेचन।
एस. वी. व्यास। भाषा ५-५०
१४२४ संक्षिप्त शल्य विज्ञान। डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा। भाषा १२-००
१४२५ संक्षिप्त होमियो पारिवारिक चिकित्सा।
डा० श्यामसुन्दर शर्मा। भाषा ६-००
१४२६ संगतरा-गुणविधान। डा० गणपति। भाषा ०-३७
१४२७ संज्ञापञ्चकविमर्शः। गणनाथसेन। संस्कृत ३-००
१४२८ संजीवनी विद्या। रामचन्द्रवर्मा। भाषा ०-६५

१४२९ संतरे के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-५०
१४३० संतानमंजरी । हिन्दी टीका सहित ०-३५
१४३१ संन्यासियों की गुप्त बूटियां अर्थात् भारतीय देहाती जड़ी बूटियां । १-२ भाग । भाषा ७-००
१४३२ संन्यासी चिकित्सा शास्त्र अथवा साधु की चुटकी । सम्पादक—अमोलचन्द्र शुक्ल । भाषा ५-००
१४३३ संस्कारविधि विमर्श । अत्रिदेव गुप्त । भाषा ३-००
१४३४ संस्कृत साहित्य मां वनस्पति । संस्कृत श्लोक । गुजराती विवरण ८-००
१४३५ संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद । अत्रिदेव गुप्त । भाषा ३-००
१४३६ सचित्र आयुर्वेद-राजयक्ष्मा अङ्क । भाषा २-००
१४३७ सचित्र आयुर्वेद-स्वास्थ्य अङ्क । भाषा ३-००
१४३८ सचित्र क्लिनिकल पैथौलोजी । (वृहत् मल-मूत्र-कफ-रक्तादि परीक्षा) डा० शिवनाथ खन्ना । भाषा १२-००
१४३९ सचित्र-इन्जेक्शन । डा० शिवनाथ खन्ना ११-००
१४४० सचित्र गर्भरक्षा तथा शिशुपरिपालन । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा ४-५०
१४४१ सचित्र योगासन । शेरसिंह शास्त्री । भाषा ०-५०
१४४२ सचित्र योगासन । सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री । भाषा १-००
१४४३ सचित्र योगासन और अक्षय युवावस्था । स्वा० शिवानन्द । भाषा २-५०
१४४४ सचित्र लघुद्रव्यगुणादर्श । कविराज महेन्द्रकुमार शास्त्री । भाषा ३-५०
१४४५ सत्यनारायण शास्त्री जी का अभिनन्दन ग्रन्थ । सचित्र १५-००
१४४६ सदा जवान रहो । काशीराम चावला । भाषा १२-००
१४४७ सद्वृत्तम्-स्वस्थवृत्तम् । हिन्दी टीका सहित ०-७५
१४४८ सन्ततिनिग्रह । डा० शिवदयाल । भाषा १-२५
१४४९ सन्तति नियमन । डा० मेरी स्टोप्स । भाषा. २-००
१४५० सन्तति-निरोध कब, क्यों और कैसे । डा० सुरेन्द्रनाथ । भाषा ४-००
१४५१ सन्तति निरोध तथा गर्भविज्ञान । हरीश २-५०
१४५२ सन्ताननिग्रह क्यों और कैसे । ज्योतिर्मयी ठाकुर । भाषा ३-००
१४५३ सन्निपातज्वर चिकित्सा । वैद्य चक्रपाणि शर्मा । भाषा ६-००
१४५४ सप्तधातुनिरूपणम् (रुद्रयामलतन्त्रान्तर्गत) भैरवानन्दकृत । संस्कृत ३-००

१४८३ सर्पविषविज्ञान । दलजीत सिंह । भाषा १-२५

१४८४ सर्वरोगहर पूर्ण चन्द्रोदय (कूपीपक्व रसायन)। कन्हैयालाल गौरीशंकर । गुजराती ०-५०

१४८५ सल्फोनामाइड और एन्टीवायोटिक्स । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा २-५०

१४८६ सव्यवहारायुर्वेदापमृत्युविज्ञानम् । प्रथम भाग । गणेशदत्त ५-००

१४८७ सहस्रसदर्पण (अर्थात् रसहजारा)। संकलन कर्ता- पं० गोपाल प्रसाद । भाषा २-५०

१४८८ सांख्यतत्त्वचिन्ता [विवरणात्मक गुजराती भाषा में वर्णन] ०-५०

१४८९ सांपों की दुनिया । रमेश वेदी । भाषा ४-००

१४९० साधारण रसायन । फूलदेव सहाय वर्मा । १-२ भाग । भाषा ११-००

१४९१ सामान्य रसायन शास्त्र । डा० सत्यप्रकाश । भाषा १६-००

१४९२ सामान्य रोगों की रोकथाम । डा० प्रियकुमार चौबे । भाषा ३-५०

१४९३ सामान्य शल्य विज्ञान । शिव दयाल गुप्त । भाषा १२-००

१४९४ सिद्धपरीक्षापद्धति । प्रथमखण्ड । भाषा ८-००

१४९५ सिद्धभेषज मणिमाला । कृष्णराम भट्ट विरचित । हिन्दी टीका सहित १०-००

१४९६ सिद्ध भेषज संग्रह । सम्पादक-श्री गङ्गासहाय पाण्डेय (भाषा) सुलभ संस्करण ७-००, उत्तम संस्करण ८-००. राजसंस्करण ९-००

१४९७ सिद्धमृत्युञ्जय योग । भाषा १-००

१४९८ सिद्धयोग संग्रह । यादवजी । भाषा २-७५

१४९९ सिद्ध रसायन । द्वितीय भाग मात्र । रसायन फार्मेसी । भाषा १०-००

१५०० सिद्धान्तनिदानम् । गणनाथसेनकृत । १-२ भाग । संस्कृत १४-००
प्रथम भाग ७-०० द्वितीय भाग ७-००

१५०१ सिद्धि अनुपानदर्शन । भाषा १-२५

१५०२ सिद्धि विश्वकल्याण । ले० राजवैद्य सिद्धिसागर । भाषा ८-२५

१५०३ सिद्धि वैज्ञानिक चिकित्सा । भाषा १-५०

१५०४ सिद्धौषधिप्रकाश । बालमुकुन्द वैद्य शास्त्री ,, २-००

१५०५ सिन्हा संक्षिप्त अमेरिकन होमियो पारिवारिक चिकित्सा । २-५०

१५३४ सुश्रुतसंहिता। सूत्रस्थान। भानुमती संस्कृत व्याख्या समेत ४-००
१५३५ सुश्रुतसंहिता। डल्हण कृत संस्कृत टीका सहित। १-२ भाग ३०-००
१५३६ सुश्रुतसंहिता। सुदामा मिश्र शास्त्री कृत सुधा संस्कृत टीका सहित यन्त्रस्थ
१५३७ सुश्रुतसंहिता। डा० कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री कृत 'आयुर्वेद-तत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित। १-२ भाग। सजिल्द संपूर्ण २४-००
१५३८ सुश्रुतसंहिता-सूत्र-निदानस्थान। डा० कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री कृत 'आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्शयुत। डाक्टर प्राणजीवन मेहता कृत विस्तृत प्रस्तावना सहित ७-००
१५३९ सुश्रुतसंहिता-शारीरस्थानम्। नवीन वैज्ञानिक 'प्रभा'-'दर्पण' विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित। चतुर्थ संस्करण ४-००
१५४० सुश्रुतसंहिता-चिकित्सा-कल्पस्थान। डा० प्रियव्रत सिंह तथा डा० अवधविहारी अग्निहोत्री कृत 'आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित ६-००
१५४१ सुश्रुतसंहिता-कल्पस्थान। 'आयुर्वेद तत्व संदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित ४-००
१५४२ सुश्रुतसंहिता-उत्तरतन्त्र। डाक्टर कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री कृत 'आयुर्वेदतत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित १५-००
१५४३ सूखारोगाङ्क। भापा १-००
१५४४ सूचीवेध चिकित्सा। रवीन्द्रचन्द्र। भापा ३-००
१५४५ सूचीवेध-विज्ञान। डा० राजकुमार द्विवेदी। भापा। तृतीय संस्करण २-५०
१५४६ सूचीवेधविज्ञान। रमेशचन्द्र वर्मा। भापा ७-५०
१५४७ सूजाक चिकित्सासंग्रह। गणेशदत्त। भापा ०-५०
१५४८ सूनबाईचा बटवा अर्थात् कुटुंब चिकित्सा कौमुदी। डॉ० र० कृ० गर्दे। मराठी २-५०
१५४९ सूर्यकिरण चिकित्सक। रामनारायण दूबे ३-५०
१५५० सूर्यकिरण चिकित्सा। गोविन्द वापुजी टोंगु। भापा ६-००
१५५१ सूर्यनमस्कार। २-००
१५५२ सूर्यरश्मिचिकित्सा। भापा १-००

१५५३ सूर्यरायान्ध्रनिघण्टुः । तेलुगु, संस्कृत, पदरूपिट १-७ भाग ७५-००
१५५४ सूर्योपासना आणि प्राणायाम । डॉ० र० कृ० गर्दे । मराठी २-००
१५५५ सेक्स का स्वभाव । मन्मथनाथ गुप्त । भाषा ३-००
१५५६ सेव के गुण तथा उपयोग । रामस्नेही दीक्षित । भाषा ०-५०
१५५७ सोंठ । रमेशवेदी । भाषा १-७५
१५५८ सोंठ । भाषा ०-७५
१५५९ सोने की कला । भाषा ०-७५
१५६० सौंफ के उपयोग । उमेदीलाल वैश्य । भाषा ०-३०
१५६१ सौंफ के गुण तथा उपयोग । सम्पादक—रामस्नेही । भाषा १-२५
१५६२ सौंफचिकित्सा । मथुराप्रसाद गुप्त । भाषा ०-५०
१५६३ सौत्तिकम् । प्रभुभाई मदनभक्त कृत । गुजराती भाषा ६-००
१५६४ सौन्दर्य और स्वास्थ्य साधन । श्री सूरजमुखी अग्रवाल । भाषा १-५०
१५६५ सौन्दर्य साधना । मिलिन्द (गुजराती) ०-६०
१५६६ सौ रोगों का सरल इलाज । चन्द्रशेखर शास्त्री । भाषा २-००
१५६७ सौ वर्ष क्यों और कैसे जीयें । स्वामी शंकरानन्द सरस्वती २-५०
१५६८ सौ शिखर अथवा हंड्रेड पोलिक्रेस्टस् । डा० डी० पी० मैत्र
(होमियोपैथी) ०-७५
१५६९ सौश्रुती । डा. रमानाथ द्विवेदी । भाषा । तृतीय संस्करण १०-००
१५७० स्टेथिस्कोप तथा नाड़ीपरीक्षा । (सचित्र)
डा० जाह्नवीप्रसाद जोशी । भाषा ०-७५
१५७१ स्त्रियों के रोग और चिकित्सा । युद्धवीर सिंह । भाषा ३-७५
१५७२ स्त्री और पुरुष । टालस्टाय । अनुवादक ज्ञानचंद जैन । भाषा १-२५
१५७३ स्त्री चिकित्सा । हिन्दी टीका सहित ०-६२
१५७४ स्त्री चिकित्सा । डा० युगलकिशोर । भाषा ०-७५
१५७५ स्त्री धर्मशिक्षा । राजदेव दीक्षित [जियोग्रफोनी सर्वश्रेष्ठ] भाषा ४-००
१५७६ स्त्री रोग चिकित्सा । (होमियोपैथी) डा० सुरेश । ,, ४-५०
१५७७ स्त्री रोग चिकित्सा । (,,) भट्टाचार्य । ,, ४-००
१५७८ स्त्री रोग चिकित्सा । ऋषिकुमार शर्मा । भाषा १-२५
१५७९ स्त्री रोग चिकित्सा । (होमियोपैथी) डॉ० दत्तन । भाषा ३-००

१५८० स्त्रीरोगचिकित्सा नवनीत चार्टस तथा स्त्रीरोग विश्वकोष। हरनारायण कोकचा २-५०
१५८१ स्त्री रोग विज्ञान। (सचित्र) डा० रमानाथ द्विवेदी। भाषा ३-५०
१५८२ स्त्री रोगांक। भाषा ४-००
१५८३ स्त्री रोगों की गृह चिकित्सा। कुलरंजन मुखर्जी। भाषा ३-५०
१५८४ स्त्री रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा। भाषा ०-७५
१५८५ स्त्री-विज्ञान (प्रसूतिशास्त्र)। प्रथम भाग। अन्तु भाई वैद्य। भाषा १०-००
१५८६ स्नानचिकित्सा। रवीन्द्रनाथ। भाषा ०-६२
१५८७ स्वप्नदोष और वीर्यसञ्जीवन। अमरचन्द पाण्डेय। भाषा २-००
१५८८ स्वप्नदोष और उसकी चिकित्सा। सं० श्रीकृष्णलाल। भाषा १-५०
१५८९ स्वप्नदोष की रामबाण चिकित्सा। दाऊदयाल गुप्त। भाषा १-००
१५९० स्वप्नदोषविज्ञान। गणेशदत्त 'इन्द्र'। भाषा २-००
१५९१ स्वयं चिकित्सक (डाक्टरी सार संग्रह)। राधावल्लभ पाठक। भाषा ३-००
१५९२ स्वयं चिकित्सक। वैद्य प्रभुदयाल। भाषा १-००
१५९३ स्वयं भिषक्। (गुजराती भाषा) अन्तुभाई वैद्य २-५०
१५९४ स्वयं वैद्य (औषधिरत्न संग्रह)। प्रथम भाग। नैपाली भाषा ४-५०
१५९५ स्वर्णक्षीरीगुणविधान। गणपति सिंह। भाषा ०-७५
१५९६ स्वस्थ कैसे रहें? । जे० एम० जस्सावाला ०-५०
१५९७ स्वस्थ जीवन के लिये भोजन। ज्योतिर्मयी ठाकुर। भाषा २-५०
१५९८ स्वस्थ तन-स्वस्थ मन-स्वस्थ जीवन। ३-५०
१५९९ स्वस्थवृत्तसमुच्चयः। श्री राजेश्वरदत्तशास्त्री कृत। हिन्दी टीका सहित ७-००
१६०० स्वादिष्ट अचार। श्रीमती आद्यादेवी २-५०
१६०१ स्वादिष्टचिकित्साङ्क। चन्द्रशेखर जैन शास्त्री। भाषा २-२५
१६०२ स्वादिष्ट संग्रह। परशुराम जोशी। भाषा १-००
१६०३ स्वास्थ्य-चिकित्सा, कायापुष्करशिक्षा तथा चिकित्सा-प्रवेश। डा० आर० सी० भट्टाचार्य ८-००
१६०४ स्वास्थ्य एवं खाद्य गुण संग्रह। परशुराम जोशी। भाषा १-००
१६०५ स्वास्थ्य एवं योगासन। स्वामी शंकरानन्द सरस्वती। सचित्र २-५०
१६०६ स्वास्थ्य और जलचिकित्सा। केदारनाथ। भाषा २-५०

१६०७ स्वास्थ्य और दीर्घायु । भाषा १–२५

१६०८ स्वास्थ्य और योगासन । सचित्र । स्वामी सत्यानन्द सरस्वती २–००

१६०९ स्वास्थ्य और रोग । त्रिलोकीनाथ वर्मा । सचित्र । भाषा १५–००

१६१० स्वास्थ्य और व्यायाम । केशव कुमार ठाकुर । भाषा २–५०

१६११ स्वास्थ्य के लिए शाक तरकारियां । महेन्द्रनाथ पाण्डेय । भाषा २–००

१६१२ स्वास्थ्य के शत्रु-चाय और सिगरेट । मनोहरलाल वर्मा । भाषा १–००

१६१३ स्वास्थ्य कैसे पाया । विट्ठलदास मोदी । भाषा १–५०

१६१४ स्वास्थ्य परिचय । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । भाषा २–७५

१६१५ स्वास्थ्य प्रदीपिका । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । भाषा १–६५

१६१६ स्वास्थ्य मन्दाकिनी । एम. डी. जाफर । १-४ भाग । भाषा १–७४

१६१७ स्वास्थ्य-रक्षा । बालमुकुन्द । भाषा ०–५०

१६१८ स्वास्थ्यरक्षा । चतुरसेन शास्त्री । भाषा १–००

१६१९ स्वास्थ्यरक्षा । हरिदास वैद्य „ ६–००

१६२० स्वास्थ्य विज्ञान । (सचित्र) डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर । भाषा ७–५०

१६२१ स्वास्थ्यविज्ञान । डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा । भाषा ५–००

१६२२ स्वास्थ्य विवेचन (क्षय रोग की सफल चिकित्सा)
शिवकुमार वैद्य शास्त्री ५–००

१६२३ स्वास्थ्य शिक्षा । १-२ भाग । जानकीशरण वर्मा । भाषा ०–५०

१६२४ स्वास्थ्य शिक्षा । हरनामदास । भाषा २–००

१६२५ स्वास्थ्य शिक्षा । जी० पी० शैरी । भाषा ८–००

१६२६ स्वास्थ्यशिक्षा और व्यक्तिगत व्यायाम । प्रकाशचन्द्र । भाषा ६–००

१६२७ स्वास्थ्यशिक्षा पाठावली । डा० घाणेकर ३–५०

१६२८ स्वास्थ्य संलाप । कृष्णानंद गुप्त । भाषा १–००

१६२९ स्वास्थ्यसंहिता । कविराज नानकचंद वैद्यशास्त्री कृत । हिन्दीटीकासहित २–५०

१६३० स्वास्थ्यसाधन । रामदास गौड़ । भाषा ४–००

१६३१ हजार बीमारियाँ । डा० डी० पी० मैत्र (होमियोपैथी) १–००

१६३२ हम सौ वर्ष कैसे जीवें । केदारनाथ गुप्त । भाषा २–५०

१६३३ हम स्वस्थ कैसे रहें । सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री । भाषा ६–००

१६३४ हमारा आहार । हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव एम० स्वानिनादन्-भाषा २–००

१६३५ हमारा भोजन। ओमप्रकाश त्रिखा। भाषा 0-७५
१६३६ हमारा भोजन। ज्ञानेन्द्रनाथ। भाषा १-५०
१६३७ हमारा शत्रु (तम्बाकू का नशा)। भगवान् देव ०-२०
१६३८ हमारा शरीर। आचार्य चतुरसेन शास्त्री। भाषा ०-७५
१६३९ हमारा शरीर। गंगा प्रसाद गौड़ 'नाहर'। भाषा १-००
१६४० हमारा शरीर। राममूर्ति मेहरोत्रा। भाषा २-२५
१६४१ हमारा सुख। भाषा ०-१२
१६४२ हमारा स्वर मधुर कैसे हो। भाषा ०-६२
१६४३ हमारी आँखें। एम० एस० अग्रवाल। भाषा। सजिल्द ५-००
१६४४ हमारे बच्चे। महेन्द्रनाथ पाण्डेय ३-००
१६४५ हमारे भोजन की समस्या। अत्रिदेव गुप्त। भाषा १-७५
१६४६ हमें क्या खाना चाहिये। युगल किशोर चौधरी। भाषा १-२५
१६४७ हरड़। रमेश वेदी। भाषा १-७५
१६४८ हरिधारित ग्रन्थ रत्न। हिन्दीटीका। वासुदेव ०-३७
१६४९ हरिहरसंहिता। वैद्य हरिहरनाथ कृत हिन्दीटीका सहित ८-००
१६५० हल्दी के उपयोग। उमेदीलाल वैश्य। भाषा ०-३०
१६५१ हल्दी के गुण तथा उपयोग। रामस्नेही दीक्षित। भाषा ०-८८
१६५२ हस्तायुर्वेदः। पालकाप्यमुनि कृत। मूल संस्कृत ११-००
१६५३ हारीतसंहिता। हिन्दीटीका सहित १०-२०
१६५४ हिकमतप्रकाशः। महादेवदेव कृत संस्कृत टीका सहित ३-६०
१६५५ हितोपदेशः (वैद्यक)। हिन्दीटीका सहित ३-६०
१६५६ हिन्दू रसायनशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास। प्रभाकर चट्टोपाध्याय। प्रथम भाग। बँगला ५-००
१६५७ हींग के उपयोग। उमेदीलाल वैश्य। भाषा ०-३०
१६५८ हींग के गुण तथा उपयोग। हरनारायण कोकचा। भाषा ३-००
१६५९ हृत्क्रियाव्याधिविज्ञानम्। गणेशदत्त कृत ०-७५
१६६० हृदय परीक्षा। रमेशचन्द्र वर्मा। भाषा २-००
१६६१ हृदयविज्ञानम्। गणेशदत्त कृत हिन्दीटीका सहित ०-३७
१६६२ हैजा (विसूचिका) चिकित्सा। डा० जाह्नवी प्रसाद जोषी ०-७५

१६६३ हैजा का डाक्टर। इन्द्रमोहन झा 'सचन' ०-६२
१६६४ हैजा या कालरा तथा उसके प्रतिकार और चिकित्सा।
भोलानाथ टंडन। भाषा २-००
१६६५ हैजाचिकित्सा। भट्टाचार्य। भाषा २-००
१६६६ होमियो इञ्जेक्शन चिकित्सा। डा० सुरेश। भाषा १-७५
१६६७ होमियो कम्परेटिव प्रिंस मेटेरिया मेडिका। डा० सुरेश। भाषा ६-००
१६६८ होमियो गीतावली। डा० कैलाशभूषण त्रिपाठी। भाषा २-००
१६६९ होमियो गृह चिकित्सा। डा० सुरेश। भाषा ३-००
१६७० होमियो चिकित्सा तत्त्व। श्यामसुन्दर शर्मा ७-००
१६७१ होमियो चिकित्सा विज्ञान। डा० श्यामसुन्दर। भाषा ३-५०
१६७२ होमियो टायफायड-चिकित्सा। डा० सुरेश। भाषा ०-७५
१६७३ होमियो थाईसिस चिकित्सा। डा० सुरेश ,, ०-७५
१६७४ होमियो न्यूमोनिया चिकित्सा। डा० सुरेश ,, ०-७५
१६७५ होमियो निमोनिया चिकित्सा। डा० टण्डन ,, १-००
१६७६ होमियो पशु चिकित्सा। डा० कमलाकर राय २-००
१६७७ होमियो पारिवारिक चिकित्सा। डा० सुरेश। भाषा १०-००
१६७८ होमियो पारिवारिक भेषज तत्त्व। भट्टाचार्य ,, ६-००
१६७९ होमियो पाकेट गाइड। डा० सुरेश। भाषा १-००
१६८० होमियो प्रिंस मेटेरिया मेडिका। ६-००
१६८१ होमियोपैथिक चिकित्सा (मेटेरिया मेडिका सहित)। भाषा ६-००
१६८२ होमियोपैथिक चिकित्सातत्त्व। भाषा ०-८५
१६८३ होमियोपैथिक चिकित्सा विज्ञान। डा० बालकृष्ण मिश्र। भाषा १०-००
१६८४ होमियोपैथिक चिकित्सा सिद्धान्त। डा० बालकृष्ण मिश्र। भाषा ३-५०
१६८५ होमियोपैथिक जननेन्द्रिय के रोग। भट्टाचार्य। भाषा १-५०
१६८६ होमियोपैथिक थेराप्युटिक्स (लीडर्स इन)। डा० भट्टाचार्य ६-५०
१६८७ होमियोपैथिक-नुस्खा। डा० श्यामसुन्दर। भाषा १-२५
१६८८ होमियोपैथिक पशुचिकित्सा। गंगाधर। भाषा २-२५
१६८९ होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा। १-२ भाग
(एक जिल्द में) भट्टाचार्य। भाषा १०-००

—०:०:०—

ENGLISH

[No guarantee regarding prices of books as these are fluctuated every now and then by publishers, hence the current price fixed by the publishers will be charged at the time of supply.]

1 Aids to Osteology by Nils L. Eckhoff. Rs. 5-87
2 Ailments of Infancy (Homeopath) by Vats. 3-50
3 All India Pharmaceutical Directory. Compiled by The Indian Pharmaceutical Association. Second Edition. 1960. 15-00
4 American Pocket Materia Medica by Dr. Yadubir Sinha. 2-50
5 Anti-Biotic Medicine in Ayurveda by K. Ray. 1-00
6 American Pocket Practice of Medicine with hints on Materia Medica by Dr. Yadubir Sinha. 2-50
7 American Unique Repertory with 25,000 Key notes by Dr. Yadubir Sinha. 5-00
8 Anti T. B. (Tuberculosis) and Anti H. F. (Heart-Failure) by N. V. Gunji. 3-00
9 Atharvaveda and Ayurveda by Dr. V. W. Karambelkar. 16-00
10 Ayurveda or Hindu System of Medicine by B. V. Raman. 1-00
11 Ayurveda Treatment of Kerala by N. S. Mooss. 3-00
12 Ayurvedic Concept in Gynaecology by Miss Nirmala G. Joshi. 15-00
13 Ayurvedic Flora Medica. Part I (Work on Medicinal Plants) by N. S. Mooss. 12-00
14 Ayurvedic Interpretations of Medicine by Dharmadatta. 4-50
15 Ayurvedic School of Medicine : Theory and Practice by Dr. A. Lakshmipathi. 1-00
16 Ayurvedic Treatment of Cancer by Prabhakar Chatterjee. 10-00
17 Ayurvediya Padartha Vijnana by C. G. Kashikar. With English Translation and Preface. 8-00
18 Ayurvediya Sariram with English Translation and Preface by G. V. Purohit. Part I. (Illustrated) 8-00
19 Baby Care : A Helpful Guide for Mothers on care of Infants by May E. Law. 4-50

20 Bassini's Operation Modified by V. P. Gupta. 6-25

21 Bed-Side Medicine by A. R. Majumdar. 11th Ed. 21-00

22 Behaviour Problems of Children by J. C. Marfatia. 6-25

23 Better Sight without Glasses by Dr. R. S. Agarwal. 3-50

24 Birth of a Baby by Y. N. Ajinkya. 7-00

25 Bodily Reaction and Examination of Systems of Therapeutics by K. L. Daftari. 5-50

26 Breath of Life : Correct Breathing for Better Health by Harvey Day. 13-50

27 Caraka Samhita : A Scientific Synopsis by Priyadaranjan Ray and Hirendra Nath Gupta. 15-00

28 Caraka Samhita. With English Translation and Critical Notes, based on Cakrapani's Ayurveda Dipika by Dr. Ram Karna Sharma and Dr. Bhagwan Das. In the Press

29 Central Fixation by Dr. Agarwal. 2-50

30 Children's Ailments: Cause Prevention and Cure by Harry Clements. 3-00

31 Classical Doctrine of Indian Medicine : Its Origins and its Greek Parallels. By J. Filliozat. Translated from the Original in French by Devraj Chanana. 25-00

32 Clinical Methods in Surgery (Including Differential Diagnosis) with 507 Illustrations by K. Das. 37-50

33 Coconut Palm : A Monograph by K. P. V. Menon and K. M. Pandalai. 18-00

34 Common Diseases, their Causes and Treatment by N. S. Irani. 4-50

35 Common Trees by Dr. H. Santapau. 5-25

36 Concept of Agni in Ayurveda with Special Reference to Agnibala Pariksha by Dr. Bhagavan Das Vaidya. In the Press

37 Cure of Stammering Stuttering and other Functional Speech Disorders by J. Louis Orton. 2-25

38 Diagnostic Surgery by Dr. P. C. Sanyal, Illustrated. 22-50

39 Dictionary of Anatomy by S. C. Sengupta. 8-00

40 Diseases of the Chest by Viswanathan. With 26 Plates. 50-00

41 Diseases of Women by Ten Teachers. 9th Edition. 22-50

42 Drug and Therapeutic. Encyclopaedia of India. Compiled by I. C. Khandelwal. 50-00

43 Economic Fruit Growing in India by R. A. Munshi. 3-00

44 Ectopic Pregnancy by K. M. Masani. 12-00

45 Educating the Mentally Handicapped by Jai H. Vakeel. 6-75

46 Elements of Light Therapy by Jean Saidman by P.N. Mehta. 7-50

47 Encyclopedia of Natural Health by Max Warmbrand. 37-80

48 Everybody's Guide to Ayurvedic Medicine. A Reperatory of Therapeutic Prescriptions based on the Indigenous Systems of India by J. F. Dastur. 10-00

49 Every Body's Guide to Nature Cure by H. Benjamin. 26-25

50 Experimental Physiology (For Medical Students) by D. T. Harris, H. P. Gidling and W. A. M. Smart. 20-00

51 Eye Troubles by Dr. Agarwal. 6-00

52 Family Planning-Birth Control by Dr. K. Satya Vati & Dr. T. C. Dewan. 5-00

53 Flowering Trees by M. S. Randhawa. 9-50

54 Fundamental Principles of Ayurveda by Dr. Dwarakanath. Second Part. 5-00

55 Garden Flowers by Dr. Vishnu Swarup. 6-00, 9-50

56 General Human Embryology by L. V. Guru 3-00

57 Glossary of Indian Medicinal Plants by R. N. Chopra, S. L. Nayar and I. C. Chopra. 8-00

58 Greek Medicine in Asia by S. L. Bhatia. 1-00

59 Guide on Profitable Recipes by Chouhan. 2-50

60 Guide to Nature Cure by Harry Benjamin. 12-00

61 Hand Book of Ayurvedic Materia Medica with Principles of Pharmacology and Therapeutics by H. V. Savnur. Vol. I. 8-00

62 Hand Book of Hygine and Public Health (Illustrated) For Medical and Public Health Students by Yashpal Bedi. 13-00

63 Hand book of Operative Surgery. With Chapters on Instruments, Splints and Bandaging by K. Das. With 252 Illustrations and 14 Plates. 2

64 Hand Book of Physiology by Vazifdar. 12-00

65 Handbook of Physiology. Originally 'Kirkes' and later 'Halliburton's by R. J. S. McDowall. 57-75

66 Hand Book of Physiology and Biochemistry (Originally Kirke's and Later Halliburton's) 31-50

67 Hand Book of Practical Bacteriology : A Guide to Bacteriological Laboratory Work by T. J. Mackie and J. E. Micartney. Ninth Edition. 22-50

68 Hand Book on Diabetes Mellitus and its Modern Treatments by J. B. Bose 10-50

69 Health Center Doctor in India by Harbans S. Takulia, Carl E. Taylor, S. Prakash Sangal and Joseph D. Alter. 26-25

70 Health Guide by M. K. Gandhi. Edited by Anand T. Hingorani. 4-00

71 Health in the Tropics by M. S. Irani. 4-50

72 Health Problems of Mithila by Lakshmikanta. 10-00

73 Heart: The Prevention and Cure of Cardial condition by James C. Thomson. 3-00

74 High and Low Blood Pressure by James C. Thomson. 3-75

75 Himavat Diary Leaves by Nicholas Roerich. 4-50

76 Hindu Medicine by Gannath Sen. 1-25

77 Hindu Medicine by Henry R. Zimmer. 37-50

78 History of Ayurveda: Presidential Address, 31st All India A. Congress. 1-00

79 History of Medicine by H. E. Sigerist. Vol. I. 62-50

80 Home Doctor for India by M. A. Kamath 7-50

81 Homeopathic Family Guide. 1-00

82 Hopes of Cure for the Diabeties by Dr. G. N. Gokhale. 2-00

83 How to Examine A Patient by De. Sousa. 10-00

84 Human Embryology for Medical Students by Dr. S. R. Nair. 2nd Ed. 15-00

85 Hygiene and Public Health by Khote. 8-00

86 Illustrations Regional Anatomy by E. B. Jamieson. in 7 Section. 68-50

87 Indian Medicine by Dr. J. Jolly. Translated with Notes by C. G. Kashikar. 20-00

88 Indian Pharmaceutical Codex Vol. I, Indigenous Drugs by B. Mukerji. 12-00

89 Indian Science of Pulse by Prabhakar Chatterjee. Vols. I-II. 20-00

90 Introduction to Ayurveda (Basic Indian Medicine) by Chandra Shekhar G. Thakkur. Foreword by Pandit Shiv Sharma. 8-00, 10-00

91 Introduction to Kaya Chikitsa by C. Dwarkanath. 20-00

92 Introduction to Plant Geography and Some Related Sciences by Nicholas Polunin. 48-60

93 Introduction to Plant Physiology by W. O. James. 14-00

94 Kama Kalpa or The Hindu Ritual Love. Based on Ancient Sanskrit Classics, Kamasutra, Anangaranga, Ratirahasya and Modern works by P. Thomas. 34-00

95 Kama Sutra of Maharshi Vatsyayana. (A famous ancient Indian classic). Translation from Sanskrit Text by Acharya Vipin Shastri. 5-00

96 Kamasutra of Vatsyayana. Classic Hindu Treatise on Love and Social Conduct. Translated by Sir Richard F. Burton and F. F. Arbuthnot. Introduction by G. D. Khosla. 3-00

97 Kama Sutra of Vatsyayana. Complete Translation from the original Sanskrit by S. C. Upadhyaya. Foreword by Motichandra. With 16 Line Drawings and 96 Halftone Illustrations. 40-00

98 Kama Sutra of Vatsyayana. The Best and Brightest Rendering of the Classic Hindu Treatise on Love and Sex based on the Versions of Sanskrit Scholars, English Translators, American Sanskritists and German Indologists by Dr. J. L. Parnoo. 5-00

99 Kama-Sutra of Vatsayana : The Hindu Art of Love. Translated and edited by Dr. B. N. Basu. Revised by S. L. Ghosh. With a Foreword by Dr. P. C. Bagchi. 4-50

100 Kamasutra of Vatsyayana. Translated by Sir Richard Burton and F. F. Arbuthnot. Edited with a Preface by W. G. Archer. Introduction by K. M. Panikkar. 44-10

101 Kaya-Kalpa (Science of Regiwenation) by S. Yogi. 5-00

102 Kayakalpa Text in Sanskrit & Eng. Translation. 0-50

103 Koka Shastra. Being the Rati Rahasya of Kokkoka and other Medieval Indian Writings of Love. Translated and with an Introduction by Alex Comfort. Preface by W. G. Archer. 31-50

104 Lecture on Jurisprudence by K. R. R. Sastry. 6-00

105 Manual of Anatomy by S. N. Sahana. 45-00

106 Mastering Your Nerves by A. T. W. Simcons. 4-00

107 Medical Anthology. Ed. by Dr. Pranjivan M. Mehta. 2-00

108 Medical Dictionary. (Anglo-Hindi, Chowkhamba Edition.) 20-00

109 Medical Jurisprudence and Toxicology by M. A. Kamath. 15-00

110 Medical Jurisprudence and Toxicology by J. Modi. 26-50

111 Medical Jurisprudence and Toxicology by John Glaister, with 234 illustrations 88 in full colour. Ninth Edition. 32-00

112 Medical Treatment with recent Advances by D. R. Dhar. 25-00

113 Medicinal Plants of India and Pakistan by J. F. Dastur. 5-95

114 Medicine : Essentials for Practitioners and Students by G. E. Beaumont. With 70 Illustrations. 38-40

115 Medicine for Students by A. F. Golwalla. 24-00

116 Medicine Surgery of Pathology by B. L. Raina. 40-00

117 Medicine. Edited by Garland and Phillips. Vols. I-II. 100-80

118 Mental Health and Hindu Psychology by Swami Akhilananda. 16-80

119 Methods of Family Planning by Satyavati. 5-00

120 Micoo Elements Nutrition of Plants by Dr. Lal & Rao. 20-00

121 Mind and Vision by Dr. Agarwal. 5-00

122 Miracles of Food Medicines (Protective Foods) by Kula Ranjan Mukherjee. 5-00

123 Miracles of Fruits by Kj. Dr. Ganpati Singh Varma. 5-00

124 Miracles of Indian Herbs by Kj. Dr. Ganpati Singh Varma. 5-00

125 Modern Operative Surgery. Edited by G. Grey Turner and Lambert Charles Rogers. 2 Vols. Fourth Edition. 60-00

126 Mother and Child Welfare (Based on Original Sanskrit Texts) Edited by Dr. A. Lakshmipathi & Dr. V. Subba Rao. 10-00

127 Nursing and Management of Skin Diseases by D. S Wilkinson. 34-13

128 Operative Surgery by Various Authors. Edited by Alexander Miles and Sir James Learmonth, with illustrations. 25-00

29 Our Food by M. Swaminathan and R. K. Bhagavan. With a Foreword by Dr. V. Subrahmanyan. 6-00

30 Parasitology by K. D. Chatterjee. 20-00

31 Pathological Histology by Robertson F. Ogilvie, Foreword by A. Murray Drennan with 334 Photomicrographs in Colour. Fifth Edition. 39-37

132 Pathology For the Surgeon by William Boyd with illustrations. Seventh Edition. 62-50

133 Pharmaceutical Directory of India 1959. Compiled and produced by S. A. Sarkar. 15-00

134 Pharmacognosy of Ayurvedic Drugs. Illustrated. Series No. : 2-9 105-00

135 Pharmacology Materia Medica and Therapeutics by R. Ghosh. Edited by S. K. Biswas. 26-00

136 Pharmacology (for Medical Students in Tropical Areas) by Roger A. Lewis. 15-00

137 Pharmacopoeia of India. 21-50

138 Philosophy of Ayurveda by Dr. K. Ray. 2-50

139 Plant Diseases : Their Causes and Control by Sudhir Chowdhury. 3-50

140 Pocket Companion by B N. Ghosh. 5-50

141 Polio Mylitis & Ayurveda by Kj. Om Prakash. 8-50

142 Popular Guide to Nature Cure by V. Stanley Davidson. 2-50

143 Practical Bactoriology by Mackie etc. 20-63

144 Practical Handbook of Midwifery and Gynaecology (For Students and Practitioners) by W. F. T. Haultain & Clifford Kennedy. Fifth edition. 24-00

145 Practice of Nature Cure by Henry Lindlahr. 10-00

146 Preservation of Fruits and Vegetables by Girdhari Lal, G. S. Siddappa and G. L. Tandan. 11-50

147 Prevention & Cure of Myopia by Dr. Agarwal. 5-00

148 Principles of General Surgery by K. N. Udupa. 20-00

149 Principles of Internal Medicine. Edited by T. R. Harrison etc. etc. Fifth International Student Edition. 90-75

150 Protective Foods in Health & Disease by K. Mukherji. 8-00

151 Psycho-Solar Treatment for the Eye by Dr. R. S. Agrawal. 0-50

152 Rasa-Jala-Nidhi by B. Mukerjee. 5 Vols. 50-00

153 Rati Rahasya (The Hindu Secrets of Love) of Pandit Kokkoka. Translated from the Original Sanskrit by S. C. Upadhyaya. Foreword by V. Raghavan. With 4 Plates in Colour, 75 Half-tone Illustrations and 10 Line Drawings. 40-00

154 Recent Developments in Maternity and Child Welfare Services in India by Dr. Surya Bhatia. 1-00

155 Renew Your Life Through Yoga by Indra Devi. (The Indra Devi Method for Relaxation through Rhythmic Breathing) With Plates. 29-40

156 Report of the Committee on Indigenous Systems of Medicine. Vol- I.—Report and Recommendations and Vol. II.-Appendices. 8-00

157 Science and the Art of Indian Medicine by G. Srinivasa Murty. 3-00

158 Secrets of Indian Medicine by Dr. Agarwal. 4-00

159 Septenate Mixtures in Homoeopathy by Benoytosh Bhattacharyya. 5-00

160 Shaw's Text Book of Gynaecology. Revised by John Howkins, with 4 coloured plates and 352 Text-Figures. 26-50

161 Short History of Medicine by C. Singer. 30-40

162 Short Practice of Surgery by Hamilton Bailey and Mcneill Love. Eleventh Edition. 67-20

163 Sinha One Thousand Red Lines Symptoms. 2-50

164 Snakes of India by P. J. Deoras. 6-50, 9-50

165 Some Philosophical Concepts of Early Chinese Medicine by Dr. Ilza Beth. 1-00

166 Story of Medicine and Pharmacy in India : Pharmacy 2000 Years Ago and After by Dr. P. K. Sanyal. 25-00

167 Students Pharmacology and Materia Medica by Dr. V G Rele. 9-50

168 Studies in Arabic and Persian Medical Literature by Dr. Muhammad Zubayr Siddiqi. With a Foreword by Dr. Bidhan Chandra Roy. 12-00

169 Study of Plants by T W. Woodhead. 12-50

170 Sudhakar Pharmacopoea. Compiled by Dr S P. Gupta. 3-00

171 Surgical Epitome by Nadkarni. 2 Vols 24-00

172 Surgical Ethics in Ayurveda by Dr. G. D. Singhal M. S, F. R. C. S. (Ed.) & Pt. Damodar Sharma Gaur. A. M. S. (Chow. Sans. Studies Vol. XL.) 5-00

173 Susruta Samhita : The Hindu System of Medicine according to Susruta. Translated from the original Sanskrit by Udoy Chand Dutt. 3 Fas. 3-00

174 Susruta-Samhita or the Hindu System of Medicine according to Susruta. Translated from the original Sanskrit by Dr. A. F. R. Hoernle. Fas. I. 1-50

175 Sushruta Samhita : With a full and Comprehensive Introduction, English translation, Notes and different Readings etc., with Plates by Kaviraja Kunjalal Bhishagratna, M. R. A. S. 3 Vols. Complete. (Chow. Sans. Studies Vol. XXX) 60-00

176 S'yanik Sastra. Text & Eng. Tr. by Raja Rudra Deva. 1-00
177 System of Ayurveda by Shiva Sharma. 16-80
178 Taber's Cyclopedic Medical Dictionary by Clarence Wilbur Taber, Ninth edition. Illustrated. 33-75
179 Text Book of Bacteriology by N. G. Pandalai. 18-00
180 Text Book of Elementary Physiology by Dr. V. N. Bhave. Sixth Ed. 3-20
181 Text Book of Gynaecoology by K. M. Masani. 28-00
182 Text Book of Medical Jurisprudence and Toxicology. Edited by N. J. Modi. Revised Edition. 26-50
183 Text Book of Pathology. Structure and Function in Diseases by William Boyd. Seventh Edition, Thoroughly Revised with 792 illustrations and 20 coloured plates. 75-00
184 Text Book of Pathology (Bacteriology, Human Parasitology, Halmatology and Clinical Pathology) by D. N. Banerjee. Edited by Dr. D. N. Sen Gupta and Dr. S. K. Biswas. 25-00
185 Text Book of Principles and Practice of Medicine by Dhar. 22-00
186 To Lhasa and Beyond : Diary of the Expedition to Tibet in year 1948 by G. Tucci, with an appendix on Tibetan Medicine and Hygiene by R. Maise. 25-00
187 Towards A Happier Life (Home Doctor for India) by M. A. Kamath. 7-50
188 Treatise on Ayurvedic First Aid by Prabhakar Chatterjee. 20-00
189 Treatise on Dispensing, Nursing and Hospital Emergencies by K S. Dr Mohd. Rahmat Elahi Siddiqui. With Seventy-nine illustrations. 10-00
190 Treatise on Hygiene and Public Health by Ghosh. 22-50
191 Tropical Therapeutics by R. N. Chopra. 50-60
192 Under Graduate Medical Education Lectures by Col. Amir Chand. 2-50
193 Useful Plants of India and Pakistan by J. Dastur. 5-95
194 Vanaspati Industry by Gopal S. Hattiangdi. 8-00

195 Welfare of the Child in the Home by Lalita Subbaratnam. 0-75
196 Yoga and Health by Yesudian & Maich. 11-25, 29-40
197 Yoga for Perfect Health by Alain. 13-50
198 Yoga of Health, Youth and Joy (The) A Treatise on Hatha Yoga adapted to the West by Sir Paul Dukes. With photographic illustrations by the Author and Diana Fitz Gerald. 26-25
199 Yogasystem of Health by Yogi Vithal Das. 18-00
200 Yoga-Technique of Health and Happiness by Indra Devi 3-75
201 Yogic Asans for Health and Vigour by V. G. Rele. 3-75
202 Your Diet for Longer Life by James Tobey. 4-75
203 Your Diet in Health and Disease by Harry Benjamin. 3-00
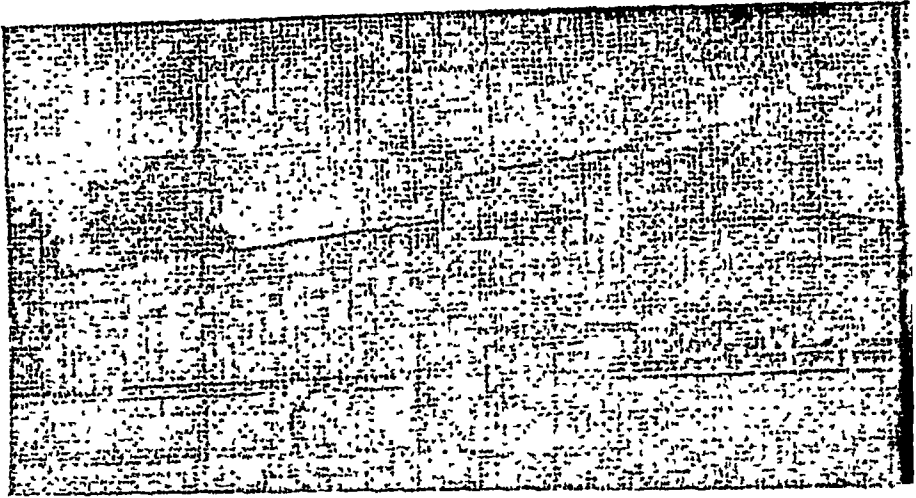
पुस्तकें मंगवाने के नियम—

१ डाकखाने से वी० पी० नियमानुसार ७ दिन के अन्दर छुड़ा लेनी चाहिये अन्यथा वापस हो जायगी। वी० पी० वापस आने से उसकी सारी हानि तथा खर्च ग्राहकों को देना होगा।

२ जो ग्राहक पुस्तकें अधिक वजन की होने से रेलवे पार्सल से मँगवाना चाहें उनको अपने समीप के रेलवे स्टेशन तथा रेलवे लाइन का नाम भी अवश्य लिखना चाहिये और कम से कम चौथाई मूल्य आर्डर के साथ पेशगी अवश्य भेजना चाहिये जो वी० पी० के मूल्य में कम कर दिया जाता है।

३ सब पुस्तकें ग्राहकों की जिम्मेदारी पर भेजी जाती हैं। हमारे यहाँ से पुस्तकें भेजने के बाद रास्ते की जोखिम का जिम्मेदार कार्यालय नहीं है।

४ चिट्ठी पर लिखा पार्सल का वजन और पार्सल की सिलाई पर लगे रंग को जाँच-परख कर ही पार्सल छुड़ावें अन्यथा पार्सल में किसी प्रकार की भी गड़बड़ी के लिए हमारा कोई उत्तरदायित्व न होगा।

५ प्रकाशकों के मूल्य-परिवर्तन के अनुसार पुस्तकों के मूल्य जो घटे-बढ़े होते हैं वे ग्राहकों को बिना सूचना दिये ही माल भेजते समय चार्ज किये जाते हैं। पुस्तकें भेजने का कुल खर्च-पैकिङ्ग, डाकखर्च, रेलभाड़ा आदि ग्राहकों के जिम्मे होगा।

६ पाँच रु० से अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने वाले ग्राहकों से चतुर्थांश मूल्य पेशगी मिलने पर ही पुस्तकें भेजी जायँगी।

७ नोट, टिकट, चेक, पोस्टल आर्डर आदि सब रजिस्ट्री से भेजना चाहिये।

८ वी० पी० भेजने में यदि किसी पुस्तक के भाव इत्यादि में अथवा और किसी प्रकार की भूल हुई हो तो भी कृपया वी० पी० छुड़ा लेवें और बीजक नम्बर तथा दिनांक लिख कर भेजने की कृपा करें। भूल-सुधार कर दी जायगी। वी० पी० वापस न करें अन्यथा हानि होगी।

९ वैधानिक कार्यों के लिए वाराणसी का कोर्ट मान्य होगा।

त्रिदोष-संग्रहः

(A Compiled Treatise on the Three Basic Causes of Diseases)

'विद्योतिनी' हिन्दीव्याख्योपेतः

लेखकः श्री धर्मदत्त वैद्य।

इस ग्रन्थ में लेखक ने चरक, सुश्रुत, वाग्भटादि के त्रिदोष-सम्बन्धी मूल वाक्यों का संग्रह करके उसकी मनोवैज्ञानिक हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की है। यह अपूर्व एवं मौलिक पुस्तक चिकित्सकों, अध्यापकों तथा छात्रों के लिए समान उपयोगी है। ३—१०